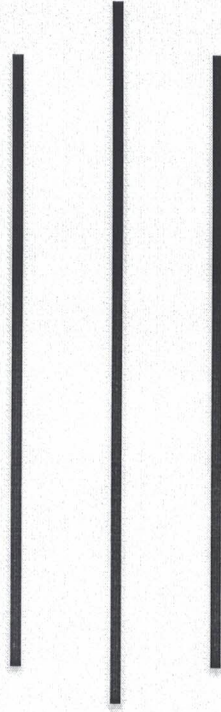


वन तथा वातावरण मन्त्रालय, गण्डकी प्रदेश अन्तर्गत कार्यालयहरूको
आ.व. २०८१/८२ मा सञ्चालन हुने कार्यक्रमहरूको



कार्यक्रम तथा बजेट कार्यान्वयन मापदण्ड, २०८१



क्रमांक
२०८१/०५/२०
मुख्यमन्त्री



गण्डकी प्रदेश सरकार
वन तथा वातावरण मन्त्रालय
पोखरा, नेपाल

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]
प्रदेश सचिव

कार्यक्रम तथा बजेट कार्यान्वयन गर्दा देहायका बुँदाहरूमा ध्यान दिनुपर्नेछ:

- (१) यस मापदण्ड अनुसार प्रदेश सरकारबाट स्वीकृत भएको कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्दा गण्डकी प्रदेश सरकारबाट जारी भएका निर्देशिका, कार्यविधि र मापदण्डको पालना गरी कार्यान्वयन गर्नु पर्नेछ। संघीय सशर्तका कार्यक्रमहरूको हकमा नेपाल सरकार, वन तथा वातावरण मन्त्रालय र मातहतका विभागहरूबाट जारी भएका निर्देशिका, कार्यविधि र मापदण्ड समेतलाई आधार मानी सञ्चालन गर्नु पर्नेछ।
- (२) यस मापदण्डमा उल्लिखित विषयहरूको पालना गरी प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयन गर्ने गराउने जिम्मेवारी सम्बन्धित कार्यालय प्रमुखको हुनेछ।
- (३) तोकिएको त्रैमासिकभित्र कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु पर्नेछ। यदि समयमा कुनै कार्यक्रम सञ्चालन गर्न नसकिएमा कारण सहितको विवरण समयमै मन्त्रालयलाई उपलब्ध गराउनु पर्नेछ।
- (४) यस मापदण्ड बमोजिम स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रमहरू बजेटको परिधिभित्र रही संघीय प्रचलित ऐन नियम (सार्वजनिक खरिद सम्बन्धी ऐन नियम, भ्रमण खर्च नियमावली, आर्थिक कार्यविधि तथा वित्तीय उत्तरदायित्व ऐन नियम, सार्वजनिक खर्चमा मितव्ययिता कायम गर्ने सम्बन्धी मापदण्ड २०७७, आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को बजेट कार्यान्वयन सम्बन्धी मार्गदर्शन) तथा गण्डकी प्रदेश सरकारको प्रचलित आर्थिक कार्यविधि तथा वित्तीय उत्तरदायित्व ऐन नियम, प्रदेश खर्चको मापदण्ड २०७९, आर्थिक वर्ष २०८१/८२ को बजेट तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन सम्बन्धी मार्गदर्शन) को अनुसरण गरी कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु पर्नेछ।
- (५) यस मापदण्डमा उल्लिखित विषयहरूमा चाल र पुँजिगत शिर्षकी बजेट तथा कार्यक्रमहरू सोही प्रकृतिका क्रियाकलापमा खर्च गर्नुपर्नेछ।
- (६) कार्यक्रम कार्यान्वयनको क्रममा यस सम्बन्धी प्रचलित कुनै ऐन, नियम, निर्देशिका र कार्यविधि संशोधन वा जारी भएमा सोही बमोजिम कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु पर्नेछ।
- (७) वार्षिक स्वीकृत कार्यक्रममा बजेट थपघट भएमा यसै मापदण्ड बमोजिम र नयाँ कार्यक्रम थप भइ आएमा अन्य प्रचलनमा रहेका निर्देशिका, कार्यविधि र मापदण्ड बमोजिम कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्न सकिनेछ।




प्रदेश सचिव

विषय सूची

| | |
|--|----|
| परिच्छेद-१ | १ |
| प्रारम्भिक | १ |
| १. संक्षिप्त नाम र प्रारम्भ: | १ |
| २. परिभाषा: | १ |
| परिच्छेद २ | २ |
| वन तथा वातावरणसँग सम्बन्धित क्रियाकलाप | २ |
| ३. बिरुवा उत्पादन (विभिन्न प्रकारका रुख, डालेघाँस, काष्ठ तथा बहुउपयोगी प्रजाति, स्थानीय माग र अनुकूलता): | २ |
| ४. बहुवर्षीय बिरुवाको हेरविचार र रेखदेख: | २ |
| ५. बिरुवा वितरण (निजी तथा समुदायस्तरमा वृक्षारोपणको लागि ढुवानी सहयोग तथा ढुवानीका लागि इन्धन खर्च समेत): | ३ |
| ६. जडीबुटी/गौरकाष्ठ वन पैदावार बिरुवा रोपण सहयोग (सतुवा, टिमुर, ओखर समेत): | ३ |
| ७. चक्ला वन कार्ययोजना तयारी र परिमार्जन: | ३ |
| ८. सामुदायिक वनको दिगो वन व्यवस्थापन कार्ययोजना तयारी: | ४ |
| ९. धार्मिक वनको कार्ययोजना तयारी र दर्ता तथा पुनरावलोकन: | ५ |
| १०. वन डढेलो नियन्त्रण तथा व्यवस्थापन योजना कार्यान्वयन: | ६ |
| ११. सरोकारवालासँग समन्वय गोष्ठी/बैठक/जलवायु राष्ट्रिय रणनीति सचेतिकरण अन्तर्क्रिया गोष्ठी/तालिम (प्रदेशस्तर/स्थानीय तह, पञ्चासे, वातावरण संरक्षण, सामुदायिक वन, कबुलियती वन आदि) | ७ |
| १२. प्रचारप्रसार सामग्री उत्पादन तथा वितरण (वन डढेलो नियन्त्रण, वन, वन्यजन्तु, वातावरण, जैविक विविधता, जडीबुटी, जलाधार संरक्षण संरक्षण)/सञ्चार माध्यम/मिडिया परिचालन: | ७ |
| १३. वन, वातावरण जलाधार जलवायु आदि सम्बन्धी गुनासो उजुरी छानविन/वन वन्यजन्तु अपराध तथा उजुरी छानविन (अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट प्राप्त समेत): | ८ |
| १४. अदालतबाट वकपत्रको लागि बोलावट हुँदाको लागि भत्ता: | ८ |
| १५. भवन मर्मत सुधार तथा स्तरोन्नति/ निर्माण कार्यक्रम: | ८ |
| १६. सवडिभिजन वन कार्यालयहरूको सुदृढीकरण तथा व्यवस्थापन: | ९ |
| १७. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह गठन, दर्ता, कार्ययोजना तयारी तथा वन हस्तान्तरण प्रक्रियामा सहजीकरण: | ९ |
| १८. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको कार्ययोजना नवीकरण सहयोग: | १० |
| १९. बीस हेक्टर भन्दा कम क्षेत्रफल र न्यून आमदानी भएका सामुदायिक वनको संक्षिप्त कार्ययोजना तयारी: | ११ |


 ११.११.११




 प्रमुख सचिव



| | | |
|-----|---|----|
| २०. | प्रजाति विशेष थिनिड (छटनी) निर्देशिका/कार्यविधि निर्माणः..... | ११ |
| २१. | सामुदायिक वनमा पोल थिनिड समेत गरी व्यवस्थापनः..... | १२ |
| २२. | सामुदायिक वन, कवुलियती वन, साझेदारी वन, निजी वन, कृषि वन तथा जडीबुटी विकास सम्बन्धी कार्यक्रमहरूको अनुगमन, मूल्याङ्कन र प्रतिवेदन तयारीः..... | १३ |
| २३. | सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह संस्थागत सुदृढीकरण तथा लेखा व्यवस्थापन कोचिड तथा क्षमता अभिवृद्धि/सामुदायिक वनमा लेखा अभिलेखीकरण तालिम/सामुदायिक वन समितिलाई लेखा तथा अभिलेख व्यवस्थापन तालिमः..... | १३ |
| २४. | सामुदायिक वन स्थलगत अभ्यासः..... | १४ |
| २५. | सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहका महिलाहरूको सीप अभिवृद्धिका लागि वन पैदावारमा आधारित हस्तकला निर्माण तालिमः..... | १४ |
| २६. | वनपाले सामुदायिक वनको लप्सी उद्योगमा उत्पादनमूलक सामग्री वितरणः..... | १४ |
| २७. | सामुदायिक वनमा जैविक मल उत्पादनः..... | १५ |
| २८. | संरक्षण पोखरी निर्माण तथा सम्भार व्यवस्थापन/सामुदायिक वनमा पानी पोखरी निर्माण/रिचार्ज पोखरी निर्माण/पुरानो पानी संरक्षण पोखरी पुनर्स्थापना/पोखरी व्यवस्थापन पुनर्भरण/एक सामुदायिक वन एक संरक्षण पोखरी कार्यक्रमः..... | १५ |
| २९. | नदी खोला किनार हरियाली प्रवर्द्धन कार्यक्रमको लागि स्टम्प रोपण र सुरक्षा समेतः..... | १६ |
| ३०. | आवधिक योजना सहितको रणनीतिक योजना तयारी (वातावरणीय अध्ययन सहित)..... | १६ |
| ३१. | सहभागितामूलक अतिक्रमण, चोरी कटानी तथा चोरी शिकारी नियन्त्रण/वन संरक्षण कार्यक्रम/वन अपराध नियन्त्रणको लागि गस्ती परिचालन/वन अपराध नियन्त्रण लागि गस्ती परिचालन/अतिक्रमण तथा चोरीशिकारी नियन्त्रणका लागि गस्ती परिचालनः..... | १७ |
| ३२. | विभिन्न दिवसहरू मनाउनेः..... | १८ |
| ३३. | कवुलियती वन समुह गठन र कार्ययोजना तयारी (जीविकोपार्जन सुधार योजना समेत)..... | १८ |
| ३४. | कवुलियती वन कार्ययोजना नवीकरणः..... | १९ |
| ३५. | कवुलियती वन समूहमा सामाजिक परिचालन सेवाः..... | १९ |
| ३६. | वन, वातावरण तथा जैविक विविधता संरक्षणका लागि स्कूल शिक्षा कार्यक्रमः..... | २० |
| ३७. | वन डडेलो सम्बन्धी स्कूल शिक्षा कार्यक्रमः..... | २० |
| ३८. | नर्सरी मर्मत सम्भार/स्तरोन्नतिः..... | २१ |
| ३९. | जैविक मार्ग तथा वन संरक्षण क्षेत्र व्यवस्थापन (पञ्चासे वन संरक्षण क्षेत्र)ः..... | २१ |
| ४०. | पञ्चासे वन संरक्षण क्षेत्रमा प्राविधिक सहयोग (रेञ्जर, सुपरभाइजर र फिल्ड सहयोगी)ः..... | २२ |
| ४१. | इकाइ तथा परिषदको सुदृढीकरणः..... | २३ |

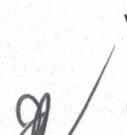
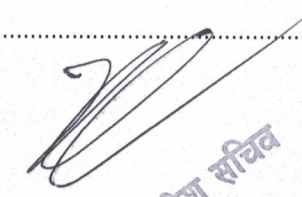
प्रदेश सचिव

| | | |
|-----|--|----|
| ४२. | मेशिनरी औजार/सामान (ल्यापटप/कम्प्युटर/प्रिन्टर/स्क्यानर/ड्रोन/डिजिटल क्यामेरा/प्रोजेक्टर/सोलार/इन्भर्टर ब्याट्री आदि)/वन सर्वेक्षण मापनसंग सम्बन्धित उपकरण (जि.पि.एस. मेजरिङ टेप लगायत)/वन डटेलो नियन्त्रण उपकरण/कार्यालयको लागि फर्निचर फिक्चर्स खरिद:..... | २३ |
| ४३. | कृषि वन विकास तथा विस्तार कार्यक्रम:..... | २३ |
| ४४. | शहरी हरित पार्क/शहरी सौन्दर्य तथा रोड साईड प्लान्टेसन कार्यक्रम: | २४ |
| ४५. | मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व व्यवस्थापन तथा वन्यजन्तु उद्धार:..... | २५ |
| ४६. | मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व न्यूनीकरण (तारबार/मेश जाली/पर्खाल निर्माण तथा वन क्षेत्र Compound)/ मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व न्यूनीकरणका लागि पि.सि.सि. सहितको मेसजाली: | २६ |
| ४७. | सामुदायिक वनहरूको अनुगमन तथा प्रतिवेदन तयारी/सामुदायिक वनहरूको अनुगमन तथा वार्षिक प्रतिवेदन/सामुदायिक वनको अनुगमन, मूल्यांकन, तथ्याङ्क संकलन तथा विश्लेषण/कवुलियती वनको अनुगमन तथा मूल्यांकन प्रतिवेदन तयारी:..... | २६ |
| ४८. | उत्कृष्ट सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह/कवुलियति वन उपभोक्ता समुह पुरस्कार:..... | २७ |
| ४९. | वार्षिक प्रगति पुस्तिका प्रकाशन तथा वितरण:..... | २७ |
| ५०. | पर्यापर्यटन/वनस्पती/हरियाली/हरित पार्क/हरित बाल उद्यान/नक्षत्र वाटिका/पिकनिक स्पट निर्माण/मर्मत/स्तरोन्नति:..... | २८ |
| ५१. | विभिन्न मेला, महोत्सव, कार्यक्रमका लागि सहायता/अनुदान: | २९ |
| ५२. | ढलापडा, बेवारिसे तथा बरामदी काठ संकलन: | २९ |
| ५३. | वन व्यवस्थापन गरी काठ दाउरा उत्पादन/उत्पादनमुखी वन व्यवस्थापन (वन व्यवस्थापन गरी काठ दाउरा उत्पादन: | २९ |
| ५४. | विकास र वातावरण बीच समन्वय गर्न स्थानीय तहसँग समन्वय गोष्ठी:..... | ३० |
| ५५. | भूसंवेदनशील क्षेत्रमा समुदाय मार्फत अग्निसो/बाँस लगायतका प्रजाति रोपण कार्यक्रम:..... | ३० |
| ५६. | जोखिमयुक्त रुखको व्यवस्थापन:..... | ३१ |
| ५७. | जटायु संरक्षण तथा पर्यापर्यटन विस्तार:..... | ३१ |
| ५८. | वन्यजन्तुबाट भएको क्षतिको राहत सम्बन्धी जाँचबुझ तथा प्रतिवेदन तयारी: | ३२ |
| ५९. | वन्यजन्तुबाट हुने क्षतिको राहत सहयोग/वितरण:..... | ३२ |
| ६०. | वर पिपल शमी रोपण चौतारा निर्माण, मर्मत तथा सौन्दर्यीकरण/चौतारो संरक्षण:..... | ३२ |
| ६१. | पचभैया वन्यजन्तु उद्धार केन्द्र व्यवस्थापन खर्च:..... | ३२ |
| ६२. | पचभैया प्राणी उद्यान विकास तथा वन्यजन्तु उद्धार केन्द्रमा पुर्वाधार निर्माण: | ३३ |
| ६३. | वन तथा वन्यजन्तु सम्बन्धी मुद्दा अनुसन्धान, तहकिकात र दायरी: | ३३ |
| ६४. | टिम बिल्डिङ गोष्ठी: | ३४ |

iv

प्रदेश सचिव

| | | |
|--|---|-----------|
| ६५. | डिभिजन वन कार्यालयहरूमा जडीबुटी तथा वन पैदावारको पहिचानको लागि स्याम्पल (Sample) तयारी तथा डेमोस्ट्रेसन/डिस्प्ले (Demonstration/Display):..... | ३४ |
| ६६. | पुरानो काठ/दाउराको पुन नापजाँच गरी रेकर्ड अद्यावधिक गर्ने कार्य:..... | ३४ |
| ६७. | आर्थिक वर्ष २०८०।८१ सम्मको सबै मौज्जात काठको जिल्लागत अभिलेख तयारी (मुद्दा, बेवारिसे, बरामदी र सबै वनबाट उत्पादित भएको):..... | ३४ |
| ६८. | गण्डकी प्रदेशको जिल्लागत रुपमा हालसम्म भएका मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व, राहत वितरण तथा वन्यजन्तु उद्धारको तथ्याङ्क विश्लेषण प्रतिवेदन तयारी:..... | ३५ |
| ६९. | गण्डकी प्रदेशमा हालसम्म अतिक्रमित भएको वन क्षेत्रको विस्तृत विवरण सहितको प्रोफाइल तयारी:..... | ३५ |
| ७०. | राष्ट्रिय वन क्षेत्रको जग्गा अन्य प्रयोजनमा सम्झौता अनुसार दिएको अनुगमन गरी Database तयारी:..... | ३५ |
| ७१. | बँदेल नियन्त्रण कार्यक्रम:..... | ३६ |
| ७२. | वन पैदावार संकलन, विक्री वितरण, आपूर्ति समिति समेतको मापदण्ड:..... | ३६ |
| ७३. | IEE/EIA प्रतिवेदनको सम्बन्धमा प्राविधिक समितिको व्यवस्थापन तथा सञ्चालन खर्च:..... | ३६ |
| ७४. | आन्तरिक पर्यटन प्रवर्द्धन (कार्यविधिका आधारमा प्रदेश सरकारका विभिन्न निकायमा कार्यरत कर्मचारीहरूलाई दिइने सुविधा):..... | ३७ |
| ७५. | अन्तरप्रदेश सिकाई आदानप्रदान भ्रमण:..... | ३७ |
| ७६. | Happy FM सँगको सहकार्यमा घडियाल काव्य महोत्सव नदी तटीय वासस्थान तथा घडीयाल गोही संरक्षण अभियान:..... | ३७ |
| ७७. | वन डढेलो नियन्त्रणका लागि Rapid Response टिम गठन र परिचालन:..... | ३८ |
| ७८. | विपन्न संकटापन्न समुदाय वोट मुसहर माझी आयआर्जन कार्यक्रम:..... | ३८ |
| ७९. | फोकल टिम बैठक:..... | ३८ |
| ८०. | डिभिजन वन कार्यालयको ब्रोसर तयारी:..... | ३८ |
| परिच्छेद-३ | | ४० |
| भू तथा जलाधार व्यवस्थापनसँग सम्बन्धित कार्यक्रम | | ४० |
| ८१. | सिँचाई कुलो संरक्षण:..... | ४० |
| ८२. | खोला/नदी/खहरे किनार संरक्षण कार्यक्रम/तटबन्ध/बाँध निर्माण कार्य:..... | ४० |
| ८३. | किसानसँग भूसंरक्षण कार्यक्रम:..... | ४० |
| ८४. | आकाशे पानी संकलन भलपानी व्यवस्थापन गरी जलसिंचन अभिवृद्धि तथा पुनर्भरण कार्यक्रम/पोखरी, सिमसार र ताल संरक्षण कार्यक्रम/पानी श्रोत व्यवस्थापन तथा बहुउपयोग (ताल, रनअफ हार्भेष्टिड ड्याम निर्माण)/संरक्षण पोखरी (Earthen Pond) निर्माण:..... | ४१ |
| ८५. | कम खर्चिलो भू संरक्षण प्रविधिको प्रयोग गरी पहिरो रोकथाम तथा खोला कटान नियन्त्रण:..... | ४२ |
| ८६. | गल्छी तथा पहिरो उपचार/पहिरो नियन्त्रण:..... | ४२ |

देश सचिव



| | |
|---|----|
| ८७. बाँसको कल्म कटिड तयारी रोपण/बाँस, निगालो तथा राइजोम खरिद/वितरण:..... | ४३ |
| ८८. पानी मुहान संरक्षण कार्यक्रम:..... | ४३ |
| ८९. कम खर्चिलो भू संरक्षण प्रविधिको प्रयोग गरी नमूना क्षेत्र/प्रदर्शन स्थल (Demonstration site) स्थापना:..... | ४३ |
| ९०. आकस्मिक पहिरो नियन्त्रण तथा जल उत्पन्न प्रकोप नियन्त्रण कार्यक्रम:..... | ४४ |
| ९१. नदी उकास जग्गा पुनर्स्थापना तथा संरक्षण:..... | ४४ |
| ९२. कम खर्चिलो भू-संरक्षण प्रविधि तालिम:..... | ४५ |
| ९३. स्थानीय तह तथा सरोकारवाला बीच समन्वय गोष्ठी:..... | ४५ |
| ९४. भू-संरक्षणका लागि ग्यावियन तारजाली खरिद तथा वितरण:..... | ४५ |
| ९५. सडकसँग भू-संरक्षण कार्यक्रम:..... | ४६ |
| ९६. बायोइन्जिनियरिङ्ग वा कम खर्चिलो भू संरक्षण प्रविधिको प्रयोग गर्नु पर्ने:..... | ४७ |
| परिच्छेद-४ | ४८ |
| अध्ययन, अनुसन्धान र तालिम तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम..... | ४८ |
| ९७. कालिगण्डकी जलाधार क्षेत्रलाई कृषि र पर्यापर्यटनको केन्द्रको रूपमा विकास गर्न सम्भाव्यता अध्ययन/ मर्स्याडदी जलाधार क्षेत्रलाई विद्यावत शहरको रूपमा विकास गर्न सम्भाव्यता अध्ययन/ सेती जलाधार क्षेत्रलाई औद्योगिक करिडोरको रूपमा विकास गर्न सम्भाव्यता अध्ययन:..... | ४८ |
| ९८. वन विज्ञान अध्ययन संस्थानसंगको सहकार्यमा वनक्षेत्रगत अनुसन्धान:..... | ४८ |
| ९९. वन र वन्यजन्तु कसुर सम्बन्धी उजुरी निवेदन देखि अभियोग पत्र तयारी सम्मको मिसिल तयारी तालिम/वातावरणीय परीक्षण तालिम/Remote sensing & GPS तालिम/वन विकास निर्माण कार्यको लागि डिजाईन तथा लागत अनुमान तयारी तालिम/वन कर्मचारीहरूलाई पुनर्ताजगी तालिम/GPS Handling, वन स्रोत सर्वेक्षण तथा मापन सम्बन्धी स्थलगत अभ्यास तालिम (वन रक्षक तथा फरेष्टर)/ वन्यजन्तु उद्धार तथा व्यवस्थापन सम्बन्धी (फरेष्टर/सिनियर गेमस्काउट/वन रक्षक/गेमस्काउटस्तरीय) तालिम कार्यक्रम सञ्चालन प्रक्रिया तथा सेवा सुविधा:..... | ४९ |
| १००. त्रैमासिक प्रदेशिक वन बुलेटिन प्रकाशन:..... | ५० |
| १०१. वन सम्बर्द्धन प्रणालीमा आधारित वनको पुनर्उत्पादन क्षमता अभिवृद्धिको तुलनात्मक अध्ययन:..... | ५० |
| १०२. गण्डकी प्रदेशमा हैसियत विग्रेको वन वा नदी उकास क्षेत्रको पुनर्उत्थान कार्यको लागि अध्ययन अनुसन्धान प्लट स्थापना:..... | ५१ |
| १०३. वन विज्ञान अध्ययन संस्थानसँग सहकार्यमा सामुदायिक वन अध्ययन केन्द्र स्थापना सहयोग :..... | ५१ |
| १०४. वन, वातावरण विद्यार्थीलाई ईन्टर्नसिप मार्फत सेवाप्रवाहमा सवलीकरण:..... | ५२ |
| १०५. कर्मचारी टिम विल्डिङ कार्यक्रम:..... | ५३ |
| १०६. मन्त्रालय र मातहतका निकाय सम्मिलित अन्तरप्रदेश अनुसन्धान सिकाई भ्रमण:..... | ५४ |

प्रदेश सचिव



| | |
|--|----|
| परिच्छेद ५..... | ५५ |
| ताल संरक्षण तथा विकास प्राधिकरण मार्फत कार्यान्वयन हुने कार्यक्रम..... | ५५ |
| १०७. ताल/सिमसार क्षेत्र/कुण्ड/रिचार्ज पोखरी/जलाधार क्षेत्रहरुको संरक्षण/निर्माण/व्यवस्थापन/मर्मत सम्भार तथा सौन्दर्यीकरण कार्यक्रम:..... | ५५ |
| १०८. विश्व सिमसार दिवस मनाउने:..... | ५५ |
| १०९. ताल सूचना बोर्ड र प्रणाली स्थापना:..... | ५५ |
| ११०. कम खर्चिलो प्रविधि मार्फत ताल पोखरी संरक्षण तालिम:..... | ५६ |
| १११. विज्ञ सहयोगमा सरोकारवाला र जनप्रतिनिधिसँग छलफल अन्तरक्रिया गरी लोपोन्मुख ताल संरक्षण योजना तयारी:..... | ५६ |
| ११२. प्रचलित कानून बमोजिम हुने..... | ५७ |

प्रदेश सचिव



प्रस्तावना: गण्डकी प्रदेशको वन तथा वातावरण मन्त्रालय, वन निर्देशनालय, ताल संरक्षण तथा विकास प्राधिकरण, वन अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण केन्द्र, डिभिजन वन कार्यालय र भू तथा जलाधार व्यवस्थापन कार्यालयको आ.व. २०८१/८२ को स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रमलाई एकरूपता कायम गर्दै व्यवस्थित, पारदर्शी, मितव्ययी र प्रभावकारी कार्यान्वयन गरी लक्ष्य अनुरूपको उद्देश्य हासिल गर्न आवश्यक भएकोले,

गण्डकी प्रदेश सरकारको बजेट तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन सम्बन्धी एकीकृत कार्यविधि, २०७७ को दफा ४० ले दिएको अधिकार प्रयोग गरी गण्डकी प्रदेश सरकार वन तथा वातावरण मन्त्रालयले देहायको मापदण्ड बनाएको छ।

परिच्छेद-१

प्रारम्भिक

१. **संक्षिप्त नाम र प्रारम्भ:** (१) यो मापदण्डको नाम "कार्यक्रम तथा बजेट कार्यान्वयन मापदण्ड, २०८१" रहेको छ।
(२) यो मापदण्ड तुरुन्त प्रारम्भ हुनेछ।
२. **परिभाषा:** विषय वा प्रसङ्गले अर्को अर्थ नलागेमा यस मापदण्डमा,-
 - (क) "उपभोक्ता" भन्नाले गण्डकी प्रदेशभित्र स्थायी बसोबास गर्ने प्राकृतिक स्रोत व्यवस्थापन समूहमा आवद्ध घरधुरीलाई सम्झनु पर्छ।
 - (ख) "उपभोक्ता समिति" भन्नाले गण्डकी प्रदेश सरकारबाट जारी भएको बजेट तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन सम्बन्धी एकीकृत कार्यविधि, २०७७ को दफा २६ बमोजिम गठन गरिने उपभोक्ता समिति सम्झनु पर्छ।
 - (ग) "कार्यक्रम" भन्नाले मन्त्रालय तथा मातहतका निकाय र प्राधिकरणको वार्षिक विकास कार्यक्रम तथा बजेट सम्झनु पर्छ।
 - (घ) "कार्यकारी समिति" भन्नाले ताल संरक्षण तथा विकास प्राधिकरण ऐन, २०७५ को दफा ७ बमोजिम गठित कार्यकारी समिति सम्झनु पर्छ।
 - (ङ) "कार्यालय" भन्नाले मन्त्रालय मातहतको डिभिजन वन कार्यालयहरू, भू तथा जलाधार व्यवस्थापन कार्यालयहरू सम्झनु पर्छ।
 - (च) "कार्यविधि" भन्नाले गण्डकी प्रदेश सरकारबाट जारी भएको बजेट तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन सम्बन्धी एकीकृत कार्यविधि, २०७७ सम्झनु पर्छ।
 - (छ) "नर्सरी" भन्नाले वृक्षारोपण प्रयोजनका लागि बिरुवा हुर्काउने, वढाउने तथा निश्चित अवधिसम्म सुरक्षित गरी राख्ने स्थान वा संरचनालाई सम्झनु पर्छ।
 - (ज) "निर्देशनालय" भन्नाले प्रदेश वन निर्देशनालयलाई सम्झनु पर्छ।
 - (झ) "पर्यापर्यटन" भन्नाले वातावरण संरक्षण र स्थानीय समुदायको हितको प्रतिकूल नहुने गरी वन क्षेत्रमा गरिने वन, वन्यजन्तु, वातावरण लगायत प्राकृतिक र साँस्कृतिक सम्पदामा आधारित प्रकृतिमैत्री पर्यटकीय गतिविधीलाई सम्झनु पर्छ र सो शब्दले पर्यापर्यटनलाई लक्षित गरी सञ्चालन गरिने क्रियाकलापलाई समेत सम्झनु पर्छ।
 - (ञ) "प्राधिकरण" भन्नाले ताल संरक्षण तथा विकास प्राधिकरण ऐन, २०७५ बमोजिम गठित ताल संरक्षण तथा विकास प्राधिकरण सम्झनु पर्छ।

१

प्रदेश सचिव

- (ट) "केन्द्र" भन्नाले मन्त्रालय मातहतको वन अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण केन्द्र पर्छ।
- (ठ) "प्राविधिक" भन्नाले मन्त्रालय र अन्तर्गतका कार्यालयहरूमा कार्यरत विभिन्न सेवा, समूहका प्राविधिक कर्मचारीलाई सम्झनु पर्छ।
- (ड) "बायोइन्जिनियरिङ" भन्नाले भूसंरक्षण तथा जलाधार व्यवस्थापन क्रियाकलापहरूमा जैविक तथा भौतिक संरचना सँगसँगै राखी निर्माण वा स्थापना गर्ने प्रविधि सम्झनु पर्छ।
- (ढ) "मन्त्रालय" भन्नाले गण्डकी प्रदेशको वन तथा वातावरण क्षेत्र हेर्ने मन्त्रालय सम्झनु पर्छ।
- (ण) "मुद्दा" भन्नाले वन र वन्यजन्तु सम्बन्धी कसुरमा सम्बन्धित अदालतमा पेस भएको अभियोजन पत्र सम्झनु पर्छ।

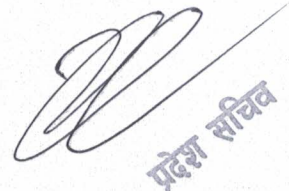
परिच्छेद २

वन तथा वातावरणसँग सम्बन्धित क्रियाकलाप

३. बिरुवा उत्पादन (विभिन्न प्रकारका रुख, डालेघाँस, काष्ठ तथा बहुउपयोगी प्रजाति, स्थानीय माग र अनुकूलता): (१) यस कार्यक्रमको मुख्य उद्देश्य स्थानीय माग र अनुकूलता अनुसार रुख काष्ठ तथा विभिन्न प्रजातिका बहुउपयोगी गुणस्तरीय बिरुवाहरू उत्पादन र वितरण गरी हरियाली प्रवर्द्धन गर्ने रहेको छ।
- (२) यस कार्यक्रममा देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू समेट्नु पर्नेछः
- (क) कम्तीमा ३" X ७" को पोलिब्यागमा बिरुवा उत्पादन,
- (ख) स्थानीय माग बमोजिमका प्रजातिका बिउ/कटिड खरिद,
- (ग) बिरुवाको उचाइ कम्तीमा १ फिट (ढिलो बढ्ने प्रजाति बाहेक),
- (घ) नर्सरी नाइकेको पारिश्रमिक,
- (ड) यस कार्यक्रमबाट नर्सरी अनुसारको रोपन योग्य बिरुवाको उत्पादन लागत प्रति बिरुवा बढीमा पन्ध्र रुपैयाँ हुनेछ।
- (३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेटको लागि कार्यान्वयनका लागि कार्यालयबाट कार्यदिश दिँदा उत्पादन गर्ने बिरुवाका प्रजाति उल्लेख गर्नु पर्नेछ।
- (४) उपदफा (२) बमोजिमको क्रियाकलाप सम्पन्न भएपछि बिल भरपाई र फोटो सहितको कार्यसम्पादन प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।
४. बहुवर्षीय बिरुवाको हेरविचार र रेखदेख: (१) विगतका आर्थिक वर्षहरूमा उत्पादन भइ नर्सरीमा मौज्जात रहेका बिरुवाहरूको संरक्षण, रेखदेख, गोडमेल, ग्रेडिङ, रुट प्रुनिङ, मलजल, किटनाशक औषधी, घेराबार, छहारी मर्मत सुधार, सिंचाई आदि कार्य गर्न कामदार परिचालन गर्न सकिनेछ। यसका लागि प्रचलित नर्सरी र जिल्ला दररेटको प्रयोग गरी लागत अनुमान तयार गर्नु पर्नेछ।



२

प्रदेश सचिव



(२) उपदफा (१) बमोजिमको परिचालित कामदारको ज्याला भुक्तानी, बिरुवा रेखदेखको सामग्री खरिद लगायत कार्यहरू यस कार्यक्रममा विनियोजित रकमबाट गर्न सकिनेछ।

५. बिरुवा वितरण (निजी तथा समुदायस्तरमा वृक्षारोपणको लागि ढुवानी सहयोग तथा ढुवानीका लागि इन्धन खर्च समेत): (१) कार्यालयका मौजुदा वन नर्सरीबाट उत्पादन हुने बिरुवा रोपणका लागि स्थानीय जनताबाट ठूलो परिमाणमा बिरुवा माग भइ आएमा ती बिरुवाको छिटो छरितो र सहज रोपणको लागि रोपण स्थलसम्म वा रोपण स्थलको नजिकको सडक पहुँच स्थानसम्म बिरुवा ढुवानी गर्नको लागि यस कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेटबाट बिरुवा लोड अनलोड, बिरुवा ढुवानीको गाडी भाडा र ढुवानीमा प्रयोग हुने गाडीमा इन्धन लगायतका व्यवस्थापनका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

६. जडीबुटी/गैरकाष्ठ वन पैदावार बिरुवा रोपण सहयोग (सतुवा, टिमुर, ओखर समेत): (१) यस कार्यक्रम कार्यान्वयनका लागि डिभिजन वन कार्यालयको कार्य क्षेत्रको भौगोलिक अवस्था, हावापानी र अनुकूलता सुहाउँदो र जिल्ला जडीबुटी फोकल टिमको बैठकबाट निर्णय गरी छनोट भएका प्रजाति (जस्तै: सतुवा, टिमुर, दाँते ओखर, लौँठसल्ला, निरमसी, अतिस, चिराइतो आदि) का बिरुवा वृक्षारोपण गर्न/गराउन सकिनेछ।

(२) उपदफा (१) बमोजिम वृक्षारोपण गर्न/गराउनका लागि इच्छुक कृषि समूह, कृषि सहकारी, कृषि फर्म, सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह, कवुलियती वन समूह, निजी वन धनीबाट सार्वजनिक सूचना मार्फत प्रस्ताव माग गर्नु पर्नेछ।

(३) उपदफा (२) बमोजिम इच्छुक व्यक्ति/संस्था/समूहले पेस गरेको प्रस्तावको नियमानुसार मूल्याङ्कन, छनोट, सम्झौता गरी कार्यान्वयन गर्नु पर्नेछ।

(४) यस कार्यक्रममा विनियोजित रकम डिभिजन वन कार्यालयबाट फिल्ड भेरिफिकेशन, व्यक्ति/संस्था/समूहलाई वृक्षारोपण सम्बन्धी अभिमुखीकरण तालिम, बिरुवा खरिद, ढुवानी, वितरण, रोपण लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

(५) कार्यक्रम सम्पन्न भए पछि नियमानुसार भुक्तानीको लागि खर्चको विल भरपाई कागजातहरू र फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

७. चक्ला वन कार्ययोजना तयारी र परिमार्जन: (१) चक्ला वन व्यवस्थापनको लागि कार्ययोजनाको तयारी तथा परिमार्जन गर्दा देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू समेट्नु पर्नेछ:

(क) कार्ययोजना तयारीका लागि वन कार्यालयका मौजुदा प्राविधिक जनशक्ति परिचालन गरिनेछ। कार्यालयका कर्मचारीबाट कार्यसम्पादन हुन नसक्ने अवस्थामा प्रचलित कानून बमोजिम परामर्श सेवा खरिद गरी गर्न सकिनेछ।

(ख) कार्ययोजना तयारी र परिमार्जन गर्दा प्रचलित कानूनमा भएका विषयवस्तुहरू समावेश गरी विगत कार्ययोजनाको समीक्षा समेत गर्नु पर्नेछ।

३

प्रदेश सचिव

- (ग) कार्ययोजना तयारीको क्रममा वनको वस्तुस्थिति सर्वेक्षण, जि.पि.एस.बाट वन सिमा सर्वेक्षण, नक्साङ्कन, वन स्रोत मापन तथा विश्लेषण (वन स्रोत जम्मा मौज्दात, वार्षिक वृद्धिदर र वार्षिक स्वीकार्य कटान परिमाणको एकिन समेत), कम्पार्टमेन्ट/सब कम्पार्टमेन्ट विभाजन, रुख नम्बरिड (ट्यागिड), जि.पि.एस. विन्दु समेतको स्थायी नमुना प्लटको ढाँचा निर्धारण (Permanent Sample Plot Layout) गरी नमुना प्लट (Sample Plot) देखिने नक्सा निर्माण, वन क्षेत्र संरक्षण र विकास योजनाहरूको खाका तयारी जस्ता प्राविधिक कार्यहरू गर्नु पर्नेछ।
- (घ) वनको वस्तुगत अवस्था सहितको वनस्रोत मौज्दात र वार्षिक वृद्धिदर समावेश भएको चक्ला वनको कार्ययोजना अवधि पाँच वर्ष हुने हुँदा हरेक वर्षको वन संरक्षण तथा विकासका क्रियाकलाप सञ्चालन र काठ दाउरा कटान, मुद्दान र घाटगद्दी गर्दाको लागत अनुमान तथा हरेक वर्ष काठ, दाउरा विक्रिबाट प्राप्त हुने अनुमानित आम्दानी जस्ता विश्लेषणात्मक विवरणहरू कार्ययोजनामा उल्लेख भएको हुनु पर्नेछ।
- (ङ) कार्ययोजनाको मस्यौदा उपर रायसुझावको लागि सम्बन्धित स्थानीय तहका जनप्रतिनिधि समेतको उपस्थितिमा जिल्ला स्तरीय छलफल गर्नु पर्नेछ। साथै कार्ययोजना मस्यौदाका बारेमा रायसुझाव लिनका लागि मन्त्रालयका प्रतिनिधि कर्मचारीको सहभागितामा निर्देशनालयमा छलफल गर्नु पर्नेछ। उक्त छलफलमा उठेका सुझावहरूलाई कार्ययोजनामा समावेश गर्नु पर्नेछ।
- (च) सम्बन्धित कर्मचारी/परामर्शदाताले कार्ययोजनाको ४ प्रति (विद्युतिय प्रति सहित) प्रतिवेदन साथ डिभिजन वन कार्यालय पेस गर्नु पर्नेछ।
- (छ) डिभिजन वन कार्यालयमा पेस हुन आएको कार्ययोजनाको स्वीकृतिका लागि रायसहित वन निर्देशनालय मार्फत मन्त्रालयमा पेस गर्नु पर्नेछ। मन्त्रालयको स्वीकृति पछि डिभिजन वन कार्यालयले कार्ययोजना कार्यान्वयन गर्नु पर्नेछ।
- (ज) कार्ययोजना कार्यान्वयनको क्रममा वन संरक्षण, विकास, व्यवस्थापन र सदुपयोग हुने हुदाँ प्रचलित वातावरणीय कानून अनुसार वातावरणीय अध्ययन गर्नु पर्ने भएमा सो समेत गर्नु पर्नेछ।

(२) उपदफा (१) बमोजिमको प्राविधिक कार्यमा खटिने कर्मचारी, विज्ञ व्यक्ति र कामदार/सहयोगीको परिचालन, विज्ञ परामर्श सेवा शुल्क, समन्वय/छलफल एवम् बैठक भत्ता, अनुगमन खर्च, सवारी इन्धन, मसलन्द, कार्ययोजनाको दस्तावेज तयारी, प्रिन्टिङ तथा वाइन्डिङ आदिमा यस कार्यक्रमको लागि विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

८. सामुदायिक वनको दिगो वन व्यवस्थापन कार्ययोजना तयारी: (१) कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछ:

- (क) दिगो वन व्यवस्थापन सम्बन्धी प्रचलित वन ऐन, नियमावली र कार्यविधि अनुसार जिल्लामा कार्यरत वा कम्तीमा वन विज्ञान विषयमा स्नातक गरेका वन प्राविधिकको टोलीले स्थलगत निरीक्षण गरी उपयुक्त क्षेत्रफल भएका सामुदायिक वन छनोट गरी

(Handwritten signature)



४

(Handwritten signature)

(Handwritten signature)

प्रदेश सचिव

समूह अभिमुखीकरण र सरोकारवालाहरूसँग अन्तरक्रिया पछि समूहको साधारण सभाको निर्णय साथ वन कार्यालयमा माग पेस गर्ने।

- (ख) समूह कोषको उपलब्धताको आधारमा डिभिजन वन कार्यालय र सम्बन्धित समूहको सह-लगानीमा कार्ययोजना तयार गर्ने व्यवस्था गर्ने।
- (ग) कार्ययोजना तयारीको क्रममा वनको वस्तुस्थिति सर्वेक्षण, जि.पि.ए.बाट वन सिमा सर्वेक्षण, नक्साङ्कन, वन स्रोत गणना, मापन तथा विश्लेषण (वन स्रोत जम्मा मौज्जात, वार्षिक बृद्धिदर र वार्षिक स्वीकार्य कटान परिमाणको एकिन समेत), खण्ड विभाजन, जि.पि.एस. विन्दु समेतको स्थायी नमुना प्लटको ढाँचा निर्धारण (Permanent Sample Plot Layout) गरी नमुना प्लट (Sample Plot) देखिने नक्सा निर्माण, वन क्षेत्र विकास योजनाहरूको खाका तयारी जस्ता प्राविधिक कार्यहरू गर्नु पर्नेछ।
- (घ) समूहले सम्बन्धित वन कार्यालयका वन प्राविधिक भन्दा बाहिरका वन प्राविधिक/सेवा प्रदायकबाट सेवा लिनुपर्ने भएमा प्रचलित सार्वजनिक खरिद ऐन नियमको व्यवस्था बमोजिम परामर्शदातासंग सेवा करार गरी सबडिभिजन वन कार्यालयका अधिकृतको रोहवरमा कार्य सम्पन्न गर्ने सम्झौता गर्न सकिनेछ।
- (ङ) प्रचलित वन ऐन, नियमावली र कार्यविधि बमोजिमका विषयवस्तुहरू समावेश गरी कार्ययोजना तयार गर्नु पर्नेछ।
- (च) मस्यौदा कार्ययोजना बारे डिभिजन वन कार्यालयको अधिकृत प्राविधिक कर्मचारी समेतको उपस्थितिमा सम्बन्धित स्थानीय तह लगायत सरोकारवालासँग अन्तरक्रिया गरी सुझाव सङ्कलन गर्नु पर्नेछ। सङ्कलित सुझावको थप गरी मस्यौदा कार्ययोजना डिभिजन वन कार्यालयको प्राविधिक समितिमा चेकजाँचको लागि पेस गर्नु पर्नेछ। डिभिजनल वन अधिकृतले योजना तथा व्यवस्थापन शाखाको अधिकृतको संयोजकत्वमा सम्बन्धित फिल्डको प्रमुख र वन संरक्षण तथा सदुपयोग शाखाको अधिकृत सदस्य रहेको तीन सदस्यीय प्राविधिक समिति गठन गर्नु पर्नेछ।
- (छ) समूहको साधारण सभाको निर्णय सहित कार्ययोजना स्वीकृतिको लागि डिभिजन वन कार्यालयमा पेस गर्ने।
- (ज) समूहबाट पेस भएको कार्ययोजना प्रचलित कानून बमोजिम देखिएमा योजना तथा वन व्यवस्थापन शाखाले स्वीकृतिको लागि डिभिजनल वन अधिकृत समक्ष पेस गर्नु पर्नेछ। डिभिजनल वन अधिकृतबाट स्वीकृति भएपछि वन कार्ययोजना कार्यान्वयन गर्न सकिनेछ।

(२) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट प्राविधिक परिचालन/सेवा प्रदायक विज्ञ परामर्श सेवा शुल्क, समुदाय छलफल, खाजा खर्च तथा कार्ययोजना तयारीको लागि टाइपिङ, प्रिन्टिङ र बाइन्डिङ लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

९. धार्मिक वनको कार्ययोजना तयारी र दर्ता तथा पुनरावलोकन: (१) प्रचलित कानून बमोजिम दर्ता भएका धार्मिक समुदाय/निकायले विगत देखि व्यवस्थापन गर्दै आएको वा धार्मिक सम्पदा वरिपरि रहेको वन

५



५

५

प्रदेश सचिव

क्षेत्रको उचित संरक्षण एवम् व्यवस्थापनका लागि सम्बन्धित धार्मिक समुदायलाई हस्तान्तरण गर्न सकिने कानुनी व्यवस्था छ। सो बमोजिम उल्लेखित किसिमको वन क्षेत्रको हस्तान्तरण गर्ने वा पहिले नै हस्तान्तरण भैसकेको वन क्षेत्रको नवीकरणका लागि कार्ययोजना तयारी गर्ने अभिप्रायले यो कार्यक्रम राखिएको हो। यस कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछः

- (क) प्रचलित कानून बमोजिम दर्ता भएका धार्मिक समुदाय/निकायले निर्णय सहित तोकिएको ढाँचामा धार्मिक वन हस्तान्तरणका लागि डिभिजन वन कार्यालयमा निवेदन पेश गर्ने।
- (ख) सम्बन्धित डिभिजन वन कार्यालयमा कार्यरत वन विज्ञान विषयमा कम्तीमा प्राविधिक प्रमाणपत्र तह उत्तीर्ण गरेका वन प्राविधिकको सहजिकरणमा वन क्षेत्र छनोट, जि.पि. एस. बाट वन सिमा सर्वेक्षण, वन स्रोत मापन तथा विश्लेषण, सरोकारवालाहरूसँग छलफल एवम् अन्तरक्रिया गरी कार्ययोजना तयार गर्नु पर्नेछ।
- (ग) समूहले साधारण सभाको निर्णय सहित कार्ययोजना स्वीकृतिको लागि सम्बन्धित स्थानीय तह र सबडिभिजन वन कार्यालयको सिफारिस साथ डिभिजन वन कार्यालयमा पेश गर्नु पर्नेछ।
- (घ) धार्मिक समुदायद्वारा पेश भएको कार्ययोजना प्रचलित कानून बमोजिम देखिएमा स्वीकृतिको लागि योजना तथा वन व्यवस्थापन शाखाले डिभिजनल वन अधिकृत समक्ष पेश गर्नु पर्नेछ। डिभिजनल वन अधिकृतबाट स्वीकृति भएपछि वन कार्ययोजना कार्यान्वयन गर्न सकिनेछ।

(२) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेटबाट प्राविधिक परिचालन, समुदाय छलफल, खाजा खर्च, दैनिक भ्रमण खर्च तथा कार्ययोजना तयारीको लागि टाइपिङ, प्रिन्टिङ र बाइन्डिङ लगायतका कार्यहरूमा खर्च गर्न सकिनेछ।

१०. वन डढेलो नियन्त्रण तथा व्यवस्थापन योजना कार्यान्वयनः (१) वन डढेलो नियन्त्रण तथा व्यवस्थापन योजना कार्यान्वयन गर्दा देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछः

- (क) डिभिजन वन कार्यालयले विगत वर्षहरूको डढेलोको तथ्याङ्क, क्षति भएको वन क्षेत्र र सिकाइको आधारमा वन डढेलो नियन्त्रण र व्यवस्थापनका लागि चालु आ.व.मा जिल्लामा हुन सक्ने वन डढेलो घटनाको अनुमान र आँकलन गरी जिल्लास्तरीय वन डढेलो नियन्त्रण तथा व्यवस्थापन योजना तयार गर्नु पर्नेछ।
- (ख) समूह संजाल गठन र परिचालन, प्रचारप्रसार सामग्री उत्पादन तथा वितरण, जनचेतना अभिवृद्धि, सञ्चार माध्यमबाट सन्देशमूलक सूचना प्रसारण, अग्नि समन टोली (Fire Fighting Team) परिचालन, वन डढेलो नियन्त्रण सामग्री खरिद तथा वितरण र समुदायद्वारा व्यवस्थित वन क्षेत्र (सामुदायिक वन, साझेदारी वन) मा समूह परिचालन गरी अग्निरेखा निर्माण र डढेलो नियन्त्रण कार्य गर्न सकिनेछ।

२५



६

६

प्रदेश सचिव

(२) आकस्मिक रूपमा लागेको वन डढेलो नियन्त्रणका लागि घटनास्थलमा परिचालित हुने/खटिने कर्मचारी र सुरक्षाकर्मीको खाजा, खाना, पानी र सवारी इन्धन तथा मर्मत लगायतका शीर्षकहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

११. सरोकारवालासँग समन्वय गोष्ठी/बैठक/जलवायु राष्ट्रिय रणनीति सचेतिकरण अन्तर्क्रिया गोष्ठी/तालिम (प्रदेशस्तर/स्थानीय तह, पञ्चासे, वातावरण संरक्षण, सामुदायिक वन, कवुलियती वन आदि): (१) प्रदेश स्तरीय योजना तर्जुमा/समीक्षा गोष्ठी मन्त्रालयको समन्वयमा वन निर्देशनालयले आयोजना गर्नेछ। प्रदेशस्तरीय वार्षिक योजना तर्जुमा/प्रगति समीक्षा र त्रैमासिक गोष्ठीमा मन्त्रालय, निर्देशनालय, डिभिजन वन कार्यालय, भू तथा जलाधार व्यवस्थापन कार्यालय, वन अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण केन्द्र, ताल संरक्षण तथा विकास प्राधिकरणका प्रमुख र अन्य कर्मचारीहरू, अन्य विषयगत मन्त्रालय तथा प्रदेश नीति तथा योजना आयोग, कार्यक्रमसँग सम्बन्धित परियोजनाका प्रमुखहरू र आवश्यकता अनुसार सरोकारवाला तथा लाभग्राही निकायको सहभागिता गराउन सकिनेछ।

(२) जलवायु राष्ट्रिय रणनीति सचेतिकरण अन्तर्क्रिया गोष्ठीमा वन, वातावरण र जलवायु परिवर्तनसँग सम्बन्धित सरोकारवाला निकायका प्रमुख वा प्रतिनिधिहरू समेत सहभागी गराउनु पर्नेछ।

(३) कर्मचारीहरूको क्षमता अभिवृद्धि लगायतका तालिम/गोष्ठी सञ्चालन गर्दा पाठ योजना सहितको लागत अनुमान तयार गरी सञ्चालन गर्नु पर्नेछ।

(४) प्रदेश तहमा कार्यरत विभिन्न सरकारी तथा गैरसरकारी निकायसँग वन, वातावरण तथा जैविक विविधता संरक्षण र व्यवस्थापनका लागि प्रदेशस्तरीय समन्वय गोष्ठी/बैठक तोकिएबमोजिम सम्पन्न गर्नु पर्नेछ।

(५) पञ्चासे वन क्षेत्रको संरक्षण र व्यवस्थापनका लागि गठित वन समूहहरू र इकाई परिषद्को प्रतिनिधित्व हुने गरी स्रोतको आधारमा छुट्टाछुट्टै वा एकीकृत रूपमा प्रस्तावित मूल परिषद्को बैठक गर्न सकिनेछ।

(६) जिल्लास्तरीय योजना तर्जुमा/समीक्षा गोष्ठीमा जिल्लाभित्र रहेका सबै डिभिजन वन कार्यालयहरू, वन उपभोक्ता समूहका प्रतिनिधि तथा सम्बन्धित विषयगत सरोकारवालाहरू समेतको सहभागितामा गराउनु पर्नेछ।

(७) यस कार्यक्रम अन्तर्गतको गोष्ठी/बैठक/तालिम सञ्चालनका लागि विनियोजित बजेट सहभागीले नियमानुसार पाउने दैनिक तथा भ्रमण भत्ता, सेसन फि, समन्वय भत्ता, खाजा, हल भाडा, सञ्चार, स्टेशनरी आदिमा प्रदेश खर्चको मापदण्ड, २०७९ र प्रचलित सार्वजनिक खरिद ऐन नियमको परिधिभित्र रही खर्च गर्न सकिनेछ।

(८) कार्यक्रम सम्पन्न गर्ने निकाय तथा कर्मचारीले गोष्ठी सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको प्रतिवेदन सम्बन्धित कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

१२. प्रचारप्रसार सामग्री उत्पादन तथा वितरण (वन डढेलो नियन्त्रण, वन, वन्यजन्तु, वातावरण, जैविक विविधता, जडीबुटी, जलाधार संरक्षण संरक्षण)/सञ्चार माध्यम/मिडिया परिचालन: (१) प्रचारप्रसार सामग्री उत्पादन तथा वितरण/वन डढेलो सम्बन्धी प्रचारप्रसार (सन्देशमूलक सूचना सामग्री पत्रपत्रिकामा



७

प्रदेश सचिव

प्रकाशन, रेडियो तथा टेलिभिजनमा प्रसारण)/ वन र वन्यजन्तु संरक्षण सम्बन्धी प्रचारप्रसार/ जलाधार व्यवस्थापन कार्यक्रम सम्बन्धी प्रचारप्रसारका लागि होर्डिङबोर्ड निर्माण, भित्तेलेखन, लिफ्लेट, पम्प्लेट, ब्रोसुर, डायरी, स्टिकर, फ्लेक्स, अनुकरणीय सफलताका कथा, असल अभ्यास एवम् सफल कार्यक्रमहरूको सँगालो पुस्तिका तयारी, प्रकाशन तथा वितरण, विद्यालय शिक्षण, संरक्षणसँग सम्बन्धित छोटो भिडियो, वृत्तचित्र आदि सामग्री उत्पादन, प्रसारण तथा वितरण लगायतका कार्यहरूको लागि खर्च गर्न सकिनेछ।

(२) उपदफा (१) बमोजिमको प्रचार सामग्री उत्पादन तथा प्रसारण गर्दा कार्यदिश/सम्झौता गरी कार्यक्रम गर्नु पर्नेछ।

(३) उपदफा (१) बमोजिमको कार्यक्रमको कार्यान्वयन परामर्श सेवा मार्फत पनि सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(४) कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि प्रतिवेदन तयार गरी पेस गर्नु पर्नेछ। प्रचारप्रसार सम्बन्धी नमुना सामग्री प्रमाणको रूपमा सम्बन्धित निकायमा अनिवार्य पेस गरेको हुनु पर्नेछ।

१३. वन, वातावरण जलाधार जलवायु आदि सम्बन्धी गुनासो उजुरी छानविन/वन वन्यजन्तु अपराध तथा उजुरी छानविन (अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट प्राप्त समेत): (१) नियमन गर्ने निकाय/तालुक कार्यालय/व्यक्ति विशेषबाट कार्यालयमा प्राप्त हुने वन, वन्यजन्तु, वातावरण, जलाधार र जलवायु सम्बन्धी गुनासो एवम् अपराध सम्बन्धी उजुरीको छानविन गरी तोकिएको समयभित्र प्रतिवेदन तयार गरी पेस गर्ने र अभिलेख दुरुस्त राख्नुको साथै थप कारवाही प्रक्रिया अघि बढाउने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) कार्यालयले छानविन एवम् अनुसन्धानका लागि कर्मचारी तोकने वा टोली गठन गरी खटाउने कार्य गर्न सक्नेछ।

(३) यस शीर्षकको रकम उजुरी/गुनासो छानविनमा संलग्न कर्मचारीको दैनिक भ्रमण भत्ता र समन्वय छलफल खाजा लगायतमा खर्च गर्न सकिनेछ।

१४. अदालतबाट बकपत्रको लागि बोलावट हुँदाको लागि भत्ता: (१) यस कार्यक्रममा स्वीकृत भएको रकम अदालतमा अभियोग पत्र दायर भइसकेपछि मुद्दाको प्रक्रियामा सम्बन्धित डिभिजन वन कार्यालय र अदालतबाट बकपत्रको लागि प्रतिवेदक/जाहेरीवाला/साक्षी/प्रतिनिधि र संलग्न कर्मचारीलाई बोलावट भइ बकपत्रमा उपस्थित हुने व्यक्तिलाई नियमानुसार दैनिक भ्रमण भत्तामा खर्च गर्न सकिनेछ।

(२) रकम भुक्तानी माग गर्दा सरकारी वकिल कार्यालयबाट सम्बन्धित अदालतमा बकपत्र गरेको जानकारी पेस गर्नु पर्नेछ।

तर सरकारी साक्षीको रूपमा बकपत्र गर्ने व्यक्तिले सरकारको विपक्षमा बकपत्र गरेमा दैनिक भ्रमण भत्ता भुक्तानी गर्न बाध्य हुने छैन।

१५. भवन मर्मत सुधार तथा स्तरोन्नति/ निर्माण कार्यक्रम: (१) स्वीकृत कार्यक्रममा भवन लगायतका संरचना मर्मत सुधार तथा स्तरोन्नतिका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्न पर्नेछ:



८

- (क) सामान्य मर्मतका कार्यहरूका लागि: डिजाइन, नक्सा तथा लागत अनुमान तयारी, टेण्डर आव्हान, मूल्याङ्कन तथा सम्झौता, कायदेश, साइट इन्चार्ज तोकी निर्माण कार्यको नियमित रेखदेख अनुगमन, कार्य सम्पन्न पश्चातको नापजाँच, नापी किताब, भुक्तानी ठेक्का बिल र कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन पेस भएपछि जाँचपास गरी अन्तिम भुक्तानी दिन सकिनेछ।
- (ख) बजेटको सिमा भित्र रही विषयगत प्राविधिक कर्मचारीबाट डिजाइन तथा लागत अनुमान तयार गरी स्वीकृत डिजाइन तथा लागत अनुमान अनुसार सार्वजनिक खरिद ऐन नियम बमोजिम कार्यक्रम सम्पन्न गराउनु पर्नेछ।
- (ग) यस कार्यक्रमबाट कार्यालयको लागि पर्दा, कार्पेट लगायत फर्निचरका कार्यहरू समेत गर्न सकिनेछ।

(२) उपदफा (१) बमोजिमको भवन मर्मत सुधार एवम् स्तरोन्नति कार्य सम्पन्न पछि कायदेश अनुसारको नापी किताब, ठेक्का बिल र कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन लगायतको कागजात पेस गर्नु पर्नेछ। नापी किताब र कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन बमोजिम चेकजाँच एवम् निरीक्षण गरी अन्तिम भुक्तानी दिनु पर्नेछ।

१६. सवडिभिजन वन कार्यालयहरूको सुदृढीकरण तथा व्यवस्थापन: (१) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट सवडिभिजन वन कार्यालयको लागि आवश्यक पर्ने कम्प्युटर, प्रिन्टर, इन्भर्टर खरिद, इन्टरनेट जडान र शुल्क भुक्तानी, टेबल, कुर्ची, दराज खरिदमा प्राथमिकता दिई खर्च गर्नु पर्नेछ। यस कार्यक्रमको बजेटबाट फर्निचर (पर्दा, कार्पेट आदि) का सामान खरिद, आवासमा फर्निचर खरिद र रंगरोगन समेत गर्न सकिनेछ।

(२) सव डिभिजन वन कार्यालय व्यवस्थापन सुदृढ भएको अवस्थामा यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेटबाट कार्यालयले दुईपाङ्गे सवारी साधन समेत खरिद गर्न सकिनेछ।

(३) यस कार्यक्रम अन्तर्गत खरिद गरिएका सामानहरूको डिभिजन/सवडिभिजन वन कार्यालयमा अभिलेख राखी वार्षिक प्रतिवेदनमा समावेश गर्नु पर्नेछ।

(४) यस कार्यक्रममा विनियोजन गरिएको बजेट सवडिभिजन वन कार्यालय प्रमुखको सिफारिसमा तोकिएको प्रयोजनमा खर्च गर्नु पर्नेछ।

१७. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह गठन, दर्ता, कार्ययोजना तयारी तथा वन हस्तान्तरण प्रक्रियामा सहजीकरण:

(१) सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह गठन गरी नयाँ दर्ताका लागि समूह सञ्चालन विधान तयारी गर्ने र ती उपभोक्ताबाट विगत देखि चर्चिदै आएका पायक पर्ने राष्ट्रिय वन क्षेत्र नयाँ सामुदायिक वनको रूपमा हस्तान्तरणका लागि वन कार्ययोजना तयार गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रममा देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछ:

- (क) समूह गठन तथा कार्ययोजना तयार गर्न प्रचलित वन ऐन र नियमावली र सामुदायिक वन विकास कार्यक्रमको मार्गदर्शनले निर्धारण गरेको प्रक्रियाहरू अवलम्बन गर्नु पर्नेछ।

[Handwritten signature]



९

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]
प्रदेश सचिव

- (ख) उपभोक्ता समूहको सहभागितामा प्रचलित कानूनमा भएका विषय वस्तुहरू समावेश भएको विधान र कार्ययोजना तयार गर्नु पर्नेछ।
- (ग) विधान र कार्ययोजना तयारीको लागि प्राविधिक सहयोग डिभिजन/सबडिभिजन वन कार्यालयबाट हुनेछ।
- (घ) दलित, महिला, गरिब लक्षित समुदायको लागि आयआर्जन कार्यक्रम तथा जलवायु परिवर्तन अनुकूलन सम्बन्धी योजनाहरू समावेश गर्नुपर्नेछ।
- (ङ) समूहको विधान र वन कार्ययोजनाको मस्यौदा उपर डिभिजनल वन अधिकृत र डिभिजन वन कार्यालय योजना तथा अनुगमन शाखाका प्राविधिकबाट सल्लाह सुझाव लिनु पर्नेछ।
- (च) उपभोक्ता समूह दर्ता र वन हस्तान्तरणका लागि तोकिएको ढाँचामा निवेदन साथ विधान (चार प्रति) र कार्ययोजना (चार प्रति) सम्बन्धित वन उपभोक्ता समूहले डिभिजन वन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।
- (छ) समूहको विधान र वन कार्ययोजना कम्तीमा रेन्जर तहका वन प्राविधिकबाट स्वीकृतिका लागि सिफारिस भएको हुनु पर्नेछ।
- (ज) उपभोक्ता समूहबाट पेस भएको विधान र कार्ययोजना चेकजाँच गरी प्रचलित कानून अनुसार देखिएमा स्वीकृतिको लागि योजना तथा वन व्यवस्थापन शाखाले डिभिजनल वन अधिकृत समक्ष पेस गर्नु पर्नेछ। डिभिजनल वन अधिकृतबाट स्वीकृति भएपछि सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको दर्ता भइ सामुदायिक वन व्यवस्थापन कार्ययोजना कार्यान्वयन गर्न सकिनेछ।

(३) यसमा शीर्षकमा विनियोजित बजेट टोल/समुदाय छलफल गोष्ठी सञ्चालन, वन स्रोत सर्वेक्षण तथा विश्लेषण, नक्सा तयारी समेतको कार्य गर्न प्राविधिक परिचालन, खाजा, इन्धन, विधान र कार्ययोजनाको मस्यौदा तयारी र सोको अध्ययन, चेकजाँच, राय सुझावका लागि छलफल सञ्चालन तथा फिल्ड निरीक्षण, विधान तथा कार्ययोजनाको टाइपिङ, प्रिन्टिङ र बाइन्डिङ लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

१८. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको कार्ययोजना नवीकरण सहयोग: (१) सामुदायिक वन कार्ययोजनाको अवधि समाप्त भएका र आम्दानी स्रोत नभएका समूहको वन कार्ययोजना पुनरावलोकन कार्यमा सहयोग गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

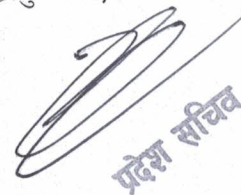
(२) यस कार्यक्रममा देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछ:

- (क) प्रचलित वन ऐन, वन नियमावली र सामुदायिक वन विकास कार्यक्रमको मागदर्शन २०७१ ले निर्धारण गरेका प्रक्रियाहरू अवलम्बन गरी प्रचलित कानूनमा व्यवस्था भएका विषय वस्तुहरू र जलवायु परिवर्तन अनुकूलन सम्बन्धी योजना समावेश भएको कार्ययोजना तयार गर्नु पर्नेछ।
- (ख) वन कार्ययोजना पुनरावलोकनमा छुट्टयाइएको रकम म्याद समाप्त भइसकेका वनहरूको कार्ययोजना नवीकरणमा प्राथमिकता दिनु पर्नेछ। कार्ययोजनाको अवधि








प्रदेश सचिव

बाँकी रहेको वन कार्ययोजना संशोधन गर्न यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गरिने छैन।

- (ग) यो कार्यक्रम डिभिजन वन कार्यालयका कर्मचारी र सेवा प्रदायकबाट समेत सञ्चालन गर्न सकिनेछ।
- (घ) कार्ययोजना तयार गर्दा डिभिजनल वन अधिकृत लगायतका प्राविधिकहरुबाट सल्लाह सुझाव लिन सकिनेछ।
- (ङ) सम्बन्धित सबडिभिजन वन कार्यालयको प्रमुखले सिफारिस र उपभोक्ता समूहको बैठकको निर्णय साथ कार्ययोजना (चार प्रति) सम्बन्धित वन उपभोक्ता समूहले डिभिजन वन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।
- (च) डिभिजनल वन अधिकृतबाट स्वीकृति भएपछि समूहले वन कार्ययोजना कार्यान्वयन गर्न सक्नेछ।

(३) यस कार्यक्रममा उपलब्ध बजेटबाट टोल/समुदाय छलफल गोष्ठी सञ्चालन, वन स्रोत सर्वेक्षण तथा विश्लेषण, नक्सा तयारी समेतको कार्य गर्न प्राविधिक एवम् विज्ञ परिचालन, सेवा प्रदायक परामर्श सेवा शुल्क, खाजा, इन्धन, कार्ययोजना मस्यौदा तयारी र सो उपर अध्ययन, चेकजाँच, राय सुझाव सङ्कलनका लागि छलफल र फिल्ड निरीक्षण, कार्ययोजना टाइपिङ, प्रिन्टिङ र बाइन्डिङ समेतको कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

१९. बीस हेक्टर भन्दा कम क्षेत्रफल र न्यून आमदानी भएका सामुदायिक वनको संक्षिप्त कार्ययोजना

तयारी: (१) बीस हेक्टर भन्दा कम क्षेत्रफल भएका र आमदानीको स्रोत न्यून भएका सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको नविकरण गर्ने एवम् निरन्तरता दिने प्रयोजनको लागि संक्षिप्त कार्ययोजना तयार गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) गण्डकी प्रदेश वन ऐन, २०८० को दफा ३३ र तोकिएको व्यवस्था बमोजिम संक्षिप्त कार्ययोजना तयार गरिनेछ।

(३) विगतमा कार्ययोजनामा GPS बाट वन सिमाना सर्वेक्षण नक्सा र फिल्डबुक नभएको भए GPS बाट वन सिमाना सर्वेक्षण गर्न, प्रचलित वन नियमावलीको प्रावधान थप गर्नुपर्ने भएमा वा साविकको कार्ययोजनामा भएका प्रावधानहरू परिवर्तन गर्नुपर्ने भएमा उपभोक्ता समूहसँग छलफल गरी तयार गर्न सकिनेछ। वन स्रोत मापन तथा विश्लेषण गरी कार्ययोजनामा समावेश गर्नुपर्नेछ।

(४) यस कार्यक्रमबाट म्याद समाप्त भइसकेका वनहरूको कार्ययोजना नवीकरणको लागि प्राथमिकता दिनु पर्नेछ।

(५) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट कार्ययोजना तयारी क्रममा खाजा, इन्धन, सञ्चार, यातायात, दैनिक भ्रमण भत्ता, टाइपिङ प्रिन्टिङ तथा बाइन्डिङ कार्यमा खर्च गरिनेछ।

२०. प्रजाति विशेष थिनिङ (छटनी) निर्देशिका/कार्यविधि निर्माण: (१) पोल अवस्थामा रहेका वनहरूको थिनिङ

गरी वनको हैसियतमा सुधार ल्याई गुणस्तरिय काठ उत्पादन गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्न सकिनेछ:



- (क) मन्त्रालयले समिति समेत गठन गरी सरोकारवालाहरूसंग आवश्यकता बमोजिमको समन्वय र छलफल गर्नु पर्नेछ।
- (ख) समितिले प्रजाति विशेषको थिनिड (छटनी) निर्देशिका/कार्यविधि मस्यौदा तयार गरी मन्त्रालय र अन्तर्गतका विज्ञ टोलीहरूको उपस्थितिमा राय सुझाव लिनु पर्नेछ। यसका लागि आवश्यकता अनुसार बाह्य विज्ञको समेत सहयोग लिन सकिनेछ।
- (ग) यो कार्यक्रम सेवा प्रदायकबाट समेत सञ्चालन गर्न सकिनेछ।
- (घ) प्रजाति विशेष प्रजाति (साल, सिसौ, चाँप, खोटेसल्ला, असना, उत्तिस, कटुस-चिलाउने र अन्य मिश्रित काष्ठ प्रजाति) को थिनिड (छटनी) निर्देशिका/कार्यविधि मस्यौदा उपर विज्ञहरूबाट उपलब्ध सुझावलाई समेत समावेश गरी अन्तिम रूप दिनु पर्नेछ।
- (ङ) तयार भएको प्रजाति विशेषको थिनिड (छटनी) निर्देशिका/कार्यविधि स्वीकृतिको लागि मन्त्रालयमा पेश गर्नु पर्नेछ र स्वीकृति पछि मात्र कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट निर्देशिका/कार्यविधि तयारी र सोको लागि छलफल, अन्तर्क्रिया, फिल्ड अवलोकन, प्रयोगात्मक अभ्यास, अभिमुखीकरण खाजा, सञ्चार, इन्धन लगायतको व्यवस्थापन कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

२१. सामुदायिक वनमा पोल थिनिड समेत गरी व्यवस्थापन: (१) लामो समयदेखि संरक्षण हुँदै आएका सामुदायिक वनहरू पोल वनको रूपमा विकसित भएकोले त्यस्ता पोलहरूको आवश्यक काँटछाँट गरी वनको स्वस्थ वृद्धिमा टेवा पुऱ्याइ स्थानीय उपभोक्ताको साना काठ दाउराको आवश्यकता परिपूर्ति गर्ने यस कार्यक्रमको उद्देश्य रहेको छ।

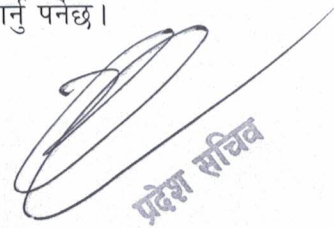
(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्न सकिनेछ:

- (क) सवडिभिजन वन कार्यालयले थिनिड (पतल्याउने) गर्न आवश्यक र उपयुक्त सामुदायिक वनको नाम, ठेगाना, खण्ड, क्षेत्रफल, मुख्य प्रजाति, समूहको वन कार्ययोजना तथा कार्यतालिका सहितका विवरण खुलाइ सिफारिस गरी डिभिजन वन कार्यालयमा पठाउनु पर्नेछ।
- (ख) डिभिजन वन कार्यालयबाट आवश्यक परे स्थलगत निरीक्षण र उपभोक्ता समूहसँग छलफल समेत गरी सिफारिस भइ आएका सामुदायिक वनहरू मध्येबाट सामुदायिक वनको छनोट गर्नुपर्नेछ।
- (ग) छनोट भएका सामुदायिक वनको स्वीकृत वन कार्ययोजना हेरी कार्यान्वयन गरिने खण्ड वा उपखण्डमा रहेका पोल (व्यास १० देखि ३० से.मि.सम्म) हरूको सम्बन्धित समूहबाट नापजाँच तथा गणना (प्रजाति, गोलाइ, उचाइ, अवस्था, प्रकृति) र मुल्याङ्कन गरी पतल्याउने योजना सहितको लागत स्वीकृतिको लागि सवडिभिजन वन कार्यालयमार्फत डिभिजन वन कार्यालयमा पेश गर्नु पर्नेछ।








प्रदेश सचिव

(घ) पेस भएको पतल्याउने योजना डिभिजन वन कार्यालयबाट स्वीकृत भएपछि कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्न पर्नेछ।

(३) पोल थिनिडका लागि साल, सिसौ, चाँप, खोटेसल्ला, असना, उत्तिस, कटुस-चिलाउने लगायतका अन्य प्रजाति मिश्रित काष्ठ प्रजातिको बाहुल्यता भएका सामुदायिक वनलाई प्राथमिकता दिनु पर्नेछ।

(४) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेटबाट फिल्ड अवलोकन, पतल्याउने योजना तयारी र वन सम्बर्द्धन क्रियाकलाप अभिमुखीकरण, कटान औजार/सामग्री खरिद, पोलको नम्बरिड र रड लगाउने, कटान-मुछान-ढुवानी-घाटगद्दी खर्च, आवश्यकता अनुसार पोल वन संरक्षणको लागि घेराबार, अनुगमन खर्च (खाजा, सञ्चार, इन्धन) आदि कार्यहरूमा रकम खर्च गर्न सकिनेछ।

२२. सामुदायिक वन, कबुलियती वन, साझेदारी वन, निजी वन, कृषि वन तथा जडीबुटी विकास सम्बन्धी कार्यक्रमहरूको अनुगमन, मूल्याङ्कन र प्रतिवेदन तयारी: (१) यस कार्यक्रममा मन्त्रालय अन्तर्गतका निकायहरूबाट वन, वातावरण क्षेत्रमा सञ्चालन गरिएका सामुदायिक वन, कबुलियति वन, साझेदारी वन, निजी वन, कृषि वन तथा जडिबुटी विकास सम्बन्धी कार्यक्रमहरूको विगत र चालु आर्थिक वर्षमा सञ्चालन तथा सम्पन्न भएका कार्यक्रमहरूको प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि स्थलगत अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गरी प्रतिवेदन तयारी गरिनेछ।

(२) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट कर्मचारीको दैनिक भ्रमण भत्ता, मसलन्द र प्रतिवेदन छपाइमा खर्च गर्न सकिनेछ।

२३. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह संस्थागत सुदृढीकरण तथा लेखा व्यवस्थापन कोचिड तथा क्षमता अभिवृद्धि/सामुदायिक वनमा लेखा अभिलेखीकरण तालिम/सामुदायिक वन समितिलाई लेखा तथा अभिलेख व्यवस्थापन तालिम: (१) यस कार्यक्रमको उद्देश्य सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहहरूको संस्थागत सुधारका लागि समितिका पदाधिकारीहरूको क्षमता अभिवृद्धि गर्नु रहेको छ।

(२) उपदफा (१) बमोजिमको कार्यक्रम कार्यान्वयन प्रक्रिया देहाय बमोजिम हुनेछ:

(क) पहिले तालिम प्राप्त नगरेका समूहलाई प्राथमिकता दिनु पर्नेछ। सहभागीको रूपमा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष र कार्यालय सचिवहरू मध्ये कम्तीमा कुनै दुई जनालाई छनोट गर्नु पर्नेछ।

(ख) कार्यक्रम सञ्चालनका लागि कायदेशि प्राप्त गर्ने कर्मचारी/संस्थाले बिषयबस्तु सहितको प्रशिक्षण योजना बनाइ स्थलगत रूपमा प्रशिक्षण दिनु पर्नेछ।

(ग) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खाजा, स्टेशनरी र सहजीकरण शुल्क लगायतको तालिम व्यवस्थापन कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

(घ) प्रशिक्षणको उपलब्धीलाई परिणाममुखी बनाउन सहभागीहरूबाट आ-आफ्नो समूहको कार्ययोजना बनाउन लगाउनु पर्नेछ।

(ङ) तालिम कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको प्रतिवेदन भुक्तानीका लागि डिभिजन वन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।



२४. सामुदायिक वन स्थलगत अभ्यास: (१) सामुदायिक वनको प्रकार, किसिम तथा अवस्थाको आधारमा वन सम्बर्द्धन क्रियाकलापहरू सञ्चालन गर्ने, वनको हैसियत सुधार गर्ने, साना काठ/दाउरा उपभोक्तालाई उपलब्ध गराउने, वन डढेलो न्यूनीकरण गर्ने लगायतका उद्देश्यले कम्तीमा दुई दिन सञ्चालन गर्न यो कार्यक्रम राखिएको हो। यस कार्यक्रममा वन संवर्द्धनका क्रियाकलापहरू (झाडी सफाइ, थिनिङ, एकल्याउने, प्रुनीङ, इम्पुभमेन्ट फेलिङ, वृक्षारोपण, गोडमेल, विउ सङ्कलन) समेट्न सकिनेछ।

(२) उपदफा (१) बमोजिमको कार्यक्रम सम्पन्न भए पश्चात फोटो सहितको प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) यस शीर्षकको बजेटबाट स्थलगत अभ्यास गरेका समूहहरूका लागि वन सम्बर्द्धन कार्य सम्बन्धी आवश्यक औजार समेत खरिद गरी वितरण गर्न सकिनेछ।

२५. सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहका महिलाहरूको सीप अभिवृद्धिका लागि वन पैदावारमा आधारित हस्तकला निर्माण तालिम: (१) यो कार्यक्रमबाट स्थानीयस्तरमा पाईने वन पैदावारजन्य हस्तकलामा आधारित जस्तै: अग्निसोको कुचो बनाउने, दुना टपरी बनाउने, अल्लाको रेसा निकाल्ने, रेसाबाट टोपी, झोला आदि बुन्ने, मौरीघार निर्माण गर्ने, बेत/बाँस/निगालोको चोयाबाट भकारी, डोको, नाइलो, नाम्लो, मान्द्रो, थुम्से, छत्री, पेरुङ्को, घुम, स्याखु आदि बनाउने, बायोब्रिकेट र बायोचार बनाउने लगायतका सिपमूलक/प्रयोगात्मक तालिम सञ्चालन गर्न सकिनेछ। यसका लागि एकै समुह वा नजिकमा रहेका दुई वा दुई भन्दा बढी सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहका महिलाहरूलाई समावेश गरी तालिम दिन सकिनेछ।

(२) यस कार्यक्रमबाट सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहका महिलाहरूको सीप अभिवृद्धि भई आयाआर्जनमा टेवा पुग्ने साथै स्थानीय वन पैदावारको सदुपयोग हुनेछ।

(३) कार्यक्रम सम्पन्न भए पश्चात सञ्चालन गरिएका क्रियाकलापहरू समेटेको फोटो सहितको प्रतिवेदन तयार गर्नुपर्ने छ।

(४) तालिम सञ्चालनका लागि आवश्यक सामग्री, कच्चा पदार्थ खरिद, स्रोत व्यक्तिको सहजीकरण शुल्क, खाजा, भ्रमण भत्ता, सहभागी भत्ता, यातायात लगायतका शीर्षकहरूमा खर्च गर्न सकिनेछ।

२६. वनपाले सामुदायिक वनको लप्सी उद्योगमा उत्पादनमूलक सामग्री वितरण: (१) यो कार्यक्रम कार्यान्वयनको लागि डिभिजन वन कार्यालय कास्कीले वनपाले सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह, अन्नपूर्ण गा.पा. ३ मा लप्सी उद्योग प्रवर्द्धनको लागि आवश्यक सामग्रीहरूको अनुमानित लागत सहितको सूची माग गर्नु पर्ने छ।

(२) उपदफा (१) बमोजिमको मागका लागि सम्बन्धित समूहले निर्णय गरी लप्सी उद्योगमा आवश्यक उत्पादनमूलक सामग्रीहरूको सूची डिभिजन वन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्ने छ।

(३) उपदफा (२) बमोजिमको डिभिजन वन कार्यालयले बजेट परिधिभित्र रही प्रचलित कानुन बमोजिम सामग्रीहरू खरिद तथा दाखिला गरी सम्बन्धित सामुदायिक वनलाई हस्तान्तरण गर्नुपर्ने छ।

१४



१४

प्रदेश सचिव

सम्बन्धित समूहले सामग्री प्राप्त भएपछि समूहमा आम्दानी बाँधी सोको जानकारी डिभिजन वन कार्यालयलाई दिनु पर्नेछ।

(४) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट वनपाले सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह, अन्नपूर्ण गा.पा. ३, कास्कीमा लप्सी उद्योग सञ्चालनका उत्पादनमूलक सामग्री खरिद र हस्तान्तरणका लागि खर्च गर्न सकिनेछ।

२७. सामुदायिक वनमा जैविक मल उत्पादन: (१) सामुदायिक वन क्षेत्रका प्रमुख प्रजातिहरूको बृद्धि विकासमा असर पुऱ्याउने गरी व्यापक रूपमा फैलिदै गरेका वनमारा, माइकेनिया लगायतका मिचाहा प्रजातिहरूको नियन्त्रणको साथसाथै ती मिचाहा प्रजातिहरू र स्थानीय रूपमा पाइने अन्य अनावश्यक झारपातहरूको प्रयोग गरी जैविक मल उत्पादन गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रम सञ्चालनका लागि कम्तीमा पन्ध्र दिने सूचना जारी गरी जिल्लाभित्रका इच्छुक सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहहरूबाट अवधारणा सहितको प्रस्तावना माग गर्नु पर्नेछ।

(३) प्राप्त प्रस्तावनाहरूको मूल्याङ्कन गर्दा समूह वन क्षेत्रमा कच्चा पदार्थको उपलब्धता र उत्पादन हने मलको खपत समेतलाई ध्यान दिई कुनै एक समूह छनोट गर्नु पर्नेछ।

(४) प्रस्तावना मूल्याङ्कन गर्दा पहिले देखि जैविक मल उत्पादन गरेका र मल उत्पादन लागि चाहिने मेशिनरी औजार समेत रहेको समूहलाई प्राथमिकता दिनु पर्नेछ।

(५) यस कार्यक्रम डिभिजन वन कार्यालयले सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहसंग सम्झौता गरी सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(६) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट जैविक मल उत्पादनको लागि मेशिनरी सामग्री खरिद, कच्चा पदार्थ संकलन लगायतका शीर्षकमा खर्च गर्न सकिनेछ।

२८. संरक्षण पोखरी निर्माण तथा सम्भार व्यवस्थापन/सामुदायिक वनमा पानी पोखरी निर्माण/रिचार्ज पोखरी निर्माण/पूरानो पानी संरक्षण पोखरी पुनर्स्थापना/पोखरी व्यवस्थापन पुनर्भरण/एक सामुदायिक वन एक संरक्षण पोखरी कार्यक्रम: (१) वन क्षेत्रमा पानी सङ्कलन गर्न, पुनर्भरण गर्न, वन्यजन्तुलाई सुख्खा समयमा पानी उपलब्ध गराई वासस्थान सुधार गर्ने, वन डढेलो नियन्त्रणमा पानीको प्रयोग गर्न र स्थानीय जलवायुमा सकारात्मक परिवर्तन ल्याउन यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रममा देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू समेट्न सकिनेछ।

(क) पानी पोखरी निर्माण तथा सम्भार व्यवस्थापन, पुनर्स्थापना, पुनर्भरण कार्य सञ्चालनका लागि डिजाइन, नक्सा, लागत ईष्टिमेट तयार गरी स्वीकृत भएको हुनु पर्नेछ। लागत इष्टिमेट बमोजिमको कार्य सम्पन्न गर्न उपभोक्ता समूहको योगदानलाई समेत सुनिश्चित गर्नु पर्नेछ।

(ख) यस कार्यक्रम अन्तर्गत मुहानबाट पोखरीसम्म पानी ल्याउने पाइप तथा Water Channel को व्यवस्था, वर्षादको पानी संकलन र भल व्यवस्थापन कार्य गर्न सकिनेछ।

१५



१५

१५

१५

प्रदेश सचिव

- (ग) नयाँ पानी पोखरी निर्माण कार्य गर्दा गराउँदा परम्परागत साना पोखरी भएका क्षेत्र तथा सम्भव भएसम्म रुखबिरुवा नभएको सामुदायिक वनको खाली क्षेत्रलाई प्राथमिकता दिनु पर्नेछ।
- (घ) स्थानीय तह र सामुदायिक वन उपभोक्ता समूहको सह-लगानीमा यो कार्यक्रम सञ्चालन गर्न सकिनेछ।
- (ङ) पूराना पानी पोखरीको मर्मत सम्भार एवम् सुधार गर्नु पर्ने देखिएमा यस कार्यक्रमको रकम गर्न सकिनेछ।
- (च) कार्य सम्पन्न पछि प्राविधिकबाट नापजाँच गरी/गराइ नापी किताब, बिल भरपाई, फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन भुक्तानीका लागि पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट पोखरी खाडल खन्ने तथा गाह्रो लगाउने सामग्री संकलन तथा खरिद, ढुवानी, कामदार ज्याला लगायतको कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

२९. नदी खोला किनार हरियाली प्रवर्द्धन कार्यक्रमको लागि स्टम्प रोपण र सुरक्षा समेत: (१) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछ:

- (क) नदी खोला किनारको खाली जग्गामा हरियाली प्रवर्द्धन गर्नका लागि स्थानीय तह तथा समूहसँगको समन्वयमा स्टम्प रोपण गर्नु पर्नेछ।
- (ख) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेटबाट स्टम्प खरिद, स्टम्प ढुवानी, वृक्षारोपण, संरक्षण (हेरालु), घेराबार, ढुंगाको संरक्षण पर्खाल निर्माण, जैविकबार लगाउने, होर्डिङ्गबोर्ड राख्ने लगायतका कार्यमा नियमानुसार नक्सा सहितको लागत अनुमान स्वीकृत गराइ खर्च गर्न सकिनेछ।
- (ग) मनाङ र मुस्ताङ जिल्लामा वृक्षारोपण वा नदी/खोला किनारा हरियाली प्रवर्द्धनका लागि स्टम्प रोपण गर्दा ठूला कटिङ्ग बिरुवा लगाउनु पर्ने हुँदा उक्त स्थानहरूमा मेस जाली वा ढुंगाको पर्खाल लगाई संरक्षण गर्न सकिनेछ। मेसजाली वा ढुंगाको पर्खाल निर्माण गर्दा नर्स र स्वीकृत जिल्ला दररेट अनुसार गर्नु पर्नेछ।
- (घ) जैविकबार लगाउनु परेमा स्थानीयरूपमा उपलब्ध हुन सक्ने सजिलै सार्ने खालका वनस्पतीको प्रयोग गर्नुपर्दछ।

(२) उपदफा (१) बमोजिमको कार्य सम्पन्न पछि बिल भरपाई र फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन संलग्न राखी कार्यालयमा भुक्तानीको लागि पेस गर्नु पर्नेछ।

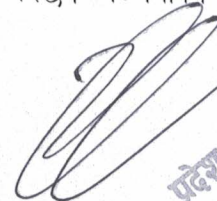
३०. आवधिक योजना सहितको रणनीतिक योजना तयारी (वातावरणीय अध्ययन सहित)/ डिभिजन वन कार्यालयको आवधिक योजना तयारी IEE : (१) प्राकृतिक स्रोतको उचित व्यवस्थापनको माध्यमबाट स्थानीय रोजगारीको अवसर सिर्जना हुनुको साथै सरकारी राजश्व समेत बढोत्तरी गर्न सकिन्छ। जिल्लाको समग्र वन क्षेत्रको संरक्षण, सम्बर्द्धन, विकास र व्यवस्थापनका लागि हरेक डिभिजन वन कार्यालयले आवधिक योजना सहितको रणनीतिक योजना तयार गर्नु/गराउनु पर्दछ। पञ्चवर्षिय वन कार्ययोजनाको





१६





प्रदेश सचिव

म्याद समाप्त भएका डिभिजन वन कार्यालयको आवधिक योजना सहितको रणनीतिक योजना तयार गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछः

- (क) व्यवस्थापन योजना तयारीको लागि डिभिजन वन कार्यालयले वातावरणीय अध्ययनको कार्यसूची (TOR) तयार गरी र स्वीकृत गराउनु पर्नेछ।
- (ख) प्रचलित वन र वातावरण सम्बन्धी ऐन र नियमावलीमा उल्लेख भएका आधारहरू एवम् तोकिएको ढाँचामा IEE प्रतिवेदन र आवधिक योजना तयार गर्नु पर्नेछ।
- (ग) IEE प्रतिवेदन र आवधिक योजनाको मस्यौदा मन्त्रालय प्रतिनिधिको उपस्थितिमा निर्देशनालयमा प्रस्तुत गर्नु पर्नेछ। प्रस्तुतीको क्रममा प्राप्त सुझाहरू समावेश गरी अन्तिम मस्यौदा तयार गरी स्वीकृतिको लागि डिभिजन वन कार्यालयले निर्देशनालय मार्फत मन्त्रालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।
- (घ) यो कार्यक्रम डिभिजन वन कार्यालयका कर्मचारी वा सेवाप्रदायकबाट सम्पादन गर्न सकिनेछ।
- (ङ) IEE प्रतिवेदन र आवधिक योजना सहितको रणनीतिक योजना मन्त्रालयको स्वीकृति पछि कार्यान्वयन गर्न सकिनेछ।

(३) यस कार्यक्रममा स्वीकृत बजेट सूचना प्रकाशन, सरोकारवालासँग छलफल, अन्तरकृया, प्राविधिक समितिको बैठक सञ्चालन समन्वय एवम् व्यवस्थापन, विवरण सङ्कलन लगायतको प्राविधिक कार्यहरूमा जनशक्ति परिचालन, स्टेशनरी, फोटो नक्सा, अति आवश्यक फिल्ड सामग्री खरिद, IEE प्रतिवेदन तथा आवधिक योजना सहितको रणनीतिक योजना तयारी टाइपिङ, प्रिन्टिङ, बाइन्डिङ लगायतको कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

३१. सहभागितामूलक अतिक्रमण, चोरी कटानी तथा चोरी शिकारी नियन्त्रण/वन संरक्षण कार्यक्रम/वन अपराध नियन्त्रणको लागि गस्ती परिचालन/वन अपराध नियन्त्रण लागि गस्ती परिचालन/अतिक्रमण तथा चोरीशिकारी नियन्त्रणका लागि गस्ती परिचालनः (१) वन तथा वन्यजन्तु अपराध नियन्त्रण गर्न र वन अतिक्रमण हुन नदिन नियमित गस्ती गरी वन क्षेत्रको संरक्षण र व्यवस्थापनमा सहयोग पुऱ्याउने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछः

- (क) वन तथा वन्यजन्तुसँग सम्बन्धित अपराधहरू नियन्त्रण तथा न्यूनीकरण गर्नका लागि प्रचारप्रसार, गस्ती परिचालन गर्न सकिनेछ।
- (ख) डिभिजन वन कार्यालय मार्फत सुरक्षा निकायसंगको समन्वय र स्थानीय प्रशासन सहयोगमा वन अपराध तथा अतिक्रमण नियन्त्रण गरिनुका साथै सो सम्बन्धी सचेतना कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्नु पर्नेछ।
- (ग) वन पैदावार चोरी कटानी र चोरी शिकारी सम्बन्धी सूचना सङ्कलन गरी वन अपराधीलाई पक्राउ, हातहतियार, मालसामान र सवारी साधन वरामद, बरामदी

1/19



Handwritten signature

प्रदेश सचिव

सामग्री ढुवानी, अपराध, अनुसन्धान तथा मुद्दा दायरी, अतिक्रमित वन क्षेत्र खाली गर्ने जस्ता कार्यहरू गरिनेछ।

(घ) कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात गरिएका कृयाकलापहरू देखिने फोटो सहितको प्रतिवेदन तयार गरी भुक्तानीको लागि पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) उपदफा (१) बमोजिमका क्रियाकलापहरूको सञ्चालनको साथै वन अपराध नियन्त्रणको लागि सरोकारवाला बिच समन्वय बैठक सञ्चालन, सूचना संकलनका लागि सुराकी परिचालन, आवश्यक सुरक्षा सामग्री र मसलन्द खरिद, गस्ती परिचालनका लागि इन्धन/गाडी भाडा, गाडी मर्मत, गस्तीमा परिचालित हुने व्यक्तिहरूको खाना, खाजा लगायतको कार्यहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

तर यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट दैनिक भ्रमण भत्ताका लागि खर्च गर्न पाइने छैन।

३२. विभिन्न दिवसहरू मनाउने: (१) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू समेट्नु पर्नेछ:

(क) सामुदायिक वन/वातावरण/वृक्षारोपण/भूसंरक्षण/जैविक विविधता/विश्व सिमसार/पृथ्वी जस्ता दिवस समारोह सञ्चालनका साथै लोकतन्त्र/गणतन्त्र/निजामती सेवा/प्रदेश स्थापना दिवस आदिको अवसरमा वृक्षारोपण गर्ने कार्यलाई समेत प्रदेश र जिल्लास्तरमा गर्न सकिनेछ।

(ख) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको प्रतिवेदन तयार गरी भुक्तानीका लागि पेस गर्नु पर्नेछ।

(२) यस कार्यक्रममा विनियोजन गरिएको बजेट स्टेशनरी, व्यानर, खाजा, खाना, वृक्षारोपण तयारी, प्रचारप्रसार सामग्री तयारी र वितरण लगायतका क्रियाकलापहरूमा खर्च गर्न सकिने छ।

३३. कवुलियती वन समूह गठन र कार्ययोजना तयारी (जीविकोपार्जन सुधार योजना समेत): (१) गरिबीको रेखामुनि रहेका जनताको गरिबी न्यूनीकरण कार्ययोजना बनाइ वनको संरक्षण र विकास हुने गरी गरिब तथा विपन्न घरधुरीहरूको जीविकोपार्जन सुधार ल्याउने आयआर्जनका कार्यक्रम समेत सञ्चालन गर्ने गरी समूहलाई कवुलियती वन हस्तान्तरण गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू समेट्नु पर्नेछ:

(क) प्रचलित वन ऐन, नियमावली र मार्गदर्शनमा व्यवस्था भएको प्रक्रियाहरूको अवलम्बन र विषयवस्तुहरू समावेश गरी समूह गठन र कार्ययोजना तयारी गर्नु पर्नेछ।

(ख) विधान र कार्ययोजना तयारीको लागि प्राविधिक सहयोग डिभिजन/सवडिभिजन वन कार्यालयबाट उपलब्ध हुनेछ।

(ग) कवुलियती वन समूह दर्ता र वन हस्तान्तरणका लागि तोकिएको ढाँचामा निवेदन साथ सवडिभिजन वन कार्यालयका प्रमुखबाट सिफारिस भएको विधान (चार प्रति) र



प्रदेश सचिव

कार्ययोजना (चार प्रति) सम्बन्धित समूहले स्वीकृतिका लागि डिभिजन वन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(घ) समूहबाट पेस भएको विधान र कार्ययोजना डिभिजनल वन अधिकृतबाट स्वीकृति भएपछि कबुलियती वन समूहको दर्ता भइ कार्ययोजनाको कार्यान्वयन गर्न सकिनेछ।

(३) यस शीर्षकमा विनियोजित बजेट कृषक सदस्यसंगको छलफल गोष्ठी सञ्चालन, वन सिमाना र स्रोत सर्वेक्षण तथा विश्लेषण, नक्सा तयारी समेतको कार्य गर्न प्राविधिक परिचालन, खाजा, इन्धन, विधान र कार्ययोजनाको टाइपिङ, प्रिन्टिङ र बाइन्डिङ लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

३४. कबुलियती वन कार्ययोजना नवीकरण: (१) कार्ययोजनाको अवधि समाप्त भएका कबुलियती वनको कार्ययोजना नवीकरण कार्यमा सम्बन्धित समूहलाई सहयोग गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू समेट्नु पर्नेछ:

(क) प्रचलित वन ऐन तथा वन नियमावलीले निर्धारण गरेको आवश्यक प्रक्रियाहरूको अवलम्बन र विषयवस्तुहरू समावेश गरी कार्ययोजना तयार गर्नु पर्नेछ।

(ख) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट भ्रमण भत्ता, खाजा, यातायात लगायतका शीर्षकमा स्वीकृत लागत अनुमानको परिधि भित्र रही खर्च गर्न सकिने छ।

(ग) यो कार्यक्रम डिभिजन वन कार्यालयका कर्मचारी र सेवा प्रदायकबाट समेत सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(घ) समूहको बैठकको निर्णय सहितको पत्र साथ कम्तीमा रेन्जर तहका वन र प्राविधिकबाट सिफारिस भएको जीविकोपार्जन सुधार योजना समेतको कबुलियती कार्ययोजना (चार प्रति) सम्बन्धित समूहले स्वीकृतिका लागि डिभिजन वन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(ङ) समूहबाट पेस हुन आएको वन कार्ययोजना डिभिजनल वन अधिकृतबाट स्वीकृति भएपछि कार्यान्वयन गर्न सकिनेछ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेटबाट समूह छलफल गोष्ठी सञ्चालन, वन स्रोत सर्वेक्षण तथा विश्लेषण, नक्सा तयारी समेतको कार्य गर्न प्राविधिक परिचालन, सेवा प्रदायक परामर्श सेवा शुल्क, खाजा, इन्धन, कार्ययोजना टाइपिङ, प्रिन्टिङ र बाइन्डिङको लागत अनुमान तयार गरी स्वीकृत गराइ खर्च गर्न सकिनेछ।

३५. कबुलियती वन समूहमा सामाजिक परिचालन सेवा: (१) कलष्टरमा रहेका कबुलियती वन समूहहरूलाई जिल्ला सुपरभाइजर र समूह सहयोगीहरू मार्फत सहयोग उपलब्ध गराइ समूहको सामाजिक समावेशीकरण, संस्थागत सुदृढीकरण र सकृयता वृद्धि गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछ:

(क) यस कार्यक्रमबाट आवश्यकता र औचित्यताको आधारमा जिल्ला सुपरभाइजर (एक जना मात्र) र समूह सहयोगीहरूको छनोट गरी काम काजमा लगाउन सकिनेछ।

(ख) जिल्ला सुपरभाइजर र समूह सहयोगीहरूको छनोट गर्दा विगतदेखि कार्यरतलाई प्राथमिकता दिनु पर्नेछ।



१९

प्रदेश सचिव

- (ग) जिल्ला सुपरभाइजरको हकमा कम्तीमा बाह्र कक्षा उत्तीर्ण गरेको जिल्लावासी तथा समूह सहयोगीको हकमा कम्तीमा दस कक्षा उत्तीर्ण गरेको सम्बन्धित कलेक्टर/समूह भित्रको महिलालाई प्राथमिकता दिनु पर्नेछ। सुपरभाइजर हकमा जिल्लाको आवश्यकता बमोजिम प्राविधिक प्रमाणपत्र तह वा रेन्जर कोर्ष गरेको प्राविधिक समेत छनोट गर्न सकिनेछ। सुपरभाइजरको सेवा सुविधाको हकमा समान तहको निजामती कर्मचारीले पाउने आधारभूत तलव स्केलमा नबढ्ने गरी र समूह सहयोगीको सेवा र सुविधाको हकमा नेपाल सरकारबाट निर्धारण भएको न्यूनतम मासिक पारिश्रमिकमा नघटाई उपलब्ध गराउन सकिनेछ।
- (घ) छनोट भएका सामाजिक परिचालकको कार्यविवरण तयार गरी काममा लगाउनु पर्नेछ।
- (ङ) सामाजिक परिचालकहरू मध्ये जिल्ला सुपरभाइजरले सम्पादन गरेका मासिक कार्य प्रगति विवरण योजना तथा व्यवस्थापन शाखा प्रमुखको सिफारिस र समूह सहयोगीहरूले सम्पादन गरेको मासिक कार्य प्रगति विवरण जिल्ला सुपरभाइजरको सिफारिस र सम्बन्धित सबडिभिजन वन कार्यालय प्रमुखबाट प्रमाणित गराइ डिभिजन वन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट सामाजिक परिचालकको पारिश्रमिक भुक्तानीमा खर्च गर्न सकिनेछ।

३६. वन, वातावरण तथा जैविक विविधता संरक्षणका लागि स्कूल शिक्षा कार्यक्रम: (१) वन, वातावरण र जैविक विविधताको महत्व र तिनको संरक्षणका बारेमा विद्यालयको कक्षा ९ देखि १२ सम्म अध्ययनरत विद्यार्थीहरूलाई जानकारी गराउने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रम अन्तर्गत देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू समेट्न सकिनेछ:

(क) विद्यालयमा बाल इको क्लव गठन तथा सञ्चालन, वन, वातावरण र जैविक विविधता सम्बन्धी प्रस्तुति, विद्यालयमा अतिरिक्त कक्षा सञ्चालन, वक्तृत्वकला, हाजिरी जवाफ तथा आवश्यकता अनुसार अन्य क्रियाकलाप सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(ख) विद्यालयहरूमा वातावरण सम्बन्धी सृजनात्मक/सन्देशमूलक/चेतनामूलक कार्यक्रम सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेटबाट विद्यार्थीहरूलाई चिया, खाजा, यातायात खर्च र प्रशिक्षण शुल्क, मसलन्द, उत्कृष्ट प्रतिभालाई पुरस्कार लगायतका कार्यमा स्वीकृत लागत अनुमान बमोजिम खर्च गर्न सकिनेछ।

३७. वन डडेलो सम्बन्धी स्कूल शिक्षा कार्यक्रम: (१) वन क्षेत्रमा डडेलो लाग्नाले हुने असर/प्रभाव र वन डडेलो नियन्त्रणका उपायहरू बारेमा विद्यालय स्तरमा अध्ययनरत विद्यार्थीहरूलाई जानकारी गराउने एवं सचेतना अभिवृद्धि गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

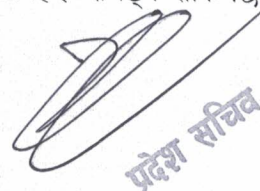
(२) यस कार्यक्रम अन्तर्गत देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू समेट्न सकिनेछ:





२०




पदेश सचिव

(क) विद्यालयमा वन डढेलो र यसको वातावरणमा पर्न सक्ने प्रभाव सम्बन्धी सडक नाटक, सैद्धान्तिक कक्षा सञ्चालन, वक्तृत्वकला, कविता, लोकदोहोरी तथा आवश्यकता अनुसार अन्य क्रियाकलाप सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(ख) विद्यालयमा वन डढेलो सम्बन्धी सृजनात्मक/सन्देशमूलक/चेतनामूलक अन्य कार्यक्रम सञ्चालन गर्न समेत सकिनेछ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेटबाट विद्यार्थीहरूलाई चिया, खाजा, यातायात खर्च र प्रशिक्षण शुल्क, मसलन्द, उत्कृष्ट प्रतिभालाई पुरस्कार लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

३८. नर्सरी मर्मत सम्भार/स्तरोन्नति: (१) कार्यालयहरूको पुराना नर्सरीहरूको सामान्य मर्मत, सुधार तथा नर्सरीहरूको स्तरोन्नतिका लागि यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहायका क्रियाकलापहरू समेट्न सकिने छ:

(क) नर्सरी वेड, नर्सरीमा सिंचाईको स्थायी व्यवस्था, सुरक्षाको लागि स्थायी तारबार वा पर्खाल, ओभरहेड वाटर ट्याङ्की, स्टोर हाउस, कम्पोष्ट पिट, सेडहाउस, हरेक बेडमा पाईप स्प्रिङ्कल जडान, नर्सरी बाटो, होर्डिड बोर्ड लगायतका नर्सरी मर्मत सुधार तथा स्तरोन्नति सम्बन्धी कार्यहरू गर्न सकिनेछ।

(ख) यस कार्यक्रम कार्यान्वयन सकेसम्म प्रथम चौमासिक अवधिमा सम्पन्न गर्नु पर्नेछ।

(३) नर्सरीको मर्मत सुधार/स्तरोन्नतिका कार्य सम्पन्न भएपछि बिल भरपाई र नर्सरी मर्मत सुधार सम्बन्धी कार्यको फोटो सहितको प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

३९. जैविक मार्ग तथा वन संरक्षण क्षेत्र व्यवस्थापन (पञ्चासे वन संरक्षण क्षेत्र): (१) पञ्चासे वन संरक्षण क्षेत्र भित्र रहेका प्राकृतिक सम्पदा (वन, वन्यजन्तु र जलाधार क्षेत्र) को संरक्षणको साथै त्यहाँ रहेका ऐतिहासिक धार्मिक, साँस्कृतिक एवम् पुरातात्विक महत्व बोकेका पर्दकीय सम्पदाको समेत संरक्षण गर्न संरचना निर्माण, मर्मत सम्भार, स्तरोन्नति लगायतका विविध क्रियाकलापहरू सञ्चालन गरी पञ्चासे वन संरक्षण क्षेत्रलाई रमणीय पर्यटकीय गन्तव्य र सिकाई केन्द्रका रूपमा विकास गर्न टेवा पुऱ्याउने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्न सकिनेछ:

(क) स्थानीयको सहयोगमा स्थलगत अवलोकन गरी कार्यक्रम आवश्यकताको पहिचान र प्राथमिकिकरण गर्ने।

(ख) जैविक विविधता संरक्षण/भू तथा जलाधार व्यवस्थापनका क्रियाकलाप गल्छी पहिरो उपचार समेत/धार्मिक, साँस्कृतिक एवम् पुरातात्विक महत्व बोकेका मठ मन्दिर मर्मत सम्भार, स्तरोन्नति/ संरक्षण क्षेत्रभित्र रहेका ताल, पोखरी, पानी मुहान संरक्षण सरसफाइ तथा मर्मत सम्भार/विश्राम स्थल/चौतारी मर्मत सम्भार/स्तरोन्नति/गोरेटो पदमार्ग निर्माण/मर्मत सुधार/स्तरोन्नति/स्थानीय उपभोक्ताहरूको जीविकपार्जन सुधारका क्रियाकलाप/पर्यापर्यटन प्रबर्द्धन सम्बन्धी क्रियाकलापहरू आदि कार्यहरू गर्न सकिनेछ।



प्रदेश सचिव

(ग) स्वीकृत डिजाइन र लागत अनुमान बमोजिमको कार्यक्रम सम्बन्धित उपभोक्तासँग सम्झौता गरी कार्यान्वयन गर्न सकिनेछ।

(३) यस कार्यक्रमबाट सम्पादित कार्यको फोटो सहितको प्रतिवेदन तयार गरी कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(४) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट कार्यक्रममा बाँडफाँट गरी नियमानुसार स्वीकृत गराइ कार्यान्वयन गर्नु पर्नेछ।

(५) उपदफा (२) खण्ड (ख) बमोजिमको कार्यहरू सञ्चालन गर्न र अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

४०. पञ्चासे वन संरक्षण क्षेत्रमा प्राविधिक सहयोग (रेञ्जर, सुपरभाइजर र फिल्ड सहयोगी): (१) पञ्चासे वन संरक्षण क्षेत्रका उपभोक्ताहरूको सामाजिक तथा संस्थागत सुदृढीकरण, वन र वन्यजन्तुको संरक्षण, जनतालाई जैविक विविधता संरक्षणको सचेतना अभिवृद्धि र सीप विकास तथा क्षमता अभिवृद्धि तालिम लगायतका प्रचार प्रसार सम्बन्धी कार्य सञ्चालन लागि प्राविधिक सहयोग उपलब्ध गराउने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रम अन्तर्गत देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू समेट्नु पर्नेछ:

(क) रेञ्जर, सुपरभाइजर र फिल्ड सहयोगीको छनोट गरी सम्झौता गरी काममा खटाउनु पर्नेछ। रेञ्जरको हकमा कम्तीमा वन विज्ञान विषयमा प्रमाणपत्र तह उत्तीर्ण गरेको हुनु पर्नेछ। सुपरभाइजरको हकमा प्रमाण पत्र तह वा सो सरह उत्तीर्ण गरेको सम्बन्धित जिल्लावासी वा क्षेत्रका महिलाहरू र फिल्ड सहयोगीको हकमा कम्तीमा दश कक्षा उत्तीर्ण गरेको सोही क्षेत्रको बासिन्दा हुनु पर्नेछ।

(ख) छनोट गर्दा विगतदेखि कार्यरत रेञ्जर, सुपरभाइजर र फिल्ड सहयोगीलाई प्राथमिकता दिन सकिनेछ।

(ग) सेवा र सुविधा विभागीय नर्सले तोकेको सीमा वा समान तहको निजामती कर्मचारीले प्रचलित नियम अनुसार पाउने मासिक आधारभूत तलव स्केलमा नबढ्ने गरी उपलब्ध गराउन सकिनेछ।

(घ) छनोट भएका कर्मचारीहरूलाई पञ्चासे वन संरक्षण क्षेत्रका प्रबन्धकले कार्य विवरण दिई काममा खटाउनु पर्नेछ।

(ङ) सुपरभाइजर र फिल्ड सहयोगीले सम्पादन गरेका कार्यको प्रत्येक महिनामा बैठक बसी समीक्षा गरी प्रतिवेदन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रम अन्तर्गत प्राविधिक सहयोगका लागि विनियोजित बजेट रेञ्जर, सुपरभाइजर र फिल्ड सहयोगीको न्युनतम सेवा सुविधाका लागि बढि हुने भएमा प्रचारप्रसार, उपभोक्ताहरू सीप विकास तालिम, कर्मचारी क्षमता अभिवृद्धि तालिम, सवारी साधन मर्मत सम्भार/इन्धन, पञ्चासे क्षेत्रको धार्मिक





२२




प्रदेश सचिव

तथा साँस्कृतिक मेला महोत्सव व्यवस्थापन जस्ता कार्यहरू गर्न सकिनेछ। यस कार्यक्रम अन्तर्गत विनियोजित बजेटबाट विकास निर्माण सम्बन्धी पुँजीगत क्रियाकलाप गर्न गराउन पाइने छैन।

(४) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको प्रतिवेदन तयार गरी पेस गर्नु पर्नेछ।

(५) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट सेवा करारमा लिइएका रेञ्जर, सुपरभाइजर र फिल्ड सहयोगीको सेवा सुविधा र चालु खर्च अन्तर्गतका स्वीकृत अन्य क्रियाकलापहरूको सम्पन्न गर्ने कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

४१. इकाइ तथा परिषदको सुदृढिकरण: (१) पञ्चासे वन संरक्षण क्षेत्र अन्तर्गत पर्ने कास्की, स्याङ्जा र पर्वत जिल्लाका मौजुदा १/१ गोटा पञ्चासे वन संरक्षण इकाइ परिषदको संस्थागत अवस्था सुदृढ र इकाइमा आवद्ध उपभोक्ताहरूको क्षमता अभिवृद्धि गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा देहायका क्रियाकलापहरू समेट्न सकिनेछ:

(क) कार्यालय सञ्चालन तथा व्यवस्थापन सामग्री (टेबल, कुर्ची, दराज, कार्पेट, मसलन्द, आदि) खरिद,

(ख) इकाइ परिषदको समन्वय बैठक सञ्चालन,

(ग) इकाइ परिषदका पदाधिकारीहरूको संस्था सञ्चालन सम्बन्धी क्षमता विकास तालिम/गोष्ठी व्यवस्थापन आदि,

(३) उपदफा (२) मा उल्लेख भएका क्रियाकलापहरूको व्यवस्थापन एवं सञ्चालनका लागि स्वीकृत लागत अनुमान वमोजिमको कार्यहरू सम्पन्न गरी कार्यक्रम कार्यान्वयनका लागि विनियोजन भएको बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

४२. मेशिनरी औजार/सामान (ल्यापटप/कम्प्युटर/प्रिन्टर/स्क्यानर/ड्रोन/डिजिटल क्यामेरा/प्रोजेक्टर/सोलार/इन्भर्टर ब्याट्री आदि)/वन सर्वेक्षण मापनसंग सम्बन्धित उपकरण (जि.पि.एस. मेजरिड टेप लगायत)/वन डढेलो नियन्त्रण उपकरण/कार्यालयको लागि फर्निचर फिक्चर्स खरिद: (१) कार्यालयको संस्थागत सुदृढिकरणसंगै नागरिक सेवा सहितको कामकाजलाई छिटो छरितो एवं चुस्त दुरुस्त बनाइ समयसापेक्ष प्रविधिमैत्री गराउदै लैजाने उद्देश्यले यस्ता कार्यक्रमहरू राखिएका हुन्।

(२) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट स्वीकृत कार्यक्रममा उल्लेख भए वमोजिमको सामग्रीहरू खरिद, ढुवानी र सोको रकम भुक्तानीमा खर्च गरिनेछ। मेशिनरी औजार, वन सर्वेक्षण मापनसंग सम्बन्धित उपकरण, वन डढेलो नियन्त्रण सामग्री तथा फर्निचर फिक्चर्स लगायतको सामग्रीहरू खरिद गर्दा प्रचलित सार्वजनिक खरिद ऐन नियमको अधिनमा रही गर्नु पर्नेछ।

४३. कृषि वन विकास तथा विस्तार कार्यक्रम: (१) वन क्षेत्रको उचित व्यवस्थापन अभावको कारण वन्यजन्तुको बासस्थानमा आहाराको अभाव भइ वन्यजन्तु मानव वस्ती र खेतीवाली तिर आउने गरेको हुदाँ मानव वन्यजन्तुको द्वन्द्वको सिर्जना भैरहेको छ र युवाहरूको शहरतिर बसाइसराई र विदेश पलायनका कारण निजी खेतीयोग्य जमिन बाँझोमा परिणत भएको अवस्था छ। वन्यजन्तु द्वन्द्व



२३

न्युनिकरण तथा बाँझो जमिनलाई उपयोग गर्ने उद्देश्यले वन वाली र कृषि वालीको एक साथ खेती विस्तार गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछः

- (क) अगुवा किसान, कृषि सहकारी, कृषक समूह, सामुदायिक वन उपभोक्ता समुह मार्फत यो कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ र सम्भव भए तिनको क्लस्टर अनुसार वा स्थानीय तह अनुसार अनौपचारिक समूह वा नेटवर्क (सञ्जाल) गठन गर्नु पर्नेछ।
- (ख) निजी जग्गामा कृषि वन प्रबर्द्धन गर्न भौगोलिक अनुकूलताका उपयुक्त फलफूल, डालेघाँस, जडीबुटी प्रजातिका बिरुवा तथा बहुवर्षीय रुख प्रजातिका बिरुवा रोपण गर्न सकिनेछ।
- (ग) फिल्ड कोचिड प्याकेज तालिम दिने, कृषि वन विस्तारका लागि समूह मार्फत बिरुवा उपलब्ध गराउने, बिरुवा ढुवानी र वृक्षारोपण कार्यमा सहयोग उपलब्ध गराउन सकिनेछ।
- (घ) कृषि वन सम्बन्धी असल अभ्यास भएका स्थानहरूको अवलोकन भ्रमण समेत गर्न सकिनेछ। यस कार्यक्रममा विनियोजित सम्पूर्ण रकम अवलोकन भ्रमणमा खर्च गर्न पाइने छैन।
- (ङ) यो क्रियाकलाप सम्पन्न गर्नका लागि आवश्यकतानुसार स्थानीय कृषि ज्ञान केन्द्र तथा अन्य निकायसँग पनि समन्वय गर्न सकिनेछ।
- (च) यस कार्यक्रम अन्तर्गत रोपणका लागि वितरण गरिएको बिरुवाको जात, संख्या, लागत, रोपण स्थान, सम्बन्धित कृषकको नाम, कृषक समूहको नाम, प्राविधिक सहयोग गर्ने व्यक्ति/ निकाय आदि विवरण समावेश गरी फोटो सहितको प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) उपदफा (१) मा उल्लेख भए बमोजिमका कार्यक्रमहरू मध्ये आवश्यकता र औचित्यताको आधारमा सञ्चालन गर्न र कार्यक्रमको व्यवस्थापन गर्न विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिने छ।

४४. शहरी हरित पार्क/शहरी सौन्दर्य तथा रोड साईड प्लान्टेसन कार्यक्रम: (१) शहरी क्षेत्रमा जनघनत्वमा वृद्धिको क्रम बढ्दो छ भने पर्यावरण प्रदुषित हुँदै गइरहेको छ। विग्रदो शहरी वातावरणलाई हरियाली बनाउने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्न सकिनेछः

- (क) सम्बन्धित स्थानीय तह, उपभोक्ता समूह, विद्यालय र सरोकारवालाहरूसँग छलफल गरी नगरपालिका तथा सहरोन्मुख गाउँपालिकाका सार्वजनिक खाली क्षेत्र तथा सडक किनार लगायतका स्थानहरूको पहिचान गर्ने, सर्वेक्षण, बहुवर्षीय ठूला बिरुवा खरिद, वृक्षारोपण तथा बिरुवा संरक्षणका कार्यहरू गर्न सकिनेछ।
- (ख) हरियाली प्रबर्द्धन कार्यका लागि स्थानीय तह, निजी, सामुदायिक वन, धार्मिक वन, कबुलियती वन, टोल सुधार संस्था र अन्य संघसंस्थाहरूको साझेदारी एवम्

(Handwritten signature)



२४

(Handwritten signature)

(Handwritten signature)
प्रदेश सचिव

सहलगानीमा वृक्षारोपण साथै सार्वजनिक पर्ति, अतिक्रमण हटाईएको जग्गामा वृक्षारोपण तथा संरक्षण गर्न सकिनेछ।

- (ग) सम्बन्धित उपभोक्ता समूह/सरोकारवाला निकायसंग कार्यसम्पादन गर्न सम्झौता गर्नु पर्नेछ र करार सम्झौतामा नै संरक्षणको व्यवस्था मिलाउनु पर्नेछ।
- (घ) स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रम अनुसारका क्रियाकलापहरू प्रचलित नर्स, जिल्ला दररेट, सार्वजनिक खरिद ऐन, नियम, मापदण्ड अनुसार कार्यान्वयन गर्नु पर्नेछ।
- (ङ) स्थानीय रूपमा पाईने सामग्री (काठ वा बाँस) बाट निर्मित वा फलामको Tree Guard तथा मेश जालीद्वारा बिरुवाको संरक्षण एवम् स्याहार सम्भार गर्न सकिनेछ।
- (च) कार्य सम्पन्न भएपछि होर्डिडबोर्ड राखी सम्पादित कामको फोटो, क्षेत्रफल (जि.पि.एस.कोअर्डिनेट), रोपिएका बिरुवा संख्या, प्रजाति (बिरुवाको ट्याग समेत लगाई) को नाम, कार्यसम्पन्न प्रतिवेदन लगायतका कागजातहरू तयार गर्नु पर्नेछ र अभिलेख व्यवस्थित गरी सम्बन्धित कार्यालयले राख्नु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट स्थान छनोट, बिरुवा खरिद, ढुवानी, रोपण तथा संरक्षणका कार्यहरू र सोको अनुगमन एवम् व्यवस्थापन सम्बन्धी कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

४५. मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व व्यवस्थापन तथा वन्यजन्तु उद्धार: (१) मानव र वन्यजन्तुबीच सहअस्तित्व कायम गरी वन्यजन्तु संरक्षण/व्यवस्थापन गर्नको लागि आवश्यक पर्ने विभिन्न किसिमका क्रियाकलापहरू सञ्चालन गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछ:

- (क) वन्यजन्तुहरूको उद्धार, पुनर्स्थापना, आहारको व्यवस्था, मानव वन्यजन्तु द्वन्द्वको अवस्था सर्वेक्षण एवम् विश्लेषण, प्रचारप्रसार कार्यक्रमहरू (जनचेतनामूलक कार्यक्रम, रेडियो तथा पत्रपत्रिकामा सन्देशमूलक सूचना प्रसारण, बुकलेट, पुस्तिका प्रकाशन तथा वितरण),
- (ख) जिल्ला वन्यजन्तु अपराध नियन्त्रण ईकाई (DWCCB), समुदायमा आधारित चोरी शिकारी नियन्त्रण इकाई (CBAPU) तथा द्रुत टोली परिचालन (RRT) बैठक तथा गोष्ठी सञ्चालन, सिकार प्रतिरोध अपरेशन सञ्चालन।
- (ग) वन्यजन्तुको उद्धार केज खरिद/निर्माण गर्ने तथा मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व व्यवस्थापनको क्रममा फिल्डमा टोली परिचालन।
- (घ) सम्पन्न क्रियाकलापहरूको फोटो सहितको प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) उपदफा (१) मा उल्लेख भए बमोजिमका कार्यक्रमहरू मध्ये आवश्यकता र औचित्यताको आधारमा सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(४) कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट उपदफा (२) को खण्ड (क), (ख) र (ग) बमोजिमका क्रियाकलापहरू सञ्चालन र खाजा, इन्धन लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।



२५

प्रदेश सचिव

४६. मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व न्यूनीकरण (तारबार/मेश जाली/पर्खाल निर्माण तथा वन क्षेत्र Compound)/ मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व न्यूनीकरणका लागि पि.सि.सि. सहितको मेसजाली: (१) यस कार्यक्रमको उद्देश्य वन्यजन्तुबाट आवादी र वस्ती क्षेत्रमा हुने अन्नबाली र अन्य क्षति न्यूनीकरण गरी मानव र वन्यजन्तु बीच सहअस्तित्व कायम गर्नु रहेको छ।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछः

(क) वन्यजन्तुबाट मानव वस्ती तथा खेतीपाती संरक्षणको लागि PCC/RCC पर्खाल निर्माण, तारबार, मेश जाली बारबन्देज लगायतका कार्यहरू आवश्यकता र औचित्यताको आधारमा सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(ख) डिभिजन वन कार्यालय र सम्बन्धित समूह/समिति मार्फत सम्झौता गरी यो कार्यक्रम सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(ग) सम्पन्न क्रियाकलापहरूको फोटो सहितको प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट स्वीकृत लागत अनुमान बमोजिमका कार्यहरू सम्पन्न गर्न र सोको अनुगमन तथा निरीक्षण लगायतका व्यवस्थापन सम्बन्धी कार्यहरूमा खर्च गर्न सकिनेछ।

४७. सामुदायिक वनहरूको अनुगमन तथा प्रतिवेदन तयारी/सामुदायिक वनहरूको अनुगमन तथा वार्षिक प्रतिवेदन/सामुदायिक वनको अनुगमन, मूल्यांकन, तथ्याङ्क संकलन तथा विश्लेषण/कवुलियती वनको अनुगमन तथा मूल्यांकन प्रतिवेदन तयारी: (१) सम्बन्धित वन समूहहरूले स्वीकृत विधान र वन कार्ययोजना बमोजिम बर्षभरी गरेका क्रियाकलापहरूको जानकारी विवरण सहित समस्याहरूको पहिचान र अभिलेखिकरण गर्ने, सवल र दुर्बल पक्षहरूको विश्लेषण गर्ने, सुझाउने र वन कार्यालय र वन समूहहरू बीच सहज सम्पर्कको वातावरण सिर्जना गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछः

(क) अनुगमन फाराम तयार गर्ने।

(ख) अनुगमन फाराम भर्ने तरिकाको बारेमा स्टाफ बैठकमा अभिमुखिकरण गर्ने।

(ग) सम्बन्धित समूहको कार्यालयमा गई तोकिएको कर्मचारीले उपभोक्ता समूहका पदाधिकारीसंग फाराममा भएका सूचना विवरणहरू (समूह घरधुरी सम्बन्धी विवरण, कोष परिचालन, वन पैदावार सङ्कलन र विक्री वितरण आदि तथ्याङ्कहरू) भर्ने।

(घ) अनुगमन फाराम तीन प्रति तयार गरी समूह, सबडिभिजन वन कार्यालय र डिभिजन वन कार्यालयमा ए एक प्रति बुझाउने।

(ङ) फाराममा पेस भएको तथ्याङ्क एवम् सूचना तोकिएको कर्मचारीले कम्प्युटर प्रविष्टी गरी विश्लेषण समेत गरी र डिभिजन वन कार्यालयमा बुझाउने।

(च) प्राप्त विश्लेषण सहितको विवरणको सार सूचना सूचना विश्लेषण, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रतिवेदन/पुस्तिका छपाइ र वितरण गर्ने।



२६

प्रदेश सचिव

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट अनुगमन तथा निरीक्षण फाराम छपाइ, फाराम बारे कर्मचारी अभिमुखिकरण खाजा, विवरण सङ्कलनको लागि अनुगमन कार्यमा खटिने कर्मचारीको लागि स्टेशनरी, खाजा र यातायात भाडा समेतका कार्यहरूमा खर्च गर्न सकिनेछ।

४८. उत्कृष्ट सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह/कवुलियति वन उपभोक्ता समूह पुरस्कार: (१) यस कार्यक्रमको उद्देश्य समूहको विधान र कार्ययोजना बमोजिम तोकिएको कार्यहरू गर्न उत्प्रेरित तथा अभिप्रेरित गरी निरन्तर वनको संरक्षण, संवर्धन, विकास र उपयोगमा लाग्न प्रेरित गर्नु हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछ:

(क) वन समूहको अनुगमनको आधारमा जिल्लामा रहेका सामुदायिक/कवुलियती वनहरूको मूल्याङ्कनका लागि वन निर्देशनालयको अधिकृत प्रतिनिधि समेत रहेको तीन सदस्यीय मूल्याङ्कन समिति गठन गर्नु पर्नेछ। मूल्याङ्कन समितिमा बढीमा दुई जना सरोकारवाला प्रतिनिधिहरूलाई आमन्त्रण गर्न सकिनेछ।

(ख) मूल्याङ्कन समितिले समूहहरूको मूल्याङ्कनका आधारहरू (सूचकहरू) तयार गरी तुलनात्मक मूल्यांकन र स्तरिकरण गर्न सक्नेछ।

(ग) समितिबाट मूल्याङ्कन भइ पेस भएको बढीमा चार गोटा (पहिलो, दोस्रो, तेस्रो र सान्त्वना) उत्कृष्ट समूहहरूलाई नगद पुरस्कार र प्रमाण पत्र प्रदान गर्न सकिनेछ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट कार्यक्रम सञ्चालन गर्दा खाजा, मूल्याङ्कन समितिको बैठक भत्ता, उत्कृष्ट समूहलाई पुरस्कार र प्रमाणपत्र छपाइ लगायतका कार्यहरूमा खर्च गर्न सकिनेछ।

४९. वार्षिक प्रगति पुस्तिका प्रकाशन तथा वितरण: (१) जिल्लाको समग्र वन क्षेत्रको व्यवस्थापनको वस्तुगत अवस्था र तथ्याङ्क विवरणहरूलाई अद्यावधिक तथा कार्यालयबाट बर्षभरी सम्पादन गरिएका वार्षिक कार्यहरूको प्रगति विवरणलाई अभिलेखिकरण गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनको क्रममा देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू गर्न सकिनेछ:

(क) जिल्लाको वन क्षेत्रको समग्र तथ्याङ्क विवरणहरू, वन संरक्षण र विकासका लागि व्यवस्था गरिएको मौजुदा सरकारी संरचना र जनशक्ति परिचालनको अवस्था, कार्यालयहरूबाट बर्षभरि सम्पादन गरेका स्वीकृत वार्षिक कार्यक्रमहरूको प्रगति विवरण, कार्यक्रम सञ्चालनमा देखापरेका समस्याहरू र समाधानको लागि अवलम्बन गरिएका प्रयासहरू, वन संरक्षण र व्यवस्थापन सम्बन्धी वर्तमान सवालहरू, वन अतिक्रमण, वन क्षेत्रको जग्गा अन्य प्रयोजनमा उपयोग, वन क्षेत्रबाट प्राप्त सरकारी राजस्व/आम्दानी र कार्यालयले सम्पादन गरिरहेको कानुन कार्यान्वयन तथा नियमन सम्बन्धी कार्यहरूको एकीकृत विवरण सङ्कलन र दस्तावेजीकरण,

(ख) वार्षिक प्रगति पुस्तिका प्रकाशन,

(ग) प्रकाशित सामग्रीको डिजिटल कपी कार्यालयको वेबसाईटमा अनिवार्य रूपमा प्रविष्ट गर्नु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट तथ्यांक संकलन, विश्लेषण, मसलन्द, प्रगति पुस्तिका छपाइ आदि कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

२७



२७

२७

प्रदेश सचिव

५०. पर्यापर्यटन/वनस्पती/हरियाली/हरित पार्क/हरित बाल उद्यान/नक्षत्र बाटिका/पिकनिक स्पट निर्माण/मर्मत/स्तरोन्नति: (१) स्थानीय क्षेत्रमा पर्यापर्यटनको प्रबर्द्धन गर्न, वस्ती क्षेत्र भित्र वा नजिक रहेको वन क्षेत्र वा सार्वजनिक खाली पर्ती जग्गाको उचित उपयोग गरी हरियाली प्रबर्द्धन र पर्यावरणीय सुन्दरताको विकास गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्न सकिनेछ:

- (क) पर्यापर्यटन पार्क, हरित पार्क, उद्यान, धार्मिक बाटिका निर्माण गर्दा कार्यालय र सम्बन्धित विषयगत प्राविधिकबाट स्थलगत अवलोकन गरी डिजाइन र लागत अनुमान तयार गरी प्रचलित सार्वजनिक खरिद ऐन नियमको अधीनमा रही उपभोक्ता समूह वा निर्माण व्यवसायीबाट काम गराउन सकिनेछ।
- (ख) हरित उद्यान (Green Park) को अवधारणालाई आत्मसात गरी सौन्दर्यीकरण कार्य (फलफूल बगैँचा, हरित सौन्दर्य प्रदायक रुख बिरुवा रोपण, बिरुवाको नामाकरण, गोडमेल, रेखदेख आदि), सूचना होर्डिङ्गबोर्ड, वनस्पति ट्याग, पद चिन्ह आदि तयार गर्न सकिनेछ।
- (ग) पार्क वा उद्यानभित्र प्रकृतिमैत्री मनोरञ्जनात्मक क्रियाकलाप पनि समावेश गर्न सकिनेछ।
- (घ) तोकिएको स्थानमा नै कार्यक्रम कार्यान्वयनको लागि स्थानीय तह र सरोकारवाला बीच समन्वय गरी सहलगानीमा कार्य सञ्चालन गर्न सकिनेछ।
- (ङ) डिजाइन अनुसारको भौतिक संरचना निर्माण (पार्क उद्यानभित्र पदमार्ग, विश्राम स्थल, खानेपानी, अवलोकन स्थल, पहुँच मार्ग लगायतका भौतिक संरचना निर्माण र विद्यालयमा विद्यार्थीले खेल्ने संरचना समेतका लागि कुल बजेटको बढीमा ८०% रकम खर्च गर्ने)
- (च) बाँदर लगायतका वन्यजन्तुहरूले मनपराउने वनजन्य फलफूल प्रजातिको रोपण संरक्षण र व्यवस्थापन गर्न सकिनेछ।
- (छ) नक्षत्र बाटिका स्थापनाका लागि २७ नक्षत्र अनुसारको २७ प्रजातिका बिरुवा नक्षत्र बाटिकामा रोपण गर्नुपर्ने छ। बाटिकामा अमला, शमी, जामुन, आँक, बाँस, मौलाश्री, रिठ्ठा, पलाँस, डुम्री, सिसौ, पिपल, नागकेशरी, बर, बेल, अर्जुन, कंकेरो, सिमल, राजबृक्ष, कटहर, कदम, आँप, नीम, केरा, महुवा, खयर, लहरेपिपल र वेतका बिरुवा रोप्नु पर्नेछ।
- (ज) पाँच लाख रुपैयाँ वा सो भन्दा बढी रकमको पार्क/उद्यान निर्माण गर्दा अनिवार्य रुपमा आयोजनाको विवरण सहितको फलामे होर्डिङ्गबोर्ड राख्नु पर्नेछ।
- (झ) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको प्रतिवेदन तयार गरी डिभिजन वन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट स्वीकृत डिजाइन र लागत अनुमान बमोजिमका कार्यहरू सम्पन्न गर्न र सोको अनुगमन एवम् निरीक्षण लगायतका व्यवस्थापन सम्बन्धी कार्यहरूमा खर्च गर्न सकिनेछ।

१.१



२८

१.१

१.१

प्रदेश सचिव

५१. विभिन्न मेला, महोत्सव, कार्यक्रमका लागि सहायता/अनुदान: (१) सुनाखरीको राजधानीको रूपमा परिचित पञ्चासे क्षेत्रमा पर्व विशेषका रूपमा सञ्चालन हुने धार्मिक एवम् साँस्कृतिक मेला महोत्सवमा सहयोग गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्न सकिनेछः

(क) समूह/परिषद्का पदाधिकारीहरूको समन्वयमा बैठक बसी धार्मिक, साँस्कृतिक कार्यको प्रबर्द्धन योजना बनाउने।

(ख) स्थानीय चाडपर्वहरूमा सरसफाइ, प्रचारप्रसार र सम्पदाहरूको संरक्षण गर्ने कार्य।

(ग) धार्मिक तथा साँस्कृतिक कार्यहरूमा कर्मचारी एवम् स्वयंसेवक परिचालन गर्ने।

(३) उपदफा (१) मा उल्लेख भए बमोजिमका कार्यहरू गर्न गराउन यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ। बजेट भुक्तानीको लागि खर्च पुष्टी हुने फोटो सहितको कागजात समावेश गरी प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

५२. ढलापडा, बेवारिसे तथा बरामदी काठ संकलन: (१) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछः

(क) ढलापडा, बेवारिसे तथा बरामदी काठ कानूनी प्रक्रिया पुरा गरी फेला परेको स्थानको जि.पि.एस. लोकेशन, प्रजातिको नाम र नाप साइज समेतको लगत विवरण तयार गर्नु पर्नेछ। सार्वजनिक आवत जावतमा अवरोध हुने गरी ढलेका रुखहरूको हकमा डिभिजन वन कार्यालयको कार्य क्षेत्रभित्रको हकमा डिभिजन वन कार्यालयले र सो भन्दा बाहिरको क्षेत्रको हकमा सम्बन्धित निकायसँग समन्वय गरी प्रचलित वन ऐन नियमावलीमा व्यवस्था भए बमोजिम तत्काल हटाउन सकिनेछ।

(ख) ढलापडा रुखको आवश्यकता अनुसार टुनटुक्रा समेत गर्न सकिनेछ।

(ग) लगत बमोजिमका काठको सङ्कलन र ढुवानी गरी सुरक्षित घाटगद्दी गर्नु पर्नेछ।

(घ) वन मुद्दा अन्तर्गतका बरामद गरिएका काठको हकमा छुट्टै तेरिज बनाइ जिम्मा जमानी दिनु पर्नेछ।

(ङ) ढलापडा, बेवारिसे तथा बरामदी काठको लगत विवरण संलग्न राखी फोटो सहितको प्रतिवेदन डिभिजन वन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(२) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट कर्मचारी परिचालन, काठ दाउरा कटान, मुछान, ढुवानी र घाटगद्दी, खाजा, सञ्चार, स्टेशनरी, अनुगमन तथा निरीक्षण आदि कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

५३. वन व्यवस्थापन गरी काठ दाउरा उत्पादन/उत्पादनमुखी वन व्यवस्थापन (वन व्यवस्थापन गरी काठ दाउरा उत्पादन): (१) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहायका क्रियाकलापहरू समेट्न सकिनेछः

(क) वन व्यवस्थापनको आवश्यकता र औचित्यको आधारमा समूह छनोटका लागि कम्तीमा पन्ध्र दिने सूचना जारी गरी वन व्यवस्थापनको कार्ययोजना र अपेक्षित उपलब्धीहरू सहितको विवरण समूहले डिभिजन वन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।



२९

प्रदेश सचिव

- (ख) यस कार्यक्रममा प्राविधिक सहयोग सम्बन्धित सबडिभिजन वन कार्यालयबाट उपलब्ध गराउनु पर्नेछ।
- (ग) यस कार्यक्रम कार्यान्वयनको लागि सामुदायिक वन उपभोक्ता समुहसँगको सहकार्यमा सञ्चालन गरिनेछ।
- (घ) स्वीकृत वन कार्ययोजनाको वार्षिक स्वीकार्य कटानको परिधिभित्र रही कार्य सञ्चालन गर्ने।

(२) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट काठ दाउरा कटान, मुछान, ढुवानी र घाटगद्दी, वन व्यवस्थापन सम्बन्धी आधुनिक औजारहरू खरिद, खाजा, सञ्चार, स्टेशनरी, अनुगमन तथा निरीक्षण आदि कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

५४. विकास र वातावरण बीच समन्वय गर्न स्थानीय तहसँग समन्वय गोष्ठी: (१) दीगो विकासको लागि वातावरण र भौतिक पूर्वाधार विकास बीच सन्तुलन आवश्यक छ। यस कार्यक्रमको उद्देश्य भौतिक पूर्वाधार विकास गर्दा वातावरणमा पर्ने प्रभावलाई न्यूनीकरण गर्ने सम्बन्धमा प्रचलित वन ऐन नियम, वातावरण संरक्षण ऐन नियम, फोहोरमैला व्यवस्थापन ऐन नियम र स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन नियममा व्यवस्था भएका प्रावधानहरू बारेमा सरोकारवाला निकायलाई सुसूचित गराई बुझाईमा एकरूपता कायम गर्ने र वातावरणमैत्री पूर्वाधार विकास सञ्चालन गरी वन संरक्षण र विकास गर्ने रहेकोछ।

(२) यस कार्यक्रम सञ्चालन गर्दा स्थानीय तहका निर्वाचित पदाधिकारी र कर्मचारीहरू सहभागी गरी गर्नु पर्नेछ।

(३) जिल्लास्तरमा कार्यक्रम गर्नु परेमा जिल्ला समन्वय समितिसंग समन्वय गरी स्थानीय तहका प्रमुख/अध्यक्ष, उपप्रमुख/उपाध्यक्ष, कार्यकारी प्रमुख, वातावरण शाखा प्रमुख समेत आमन्त्रण गरी गर्न सकिनेछ।

(४) यस कार्यक्रमको लागि स्वीकृत रकम गोष्ठीका सहभागी भत्ता, सेसन/ सहजिकरण शुल्क, समन्वय बैठक भत्ता, खाजा, हल भाडा, सञ्चार, स्टेशनरी आदिमा खर्च गर्न सकिनेछ।

५५. भूसंवेदनशील क्षेत्रमा समुदाय मार्फत अम्रिसो/बाँस लगायतका प्रजाति रोपण कार्यक्रम: (१) यस कार्यक्रम अन्तर्गत विभिन्न गल्छी उपचार, पहिरो उपचार, सडक पाखो संरक्षण, र क्षतिग्रस्त भूमि पुनर्उत्थान गर्नका लागि उपभोक्तामार्फत अम्रिसो/बाँस लगायतका बिरुवा तथा राइजोम उत्पादन, खरिद र रोपण गरी संरक्षण कार्यलाई प्रभावकारी बनाउन सकिनेछ।

(२) यस कार्यक्रम कार्यालयको मौजुदा जनशक्ति परिचालन गरी देहायका प्रक्रिया पूरा गरी गर्नु पर्नेछ:

- (क) स्थायी प्रकृतिका समूह/समिति जस्तै: सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह/समिति, टोल सुधार समिति वा यस्तै प्रकृतिका सरकारी निकायमा दर्ता भएका समुदायमा आधारित संस्था मार्फत कार्य सन्चालन गर्नु पर्नेछ। स्थायी प्रकृतिका समूह नभएको अवस्थामा नयाँ समूह गठन गरी कार्य सञ्चालन गर्न सकिनेछ। तर सहभागिताको सुनिश्चितता

[Handwritten signature]



३०

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]
प्रदेश सचिव

नभएको स्थानहरूमा सार्वजनिक खरिद ऐन तथा नियमावलीको प्रक्रिया अपनाई ठेक्काबाट पनि कार्य सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

- (ख) कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात मर्मत संभार र रेखदेख गर्न जनसहभागिता सुनिश्चित गराउनु पर्नेछ।
- (ग) स्थानीय तहसँगको समन्वयमा योजना सन्चालन गर्न सकिनेछ।
- (घ) यस कार्यक्रम कम खर्चिलो प्रविधि अपनाई स्थानीय रूपमा उपलब्ध हुने बाँस/काठको प्रयोग गरी बारबन्देज, घेरबार गर्न सकिनेछ।
- (ङ) छनोट भएको स्थानको हालको र संरक्षण पश्चातको फोटो, नक्सा, सम्पन्न क्रियाकलापको विवरण सहित प्रतिवेदन तयार गरी कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेटबाट स्वीकृत डिजाइन लागत अनुमान बमोजिम बाँस/अमिसोको राइजोम उत्पादन/खरिद, ढुवानी, रोपण र संरक्षणको कार्य सम्पन्न गर्न, अनुगमन तथा निरीक्षण कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

५६. जोखिमयुक्त रुखको व्यवस्थापन: (१) जोखिम अवस्थामा रहेका रुखहरू तत्काल नहटाएमा सर्वसाधारणको धनजनमा क्षति पुग्न सक्ने खतरा रहको अवस्थाका रुखहरूको व्यवस्थापन गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्नु पर्नेछ:

- (क) सम्बन्धित स्थानीय तहको सिफारिस साथ व्यक्ति विशेषको निवेदन वा समुदाय/संस्थाको पत्र प्राप्त भएपछि त्यस्ता जोखिमयुक्त रुखहरूको निरीक्षण एवम् छानविन गरी जि.पि.एस. लोकेशन र फोटो सहितको लगत विवरण पेस गर्न डिभिजन वन कार्यालयले वन प्राविधिक खटाउने।
- (ख) वन नियमावली, २०७९ को नियम २६ मा भएको व्यवस्था बमोजिमको समितिको निर्णयको आधारमा लगत बमोजिमको रुखको कटान, मुछान र सुरक्षित घाटगद्दी एवम् सङ्कलन गर्न डिभिजन वन अधिकृतले त्यस्तो जोखिमयुक्त रुखहरू हटाउन अनुमति दिने र उत्पादन हुने काठ दाउराको समयमा नै व्यवस्थापन गर्ने।

(३) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट जोखिमयुक्त रुखको स्थलगत निरीक्षण एवम् छानविन, रुख कटान, मुछान तथा काठ दाउरा सङ्कलन एवम् ढुवानी र घाटगद्दी गर्ने), समितिको बैठक व्यवस्थापन, खाजा, इन्धन, अनुगमन तथा निरीक्षण आदि कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

५७. जटायु संरक्षण तथा पर्यापर्यटन विस्तार: (१) नवलपरासी (ब.सु.पू.) जिल्लाको कावासोती नगरपालिका वडा नं. १३ नमूना मध्यवर्ति सामुदायिक वन क्षेत्रमा व्यवस्थापन भई आएको गिद्ध प्रजातिको संरक्षण र स्थानीय पर्यापर्यटन विकासमा टेवा पुऱ्याउने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्न सकिनेछ:

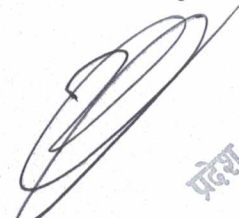
- (क) डिभिजन वन कार्यालयले समितिसँग प्रस्ताव माग गरी मूल्याङ्कनको आधारमा सम्झौता गरी कामको प्रगतिको आधारमा बढीमा तिन किस्तामा भुक्तानी दिन सकिनेछ।





३१





प्रदेश सचिव

- (ख) विगत देखि उल्लेखित क्षेत्रमा जटायु संरक्षण तथा पर्यापर्यटन विस्तार सम्बन्धी गर्दै आएका कार्यहरूलाई प्राथमिकता दिनु पर्नेछ। जटायु (गिद्ध) संरक्षणका लागि वासस्थान क्षेत्रको झाडी सरसफाइ, तारवार सहितको कम्पाउण्ड निर्माण, भूइघाँस तथा डालेघाँस रोपण, जटायुको वासस्थान प्रवर्द्धनका लागि उपयोगी रुख प्रजातिहरू रोपण, गिद्धको आहारा/सिनो व्यवस्थापन कार्यहरू (घरपालुवा जनावर खरिद/मेरेका सिनो, डुवानी, सुरक्षा), टुहुरा र घाइते जटायु तथा जटायुका बच्चाहरूको उद्धार एवम् व्यवस्थापन, गिद्धको वातावरण मैत्री केज निर्माण एवम् स्तरोन्नति, पशु चौपाया राख्ने कान्जीहाउस/ईन्क्लोजर निर्माण/स्तरोन्नति, पर्यापर्यटन विस्तारका लागि नेचर गाईड तालिम, प्रचारप्रसार, मचान निर्माण आदि कार्यहरू सञ्चालन गर्न सकिनेछ।
- (ग) डिभिजन वन कार्यालयले उक्त कार्यक्रमहरूको अनुगमन तथा निरीक्षण गर्नु पर्नेछ।
- (घ) कार्य सम्पन्न भएपछि सम्बन्धित संस्थाले फोटो सहितको प्रतिवेदन तयार गरी डिभिजन वन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

५८. वन्यजन्तुबाट भएको क्षतिको राहत सम्बन्धी जाँचबुझ तथा प्रतिवेदन तयारी: (१) वन्यजन्तुबाट क्षति पुगेको मानव, पशुधन, अन्नपात र खेतीवालीमा वन्यजन्तुबाट पुगेको क्षतिको स्थलगत जाँचबुझ गरी प्रतिवेदन तयार गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको लागि विनियोजित बजेट वन्यजन्तुबाट पुगेको क्षतिको अवस्था जाँचबुझका लागि कर्मचारी परिचालन, खाजा, सञ्चार, यातायात लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

५९. वन्यजन्तुबाट हुने क्षतिको राहत सहयोग/वितरण: यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट "वन्यजन्तुबाट भएको क्षतिको राहत वितरण निर्देशिका, २०८०" बमोजिम वितरण गर्नु पर्नेछ।

६०. वर पिपल शमी रोपण चौतारा निर्माण, मर्मत तथा सौन्दर्यीकरण/चौतारो संरक्षण: (१) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्न सकिनेछ:

- (क) चौतारा निर्माण, मर्मत, संरक्षण तथा व्यवस्थापन कार्य गर्न,
- (ख) चौतारामा सकेसम्म जैविक प्रविधि र स्थानीय सामग्रीको प्रयोग गरी मर्मत र स्तरोन्नति तथा सौन्दर्यीकरण गर्ने,
- (ग) चौतारामा वर, पिपल, शमीको बिरुवा रोपणको लागि खरिद र रोपण समेत,
- (घ) यस कार्यक्रम कार्यान्वयनमा यथासम्भव स्थानीय समुदायलाई सहभागी गराउन सकिनेछ।

(२) कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि कागजात र फोटो सहितको प्रतिवेदन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट स्वीकृत लागत अनुमान बमोजिम कार्य सम्पन्न गर्न, अनुगमन गर्न र अन्य व्यवस्थापन सम्बन्धी कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

६१. पचभैया वन्यजन्तु उद्धार केन्द्र व्यवस्थापन खर्च: (१) प्रदेशको वन क्षेत्रभित्र र बाहिर पाइने टुहुरा, अशक्त, घाइते, अङ्गभङ्ग र समस्याग्रस्त वन्यजन्तुहरूको समयमै उद्धार र व्यवस्थापन गरी मानव वन्यजन्तु बिच सहअस्तित्व कायम गर्नु यस कार्यक्रमको उद्देश्य रहेको छ।





३२





प्रदेश सचिव

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्न सकिनेछः

(क) यस कार्यक्रम अन्तर्गत गर्नु पर्ने वन्यजन्तुको उद्धार तथा प्राकृतिक अवस्थामा पुनःस्थापना, ओसारपसार, उद्धार केन्द्रका कर्मचारीहरूको परिचालन, कर्मचारीहरूको चाडबाड खर्च, पोसाक, केयर टेकर लगायतका कर्मचारीको बीमा, भेटेरिनरी सेवा प्रदायकको व्यवस्था, बैठक सञ्चालन, सवारी साधन मर्मत, इन्धन, वन्यजन्तुहरूको आहारा, औषधीउपचार, पानी, विजुली, इन्टरनेट, कार्यालय सञ्चालन आदि कार्यहरूको लागि रकम बाँडफाइ गरी लागत अनुमान तयारी र क्रियाकलाप सञ्चालन गर्नु पर्नेछ।

(ख) यस कार्यक्रमबाट सम्पादित समग्र कार्यहरूको फोटो सहितको प्रतिवेदन तयार गरी कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट उपदफा (२) खण्ड (क) बमोजिमको कार्यहरू सञ्चालन गर्न र अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यहरूमा खर्च गर्न सकिनेछ।

६२. पचभैया प्राणी उद्यान विकास तथा वन्यजन्तु उद्धार केन्द्रमा पूर्वाधार निर्माण: (१) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्न सकिनेछः

(क) पचभैया प्राणी उद्यान तथा वन्यजन्तु उद्धार केन्द्र व्यवस्थापन समिति/प्राविधिक परामर्श समितिको समन्वयमा DPR र कार्ययोजनामा उल्लेख भएका पूर्वाधार सम्बन्ध कार्यक्रमहरू निर्माण र भएका संरचना सुदृढीकरणका कार्यहरू मध्ये यस कार्यक्रम बजेटबाट गर्न सकिने क्रियाकलापहरूको सूचीकृत गर्नु पर्नेछ।

(ख) पूर्वाधार निर्माण गर्ने संरचनाहरूको डिजाइन, लागत अनुमान स्वीकृत गरी प्रचलित कानून बमोजिम निर्माण गर्न सकिनेछ। स्थानीय उपभोक्ता समूहबाट कार्य सम्पादन हुन नसक्ने भएमा ठेक्काबाट पनि गराउन सकिनेछ।

(ग) स्वीकृत लागत अनुमान बमोजिमको पूर्वाधारका कार्यहरू सम्पन्न भएपछि नापी किताब, फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन, ठेक्का बिल तथा भरपाईहरू लगायतको कागजात कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(२) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट स्वीकृत लागत अनुमान बमोजिमको पूर्वाधारका कार्यहरू सम्पन्न गर्न र उक्त कार्यहरूको अनुगमन तथा निरीक्षणमा खर्च गर्न सकिनेछ।

६३. वन तथा वन्यजन्तु सम्बन्धी मुद्दा अनुसन्धान, तहकिकात र दायरी: (१) वन र वन्यजन्तु अपराध सम्बन्धी मुद्दाको छानविन, अनुसन्धान, तहकिकात तथा अभियोजन कार्य पूरा गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) मुद्दा सम्बन्धी कार्य सम्पन्न भएपछि कागजात विवरण सहितको प्रतिवेदन पेस गर्नु गर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रमको बजेट रकम वन र वन्यजन्तु अपराध सम्बन्धी मुद्दाको छानविन, अनुसन्धान, तहकिकात तथा अभियोजन कार्यमा कर्मचारी परिचालन गर्न, इन्धन, खाजा, सञ्चार, स्टेशनरी, यातायात, बकपत्र गर्न आउने साक्षीहरूको भ्रमण खर्च र बरामदी र दसीका मालबस्तुको ढुवानी र सुरक्षा व्यवस्थापन आदिमा खर्च गर्न सकिनेछ।





३३





प्रदेश सचिव

६४. टिम बिल्डिङ्ग गोष्ठी: (१) मन्त्रालय र मातहतका निकायका वर्तमान सवाल उपर छलफल गरी सुझाउन, अन्तर कार्यालय बीच समन्वय/सहकार्यलाई प्रभावकारी बनाउन र प्रदान गरिने सेवा प्रवाहलाई चुस्त, दुरुस्त तथा प्रविधि मैत्री बनाउन यस गोष्ठीको व्यवस्था गरिएको हो।

(२) डिभिजन वन कार्यालय कास्कीले वन र वन्यजन्तुका सवालमा मन्त्रालय, निर्देशनालय र कार्यालयका प्रतिनिधिलाई सहभागी गराइ गोष्ठी सञ्चालन गर्नु पर्नेछ।

(३) यस गोष्ठीमा सम्बन्धित विषय विज्ञलाई स्रोत व्यक्ति बनाउन सकिनेछ।

(४) कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात सहभागीहरूको उपस्थिति विवरण, विल भरपाई, फोटो सहितको प्रतिवेदन तयार गरी कार्यालयमा पेस गर्नुपर्ने छ।

(५) गोष्ठी सञ्चालन गर्दा खाजा, स्टेशनरी, प्रशिक्षक सहजिकरण भत्ता, हल भाडा, सहभागी भ्रमण खर्च, मसलन्द र विविध शीर्षकमा रकम खर्च गर्न सकिनेछ।

६५. डिभिजन वन कार्यालयहरूमा जडीबुटी तथा वन पैदावारको पहिचानको लागि स्याम्पल (Sample) तयारी तथा डेमोस्ट्रेसन/डिस्प्ले (Demonstration/Display): (१) जिल्लामा पाइने महत्वपूर्ण जडीबुटीको उपयोगी भाग (जरा/गानो, फल/बिज, पात/डाँठ, बोक्रा) र विभिन्न प्रजातिको काठको नमूना टुक्राको संकलन गरी पारदर्शी सिसा/प्लाष्टिकको भाँडोमा राखी बाहिरपट्टी नामकरण (बैज्ञानिक नाम, नेपाली नाम र अंग्रेजी नाम, परिवार), उपयोग/महत्व उल्लेख गरी टाँसी कार्यालयभित्र सबैले देखे ठाउँमा दराजमा प्रदर्शन गर्ने प्रयोजनका लागि यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको प्रतिवेदन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) यसमा विनियोजन भएको रकम फर्निचर, जडीबुटी नमूना संकलन खर्च, **Reservative** खरिद आदि कार्यमा खर्च गर्न सकिने छ।

६६. पुरानो काठ/दाउराको पुन नापजाँच गरी रेकर्ड अद्यावधिक गर्ने कार्य: (१) सरकारद्वारा व्यवस्थित वन, चक्ला वन, सार्वजनिक जग्गा, वन मुद्दाको क्रममा बरामदी, बेवारिसी, दहत्तर बहत्तरबाट सङ्कलित सम्पूर्ण काठ/दाउरा वन नियमावली, २०७९ र गण्डकी प्रदेश वन ऐन २०८० अनुसार पुन नापजाँच, नम्बरिड र ग्रेडिड गरी नापी लगत तयार तथा प्रमाणित गरी अद्यावधिक गर्न पर्नेछ।

(२) कार्य सम्पन्न भएपछि सोको फोटो सहितको प्रतिवेदन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट ज्यामी ज्याला, इन्धन, इनामेल, ब्रस खरिद, नापी लगत तयारी (टाइपिड, प्रिन्टिड, बाइण्डिड), वन पैदावार पुनर्मूल्याङ्कन समितिको बैठक भत्ता, खाजा लगायत कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

६७. आर्थिक वर्ष २०८०।८१ सम्मको सबै मौज्जात काठको जिल्लागत अभिलेख तयारी (मुद्दा, बेवारिसे, बरामदी र सबै वनबाट उत्पादित भएको): (१) गण्डकी प्रदेशको सबै डिभिजन वन कार्यालयको चालु आ.व.सम्मको मौज्जात काठ (वन मुद्दा, बेवारिसे, बरामदी र सबै वन व्यवस्थापन पद्धतिबाट उत्पादन भएको) को विवरण संकलन गरी यकिन तथ्याङ्क/लगत सहितको विस्तृत प्रतिवेदन तयार गर्नुपर्ने छ।



(२) उपदफा (१) बमोजिमको विस्तृत प्रतिवेदनमा प्रजाति अनुसारको काठ दाउरा लगत, उत्पादन भएको वर्ष, लिलाम व्यवस्थापन गर्न नसकिएको कारण र काठ दाउराको पुनर्मूल्याङ्कन गर्नु पर्ने भए उक्त परिमाण समेत खुलाउनु पर्नेछ। तयार गरिएको एक प्रति प्रतिवेदन मन्त्रालयमा पठाउनु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रम सञ्चालन गर्दा विनियोजित रकम काठ नापजाँच गर्न, दैनिक भ्रमण भत्ता, इन्धन, प्रतिवेदन तयारीका लागि छपाई तथा प्रिन्टिङ्ग लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

६८. गण्डकी प्रदेशको जिल्लागत रूपमा हालसम्म भएका मानव वन्यजन्तु द्वन्द्व, राहत वितरण तथा वन्यजन्तु उद्धारको तथ्याङ्क विश्लेषण प्रतिवेदन तयारी: (१) गण्डकी प्रदेशको जिल्लागत रूपमा आर्थिक वर्ष २०७५।७६ देखि हालसम्म भएका मानव वन्यजन्तु द्वन्द्वबाट मानवीय, पशुधन, भण्डारण गरेको अन्न, घरगोठ, खेतीबाली, माछा, कुखुरा क्षति र वन्यजन्तु उद्धार गरेको विवरण, राहत वितरणको विवरण समेतको यकिन तथ्याङ्क सहितको विस्तृत प्रतिवेदन तयार गर्नु पर्नेछ।

(२) उपदफा (१) बमोजिमको प्रतिवेदनमा वन्यजन्तुको द्वन्द्वलाई न्युनीकरण गर्नु पर्ने क्रियाकलापहरू र कार्यलयको राय समेत समावेश गर्नु पर्नेछ। तयार गरिएको एक प्रति प्रतिवेदन मन्त्रालयमा पठाउनु पर्ने छ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट दैनिक भ्रमण भत्ता, इन्धन, बैठक तथा छलफलमा खाजा, बैठक भत्ता, दस्तावेज तयारीका लागि छपाई तथा प्रिन्टिङ्ग लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

६९. गण्डकी प्रदेशमा हालसम्म अतिक्रमित भएको वन क्षेत्रको विस्तृत विवरण सहितको प्रोफाइल तयारी: (१) प्रदेशमा अतिक्रमित भएको वन क्षेत्रको जिल्लागतरूपमा तथ्याङ्क संकलन गरी दस्तावेज तयार गर्नु पर्नेछ।

(२) उपदफा (१) बमोजिमको दस्तावेज निर्देशनालयले एक प्रति मन्त्रालयमा पठाउनु पर्ने छ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट दैनिक भ्रमण भत्ता, इन्धन, बैठक तथा छलफलमा खाजा, बैठक भत्ता, दस्तावेज तयारीका लागि छपाई तथा प्रिन्टिङ्ग लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

७०. राष्ट्रिय वन क्षेत्रको जग्गा अन्य प्रयोजनमा सम्झौता अनुसार दिएको अनुगमन गरी Database तयारी: (१) प्रदेश भित्रका राष्ट्रिय वन क्षेत्रको जग्गा कुन कुन प्रयोजनका लागि उपलब्ध गराइएको छ, सो सम्बन्धमा विस्तृत तथ्याङ्क संकलन गरी दस्तावेज तयार गर्नु पर्नेछ।

(२) उपदफा (१) बमोजिमको दस्तावेज तयार गर्दा नेपाल सरकारबाट भएको निर्णय, वन तथा भूसंरक्षण विभाग (साविक वन विभाग) र सम्बन्धित आयोजना/निकायसँग भएको सम्झौतामा उल्लेखित सर्त बमोजिम, कार्यान्वयनको अवस्था आयोजनाले/निकायले सर्त पालना गरेको वा नगरेको विवरण समेतको विषयहरू समावेश गर्नु पर्नेछ।

(३) कार्य सम्पन्न भएपछि प्रतिवेदन तयार गरी एक प्रति मन्त्रालयमा पठाउनु पर्नेछ।

(४) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट दैनिक भ्रमण भत्ता, इन्धन, बैठक तथा छलफलमा खाजा, बैठक भत्ता, दस्तावेज तयारीका लागि छपाई तथा प्रिन्टिङ्ग लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

३५



३५

प्रदेश सचिव

प्रदेश सचिव

७१. बँदेल नियन्त्रण कार्यक्रम: यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका क्रियाकलाप समेट्न सकिनेछ:

- (क) बागलुङ जिल्ला ढोरपाटन न.पा. ९ का जनप्रतिनिधि र स्थानीयहरूको सहयोगमा प्राथमिकता सहितको बँदेल प्रभावित क्षेत्रको पहिचान एवम् छनोट गर्नु पर्नेछ।
- (ख) स्थानीयहरूको सहयोगमा गाउँवस्ती र खेतीवालीमा बँदेलको प्रभाव नियन्त्रण एवम् न्यूनीकरणका लागि के गर्न सकिन्छ, पहिचान गरी ती कार्यक्रमहरूको कार्यान्वयन गर्न सकिनेछ।
- (ग) यस कार्यक्रम अन्तर्गत बँदेलले आहाराको रूपमा प्रयोग गर्ने वनस्पती एवम् तरकारीहरू वन क्षेत्रमा रोपण, तारवार, मेश जाली, कन्क्रिट वाल निर्माण आदि कार्यहरू गर्न सकिनेछ।
- (घ) बँदेल नियन्त्रण सम्बन्धी कार्य गर्दा स्थानीय ज्ञान, सीप, प्रविधि र सामग्रीको प्रयोगलाई प्राथमिकता दिनु पर्नेछ। कार्यक्रम सञ्चालन गर्दा बँदेल र यसको प्राकृतिक वासस्थानलाई असर पुऱ्याउन पाइने छैन।

७२. वन पैदावार संकलन, विक्री वितरण, आपूर्ति समिति समेतको मापदण्ड: (१) वन क्षेत्रबाट उत्पादन हुने काठ दाउरा र अन्य वन पैदावारको संरक्षण, सङ्कलन, व्यवस्थापन तथा विक्री वितरण र समुदायस्तरमा काठ दाउराको आपूर्ति व्यवस्थित, पारदर्शी, सरल र छिटो छरितो गराउने उद्देश्यले मापदण्डको तयारी गर्न यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) मन्त्रालयले मापदण्डको तयारीको क्रममा आवश्यकता अनुसार विभिन्न सरोकारवालाहरूसंग समन्वय छलफल समेत गर्न सक्नेछ।

(३) मन्त्रालयले मापदण्डको तयारी गर्दा परामर्श सेवाबाट प्रचलित सार्वजनिक खरिद ऐन नियमको प्रक्रिया पूरा गरी समेत गर्न सकिनेछ।

(४) यस कार्यक्रमको लागि विनियोजित बजेट मापदण्ड तयारी, समन्वय छलफल लगायतको कार्यमा खर्च सकिनेछ।

७३. IEE/EIA प्रतिवेदनको सम्बन्धमा प्राविधिक समितिको व्यवस्थापन तथा सञ्चालन खर्च: (१) मन्त्रालयमा पेस भएका योजना/आयोजनाको वातावरणीय अध्ययन (IEE/EIA) प्रतिवेदन उपर क्षेत्रगत विज्ञ सहितको समितिको बैठक अध्ययन एवम् छलफल गरी राय सुझाव उपलब्ध गराउन यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रम अन्तर्गत देहायका क्रियाकलाप गर्न सकिनेछ:

दि



३६

म

प्रदेश सचिव

(क) मन्त्रालयमा पेस हुन आएको वातावरणीय अध्ययन प्रतिवेदन उपर राय सुझाव दिने प्रयोजनका लागि बिषयगत विज्ञ सहितको प्राविधिक समितिको बैठक गर्नु पर्नेछ।

(ख) प्राविधिक समितिबाट उपलब्ध राय सुझावहरु प्रतिवेदनमा थप/घट लागी प्रस्तावकलाई पठाउनु पर्नेछ।

(ग) प्राविधिक समितिले आवश्यकता ठानेमा स्थलगत अनुगमन समेत गर्न सक्नेछ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट सम्बन्धित प्राविधिक समितिको बैठक सञ्चालन, खाजा, बैठक भत्ता तथा स्थलगत अनुगमन आदि कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

७४. आन्तरिक पर्यटन प्रवर्द्धन (कार्यविधिका आधारमा प्रदेश सरकारका विभिन्न निकायमा कार्यरत कर्मचारीहरुलाई दिइने सुविधा): (१) प्रदेशभित्र रहेका पर्यटकीय सम्भावनाहरुलाई उजागर गर्न, राष्ट्रसेवक कर्मचारीहरुलाई उत्प्रेरित गरी जिम्मेवारी प्रति उत्साह बढाउन र आन्तरिक तथा ग्रामीण पर्यटनलाई प्रवर्द्धन गर्नका लागि मन्त्रालय र अन्तर्गतका निकायहरुमा कार्यरत कर्मचारीहरुलाई बिदा पर्यटनमा पठाउने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयन र विनियोजित बजेट खर्च गर्दा गण्डकी प्रदेश बिदा पर्यटन सम्बन्धी कार्यविधि बमोजिम गर्नु पर्नेछ।

७५. अन्तरप्रदेश सिकाई आदानप्रदान भ्रमण: (१) अन्य प्रदेशमा वन, वातावरण, जैविक विविधता तथा जलाधारका क्षेत्रमा भएका सिकाइ, अनुकरणीय कार्यक्रम कार्यान्वयन र कार्यसम्पादनका कार्यहरुको स्थलगत अवलोकन समेत गरी आदानप्रदान गर्ने यस कार्यक्रमको उद्देश्य रहेको छ।

(२) उपदफा (१) बमोजिमको कार्यक्रमका लागि अवधारणा सहितको कार्यक्रम प्रस्ताव स्वीकृत गर्नु पर्नेछ।

(३) सिकाइ आदानप्रदान भ्रमण कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि भ्रमण अवधिको विवरण र फोटो सहितको कार्यसम्पन्न प्रतिवेदन मन्त्रालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(४) उपदफा (१) बमोजिमको कार्यक्रमको लागि विनियोजित बजेटबाट सहभागी कर्मचारीको दैनिक भ्रमण भत्ता, सवारी साधन भाडा, इन्धन, मायाको चिनो, सहजकर्ताको लागि सहजीकरण शुल्क, खाजा, मसलन्द आदि शीर्षकमा खर्च गर्न सकिनेछ।

७६. Happy FM सँगको सहकार्यमा घडियाल काव्य महोत्सव नदी तटीय वासस्थान तथा घडीयाल गोही संरक्षण अभियान: (१) यस कार्यक्रम कार्यान्वयनका लागि डिभिजन वन कार्यालय नवलपुरले वन्यजन्तु संरक्षणका लागि विगत देखि विभिन्न किसिमका जनचेतनामुलक कार्यक्रम मार्फत योगदान पुर्याउँदै आएको संस्था ह्याप्पी एफ.एम. सँग कार्यक्रम सञ्चालनको खाका सहितको कार्यक्रम प्रस्ताव माग गर्नु पर्नेछ।



३७

(२) उपदफा (१) बमोजिमको पेस गरेको प्रस्ताव डिभिजन वन कार्यालयले आवश्यक परिमार्जन गरी स्वीकृत गरी सम्झौता गर्नु पर्नेछ।

(३) कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि ह्याप्पी एफ.एम.ले डिभिजन वन कार्यालयलाई फोटो सहितको प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(४) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट ह्याप्पी एफ.एम.सँगको सहकार्यमा घडियाल काव्य महोत्सव नदी तटीय वासस्थान तथा घडीयाल गोही संरक्षण अभियान कार्यक्रम सञ्चालनको क्रममा व्यवस्थापन समेतको कार्य गर्न खर्च गर्नु पर्नेछ।

७७. वन डडेलो नियन्त्रणका लागि Rapid Response टिम गठन र परिचालन: (१) डिभिजन वन कार्यालयले प्राविधिक अधिकृत कर्मचारीको संयोजकत्वमा वन प्राविधिक, सुरक्षा निकाय, जिल्ला/इलाका प्रशासन कार्यालय, नजिकका वन समूहका प्रतिनिधिहरू समेत रहने गरी वन डडेलो नियन्त्रणका लागि एक न्यापिड रिस्पोन्स टिम गठन गर्नु पर्नेछ।

(२) उपदफा (१) बमोजिम गठन भएको टिमलाई डिभिजन वन कार्यालयले सुरक्षा निकायसँगको समन्वयमा आवश्यकता अनुसारको अभिमुखीकरण तालिमको व्यवस्था गर्न सक्नेछ।

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेटबाट एक न्यापिड रिस्पोन्स टिम परिचालन गर्ने क्रममा खाजा/खाना, इन्धन लगायतका शीर्षकमा खर्च गर्न सकिनेछ।

७८. विपन्न संकटापन्न समुदाय वोटे मुसहर माझी आयआर्जन कार्यक्रम: (१) विपन्न संकटापन्न समुदायको उत्थानका लागि डिभिजन वन कार्यालय नवलपुरले सम्बन्धित समुदायसँगको समन्वयमा आयआर्जनका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्न सक्नेछ।

(२) कार्यक्रम सम्पन्न पछि फोटो सहितको प्रतिवेदन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) कार्यक्रममा विनियोजित बजेट वोटे, मुसहर र माझी समुदायमा आयआर्जन अभिवृद्धि गर्ने सामग्री खरिद र हस्तान्तरण र संरचना निर्माण लगायतका कार्यहरूमा खर्च गर्न सक्नेछ।

७९. फोकल टिम बैठक: (१) यस कार्यक्रममा संघीय वन तथा वातावरण मन्त्रालयको जडीबुटी खेती विस्तार सम्बन्धी कार्यविधि अनुसार डिभिजन वन कार्यालयबाट जिल्लास्तरीय फोकल टिम गठन गरी/भएको टिमको बैठक आवश्यकता अनुसार बस्नु पर्नेछ। फोकल टिम बैठकको माध्यमबाट पकेट क्षेत्रमा उपयुक्त जडीबुटी पहिचान भइ खेती विस्तार तथा प्रवर्द्धनमा सहयोग पुग्नेछ।

(२) कार्यक्रम सम्पन्न पछि फोटो सहितको प्रतिवेदन कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) उपदफा (१) बमोजिमको बैठक सञ्चालन तथा व्यवस्थापनमा यो कार्यक्रममा स्वीकृत रकम खर्च सकिनेछ।

८०. डिभिजन वन कार्यालयको ब्रोसर तयारी: यस कार्यक्रम अन्तर्गत डिभिजन वन कार्यालयको पृष्ठभूमी, काम, कर्तव्य र क्षेत्राधिकार, दरबन्दी, संस्थागत सम्पत्ति, सबडिभिजन वन कार्यालयको कार्यक्षेत्र, डिभिजन/सबडिभिजन वन कार्यालय रहेको स्थान, जिल्लाको वन क्षेत्रको विवरण, नागरिक वडापत्र,



३८

कार्यालय प्रमुख, सूचना अधिकारी र गुनासो सुन्ने अधिकारीको सम्पर्क नम्बर, गत आर्थिक वर्षको वार्षिक कार्यक्रमको संक्षिप्त उपलब्धि र चालु आर्थिक वर्षको कार्यक्रमहरू आदि समेटिएको रंगिन ब्रोसर तयार गर्नु पर्नेछ।

ह.क.




प्रदेश सचिव



परिच्छेद-३

भू तथा जलाधार व्यवस्थापनसँग सम्बन्धित कार्यक्रम

८१. सिंचाई कुलो संरक्षण: (१) भूगोलको हिसावले संवेदनशील अवस्थामा रहेका तथा मर्मत सम्भार गर्नु पर्ने सिंचाई कुलोहरूको आवश्यकता र औचित्यताको आधारमा संरक्षण गरी कृषि उत्पादनमा बृद्धि गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रममा देहायका क्रियाकलापहरू समेट्न सकिनेछ:

(क) यस कार्यक्रम अन्तर्गत सिंचाई कुलो पुनर्निर्माण एवम् सुधार, माथिल्लो र तल्लो भाग (Up-slope and Down-slope) को संरक्षण, इन्टेक (Intake), वितरण प्रणाली र सेडिमेन्ट ट्राप (Sediment Trap) को निर्माण तथा सुधार र कठिन भूबनोट भइ माटोको कुलो निर्माण संभव नभएको स्थानमा विभिन्न साइज/ किसिमका पाइपहरूको प्रयोग गरी पानी ल्याउने व्यवस्था मिलाउने लगायतका आवश्यक कार्यहरू गर्न सकिनेछ।

(ख) स्थानीय तहसँगको समन्वयमा जनसहभागिता परिचालन गरी गर्नु पर्नेछ।

(ग) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन तयार गरी कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) उपदफा (२) को खण्ड (क) बमोजिमको क्रियाकलापहरूको कार्यान्वयन र कार्यक्रम अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

८२. खोला/नदी/खहरे किनार संरक्षण कार्यक्रम/तटबन्ध/बाँध निर्माण कार्य: (१) खोला किनार छेउछाउमा रहेका खेती योग्य कृषिभूमि, मानव वस्ती तथा भौतिक पूर्वाधारका संरचनाहरूको संरक्षण गर्ने, डुवानबाट हुने क्षतिको न्यूनीकरण गर्ने र वन क्षेत्र संरक्षणसंगै खोला किनारमा हरियाली प्रबर्द्धन गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रम अन्तर्गत देहायका क्रियाकलापहरू समेट्न सकिनेछ:

(क) Revetments, Retaining wall, Spurs आदि संरचना निर्माण, वहावलाई व्यवस्थापन गर्न Channelization गर्ने कार्य, Bio-engineering प्रविधिबाट डुवान क्षेत्र स्थिरिकरण (Flood Plain Stabilization) गर्ने कार्य, बाँधमा घाँस/बाँस लगायतका बिरुवा लगाउने र संरक्षण गर्ने जस्ता कार्यहरू गर्न सकिनेछ।

(ख) यस कार्यक्रम गर्दा स्थानीय तहसँगको समन्वयमा जनसहभागिता परिचालन गरी गर्नुपर्नेछ।

(३) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन तयार गरी पेस गर्नु पर्नेछ।

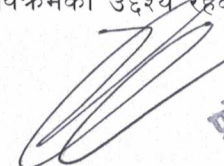
(४) उपदफा (२) को खण्ड (क) बमोजिमको क्रियाकलापहरूको कार्यान्वयन र कार्यक्रम अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

८३. किसानसँग भूसंरक्षण कार्यक्रम: (१) भू तथा जलाधार व्यवस्थापन कार्यालयले भूसंरक्षणमैत्री प्रविधि र कृषकहरूले विगत देखि गर्दै आएको खेती अभ्यासलाई समायोजन र आन्तरिकिकरण गरी अभ्यासको निरन्तरतासंगै कृषि भूमिको उत्पादकत्व बृद्धि गर्ने यस कार्यक्रमको उद्देश्य रहेको छ।





४०


प्रदेश सचिव

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयनका लागि देहाय बमोजिमका कार्यहरू गर्न सकिनेछः

(क) कन्टुर टेरेसिड (Contour Terracing), कृषि वन कार्यक्रम, कन्टुर ट्रेन्चिड (Contour Trenching) र कन्टुर बन्डिड (Contour Bunding), साना गल्ली रोकथाम (Micro-gully Plugging), कन्टुर वाटलिड (Contour Wattling), चेक ड्याम (Checkdam), रिटेनिंग वाल (Retaining Wall), सिंचाई पोखरी निर्माण आदि क्रियाकलापहरू।

(ख) फलफुल, गैरकाष्ठ, जडिबुटि र डालेघाँसका बिरुवा रोपण।

(३) सम्बन्धित जिल्लामा रहेका कृषि, भेटेरेनरी, वन लगायतका विषयगत कार्यालयहरू र स्थानीय तहसँगको समन्वयमा विशेष गरी कृषि पकेट क्षेत्रका किसानहरूको खेतबारीमा भूसंरक्षण सम्बन्धी क्रियाकलाप सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(४) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(५) उपदफा (२) को खण्ड (क) बमोजिमको क्रियाकलापहरूको कार्यान्वयन र कार्यक्रम अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

८४. आकाशे पानी संकलन भलपानी व्यवस्थापन गरी जलसिंचन अभिवृद्धि तथा पुनर्भरण कार्यक्रम/पोखरी, सिमसार र ताल संरक्षण कार्यक्रम/पानी स्रोत व्यवस्थापन तथा बहुउपयोग (ताल, रनअफ हार्भेष्टिड ड्याम निर्माण)/ संरक्षण पोखरी (Earthen Pond) निर्माण: (१) कार्यक्रमको आवश्यकता र औचित्यताको आधारमा सतहमा भइरहेका पानीका स्रोतको व्यवस्थापन गरी जमिनमुनिको पानीको पुनर्भरण गर्ने र सतहमा मौज्जात रहेका पानी स्रोतको संरक्षण र विकास मार्फत बहुउपयोगमा ल्याउने यस कार्यक्रमको उद्देश्य रहेको छ।

(२) यस कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा देहाय बमोजिमका कार्यहरू गर्न सकिनेछः

(क) पानी संकलन गर्न निर्माण गरिने जलाधार संरक्षण पोखरी (Conservation Pond/ Catchment Pond), भल तर्काउने नाला (Diversion Channels), रनअफ हार्भेष्टिड ड्याम (Run-off Harvesting Dam), Inlet/ Outlet water structure र भूमिगत जलसेचनका अन्य संरचनाहरूको निर्माण।

(ख) यस कार्यक्रमबाट ताल, पोखरी र सिमसार क्षेत्र (Wetland Conservation) मा रहेका मिचाहा प्रजाति हटाउने लगायतका संरक्षण सम्बन्धी कार्यहरू।

(ग) पानी संरक्षण पोखरी (Earthen Pond) निर्माण गर्दा स्थानीय स्रोतसाधन (ढुंगा र माटो) को प्रयोग गरी गाईवस्तु तथा वन्यजन्तु सहज रूपमा पोखरीमा पानी पिउन जान आउन सक्ने कम्तीमा साढे एक मिटर चाक्लो संरचना (सिंढी) को निर्माण गर्नु पर्नेछ। अन्य पोखरी निर्माण गर्दा आवश्यकता अनुसार सिमेन्ट कन्क्रिटको प्रयोग समेत गर्न सकिनेछ।

(३) यस कार्यक्रम गर्दा कम खर्चिलो भूसंरक्षण प्रविधिको प्रयोगलाई प्राथमिकता दिनु पर्नेछ।

(४) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(५) उपदफा (२) को खण्ड (क) र (ख) बमोजिमको क्रियाकलापहरूको कार्यान्वयन र कार्यक्रम अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

१२



११

प्रदेश सचिव

८५. कम खर्चिलो भू संरक्षण प्रविधिको प्रयोग गरी पहिरो रोकथाम तथा खोला कटान नियन्त्रण: (१) भूक्षयको हिसावले सम्बेदनशिल र क्षतिग्रस्त जमिन, खोला किनार छेउछाउमा रहेका खेतीयोग्य कृषिभूमि, मानवबस्ती तथा भौतिक पूर्वाधारका संरचनाहरूको संरक्षण गर्ने, नदी उकास जग्गा र वन क्षेत्रको संरक्षणसँगै खोला किनारमा हरियाली प्रबर्द्धन गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रम अन्तर्गत देहायका क्रियाकलापहरू सञ्चालन गर्न सकिनेछः

(क) कम खर्चिलो भू-संरक्षणका प्रविधिहरू जस्तै: ब्रसउड चेकड्याम (Brushwood Checkdam), ब्रस लेयरिङ (Brush Layering), फेसिन (Fascine), पालिसेड (Pallisade), संरक्षण वृक्षारोपण Conservation Plantation), बाँस रोपण (Bamboo Plantation), वाटलिङ्ग Wattling., हेजरो Hedge Row, जैविक वार (Live Fencing), टालटुल (Riprap), कृषि वन प्रणाली (Agroforestry) आदि।

(ख) बमोजिमका क्रियाकलापहरू सञ्चालन गर्दा स्थानीयस्तरमा पाइने बोटबिरुवा बाँस, निगालो, अम्रिसो, नेपियर, फलफूलका बिरुवा र हाँगा सार्ने प्रजातिका बोटबिरुवाको रोपणलाई प्राथमिकता दिनु पर्नेछ।

(३) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(४) उपदफा (२) को खण्ड (क) र (ख) बमोजिमको क्रियाकलापहरूको कार्यान्वयन र कार्यक्रम अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

८६. गल्छी तथा पहिरो उपचार/पहिरो नियन्त्रण: (१) भूक्षयको हिसावले क्षतिग्रस्त जमिन संरक्षण, पहिरोको उपचार र नियन्त्रण गरी मानवबस्ती, खेतीयोग्य जमिन तथा भौतिक पूर्वाधारका संरचनाहरूको संरक्षण गर्ने र पहिरोग्रस्त क्षेत्रमा हरियाली प्रबर्द्धन गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यमा देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरूलाई समावेश गर्नुपर्नेछः

(क) पानी व्यवस्थापनसँगै आसपासमा भल तर्काउने नाला (Diversion Channels), Retaining Wall र Checkdam निर्माण/मर्मत, गल्छी पहिरो गएको स्थानलाई घांस र बिरुवा रोपण गर्ने, वाटलींग (Wattling), कन्टुर (Contour) बाट भिरालोपना कम गर्दै लैजाने, गल्छीको शिरमा Diversion Ditches बनाउने तथा माटोले पुर्ने (Gully Head Plugging), गल्छीको वाहिरी धार निर्माण गर्ने (Gully Rim Edging), Bioengineering/कम खर्चिलो भूसंरक्षण प्रविधिबाट गल्छी/ पहिरो उपचार गर्ने आदि।

(ख) स्थानीयस्तरमा पाइने बोटबिरुवा जस्तै: बाँस, निगालो, अम्रिसो, नेपियर, हाँगा सार्ने प्रजातिहरूका अलावा स्थानीय हावापानी सुहाउँदो फलफूलका बिरुवाहरू रोपण गरी गल्छी तथा पहिरो उपचार गर्ने।

(३) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

४२



४२

४२

प्रदेश सचिव

(४) उपदफा (२) को खण्ड (क) र (ख) बमोजिमको क्रियाकलापहरूको कार्यान्वयन र कार्यक्रम अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

८७. बाँसको कल्म कटिड तयारी रोपण/बाँस, निगालो तथा राइजोम खरिद/वितरण: (१) भूसंरक्षणका हिसावले सम्वेदनशिल क्षेत्र/जमिनमा बाँस, निगालो तथा राइजोम रोपण गरी भू तथा जलाधार संरक्षण तथा हरियाली प्रवर्द्धन गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रम अन्तर्गत विभिन्न गल्छी, पहिरो उपचार, सडक पाखो संरक्षण, नदी उकास जग्गा संरक्षण र क्षतिग्रस्त भूमि पूनर्उत्थान गर्नका लागि उपभोक्तालाई बाँस/निगालोको बिरुवा तथा राइजोम उत्पादन, खरिद तथा वितरण गरिनेछ साथै यस अन्तर्गत अग्निसोको राइजोम समेतलाई समावेश गरेर संरक्षण कार्यलाई थप प्रभावकारी बनाउन सकिनेछ।

(३) यो कार्यक्रम भू तथा जलाधार व्यवस्थापन कार्यालय अन्तर्गत रहेका मौजुदा जनशक्तिको परिचालन गरी वा उपभोक्ता समूहको सहकार्यमा गर्न सकिनेछ।

(४) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(५) कार्यक्रम कार्यान्वयन र अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

८८. पानी मुहान संरक्षण कार्यक्रम: (१) प्राकृतिक रूपमा सतहमा रहेका पिउने पानीका स्रोत (कुवा, धारा, पानी मुहान आदि) को संरक्षण एवम् व्यवस्थापन गरी पिउने पानीको निरन्तर आपूर्ति गर्ने उद्देश्यले यस कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यो कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू समेट्न सकिनेछ:

(क) बाढी, पहिरो, भू-क्षय लगायतका अनुचित भूउपयोगबाट माटो, बालुवा तथा ग्रेग्रान वहावबाट पानी मुहानलाई क्षति हुन नदीन संरक्षण तथा स्तरोन्नतिका लागि आवश्यक संरचना निर्माण गर्न सकिनेछ।

(ख) पानीको सञ्चय र पानी मुहान संरक्षणका लागि पानीको व्यवस्थित निकास र समग्र जलाधारको विकासलाई टेवा पुग्ने गरी कम खर्चिलो बायोईन्जिनियरिङ तथा अन्य हरित प्रविधिको विकास र विस्तार, पानी मुहान घेराबार, संरक्षण पोखरी र Recharge pit निर्माण तथा व्यवस्थापन गर्ने।

(ग) पानी सञ्चयका लागि पानी टंकी निर्माण, पाइप लाइन विस्तार तथा फिटिङ्सका कार्यहरू गर्न सकिनेछ।

(३) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

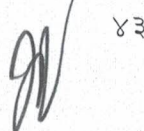
(४) उपदफा (२) को खण्ड (क), (ख) र (ग) बमोजिमका कार्यक्रम कार्यान्वयन र अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

८९. कम खर्चिलो भू संरक्षण प्रविधिको प्रयोग गरी नमूना क्षेत्र/प्रदर्शन स्थल (Demonstration site) स्थापना:

(१) भू तथा जलाधार सम्बन्धी विभिन्न भूसंरक्षणमैत्री तथा नवप्रवर्धनमा आधारित उपायहरू अवलम्बन







४३


प्रदेश सचिव

गरी जमिनको संरक्षणका लागि कम खर्चिलो प्रविधिमा आधारित नमूना क्षेत्र/ प्रदर्शन स्थल तयार गर्ने उद्देश्यले यस कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रममा देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरूलाई समावेश गर्न सकिनेछः

- (क) भू तथा जलाधार व्यवस्थापनसँग सम्बन्धित कृयाकलापहरू आवश्यक सम्पूर्ण वानस्पतिक (Vegetative) तथा संरचनागत (Structural) भूसंरक्षण विधिहरू (Erosion Control Measures) लाई एकीकृत ढंगले प्रयोग गर्ने,
- (ख) संरक्षण वृक्षारोपण, घाँस तथा डालेघाँस रोपण,
- (ग) स्थायी प्रकृतिका समूह/समिति जस्तै: सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह/समिति वा यस्तै प्रकृतिका दर्ता भएका समुदायमा आधारित संस्था वा नयाँ समूहमार्फत कार्य सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(३) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(४) उपदफा (२) को खण्ड (क), (ख) र (ग) बमोजिमका कार्यक्रम कार्यान्वयन र अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

९०. आकस्मिक पहिरो नियन्त्रण तथा जल उत्पन्न प्रकोप नियन्त्रण कार्यक्रम: (१) आकस्मिक पहिरो तथा जल उत्पन्न प्रकोप रोकथाम र नियन्त्रणका लागि उपचार गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रम अन्तर्गत देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरूलाई समावेश गर्न सकिनेछः

- (क) वर्षाको समयमा आकस्मिक रूपमा जान सक्ने पहिरो र पहिरोग्रस्त क्षेत्रलाई मध्यनजर राखी उपलब्ध बजेटबाट आवश्यकता र औचित्यको आधारमा तारजाली/अन्य आवश्यक निर्माण सामग्री समेत खरिद र वितरण गर्ने। यसका लागि स्थानीय तहको समन्वय र सिफारिसको आधारमा आकस्मिक विपद्जन्य घटना घटेको र घटना घट्न सक्ने स्थानमा जनतालाई तारजाली उपलब्ध गराउने सकिनेछ।
- (ख) तत्कालै नियन्त्रणको लागि जनशक्ति परिचालन, घटनास्थलमा आपतकालिन अवस्थामा जानको लागि सवारी साधन भाडामा लिन, तत्काल पहिरो सफा गरी जनधनको क्षतिलाई कम गर्ने कार्य गर्न सकिनेछ।
- (ग) स्थायी प्रकृतिका समूह/समिति जस्तै: सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह/समिति वा यस्तै प्रकृतिका दर्ता भएका समुदाय/संस्था वा नयाँ समूहमार्फत कार्य सन्चालन गर्न सकिनेछ।

(३) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(४) उपदफा (२) को खण्ड (क) र (ख) बमोजिमका कार्यक्रम कार्यान्वयन र अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

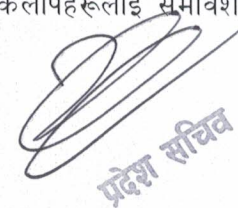
९१. नदी उकास जग्गा पुनर्स्थापना तथा संरक्षण: (१) नदी, खोला, खहरे र गल्छीले छाडेका नदी उकास जग्गाको पुनर्स्थापना गरी जमिनको संरक्षण र हरियाली प्रवर्द्धन गर्ने यस कार्यक्रमको उद्देश्य रहेकोछ।

(२) यस कार्यक्रम अन्तर्गत देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरूलाई समावेश गर्न सकिनेछः





 ४४


प्रदेश सचिव

(क) Revetment/Protection Wall Construction, Spur/Groynes Construction, थिग्रिकरण रोकथाम संरचना निर्माण/Construction of Flow Retarding Structures, जल प्रवाहको व्यवस्थापनको लागि हरित प्रविधि विकास/Flood Slope Stabilization through Bioengineering/Vegetative Measures (Tree Grass Planting) on the Bank, Fencing of Area for Livestock Control आदि।

(ख) स्थायी प्रकृतिका समूह/समिति जस्तै: सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह/समिति वा यस्तै प्रकृतिका दर्ता भएका समुदायमा आधारित संस्था वा नयाँ समूहमार्फत कार्य सन्चालन गर्नुपर्दछ।

(३) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(४) उपदफा (२) को खण्ड (क) बमोजिमका कार्यक्रम कार्यान्वयन र अनुगमन तथा निरीक्षण सम्बन्धी कार्यहरूमा यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट खर्च गर्न सकिनेछ।

९२. कम खर्चिलो भू-संरक्षण प्रविधि तालिम: (१) जिल्लाका सम्बेदनशील एवम् क्षतिग्रस्त जलाधार क्षेत्र, नमुना संरक्षण प्रदर्शन स्थल तथा एकीकृत जलाधार संरक्षण एवम् व्यवस्थापन सम्बन्धी स्थानीय उपभोक्ताहरूलाई कम खर्चिलो भू-संरक्षण प्रविधिको उपयोग र प्रचार समेत गर्ने उद्देश्यले यो तालिम कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) तालिममा सहभागीहरूलाई भू-संरक्षण सम्बन्धी सैद्धान्तिकका साथै व्यवहारिक ज्ञान हासिल गर्ने गरी प्रयोगात्मक अभ्यासहरू गराउनु पर्नेछ।

(३) प्रयोगात्मक अभ्यासको क्रममा स्थानीय रूपमा पाईने ढुंगा, बाँस, काठ हाँगा सरेन जातका बोटबिरुवाका हाँगाहरू (जस्तै: सजिवन, सिमली, खिरो, अजम्मरी, वैस, दबदवे आदि) र अम्रिसो, नेपियर लगायतका सामग्रीहरूलाई प्राथमिकता दिनु पर्नेछ।

(४) तालिममा विनियोजित रकम सहभागीको भत्ता, सेसन शुल्क, समन्वय भत्ता, खाजा, व्यानर, हल भाडा, सञ्चार, स्टेशनरी, तालिम सामग्री आदिमा खर्च गर्न सकिनेछ।

९३. स्थानीय तह तथा सरोकारवाला बीच समन्वय गोष्ठी: (१) कार्यालयको कार्य क्षेत्रभित्रका जिल्लाहरूमा रहेका स्थानीय तहका प्रमुख, उपप्रमुख, जिल्ला समन्वय समिति प्रमुख, उपप्रमुख, प्रमुख प्रशासकीय अधिकृत, समन्वय अधिकारी, सरोकारवाला सरकारी निकायका प्रमुखहरू, संरक्षण क्षेत्रमा काम गर्ने गैरसरकारी संस्था, सामुदायिक संस्थाका पदाधिकारीहरूलाई यो गोष्ठीमा सहभागी गराउनु पर्नेछ।

(२) गोष्ठीमा योजना तर्जुमा, समन्वय र सहकार्यका बिषयहरू संरक्षण क्षेत्रका समस्या र समाधानका विषयहरू समेटी गोष्ठी सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(३) गोष्ठी शीर्षकमा विनियोजित रकम सहभागीको भत्ता, सेसन शुल्क, समन्वय भत्ता, खाजा, व्यानर, हल भाडा, सञ्चार, स्टेशनरी आदिमा स्वीकृत नर्म्सको परिधिभित्र रही लागत ईस्टिमेट स्वीकृत गराई खर्च गर्न सकिनेछ।

९४. भू-संरक्षणका लागि ग्यावियन तारजाली खरिद तथा वितरण: (१) वर्षातको समयमा हुने बाढी, पहिरो, भूक्षय र नदी/खोलाको कटानीले गर्दा उच्च जोखिममा रहेका उपभोक्ता/जनताहरूको घर, गोठ,





 ४५


प्रदेश सचिव

विद्यालय तथा धार्मिक संरचना संरक्षणको लागि ग्यावियन तारजाली भनें उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) ग्यावियन तारजाली प्रचलित सार्वजनिक खरिद ऐन नियमको व्यवस्था बमोजिम खरिद गर्नु पर्नेछ।

(३) जिल्ला प्रशासन कार्यालय/जिल्ला विपद् व्यवस्थापन समिति वा स्थानीय तहको सिफारिस साथ जोखिम झल्किने तस्बिर सहितको निवेदन पिडितले कार्यालयमा पेस गरेमा आवश्यक फिल्ड अनुगमन समेत गरी ग्यावियन तारजाली उपलब्ध गराउन सकिनेछ।

(४) कार्यालयले तारजाली उपलब्ध गराउँदा सकेसम्म तारजालीमा ढुंगा भरी उपयुक्त ढंगले प्रयोग गर्ने कुराको सुनिश्चितता हुन गर्नुपर्ने छ। तारजाली भरिसके पछि सोको तस्बिर र वडा कार्यालयको कार्य सम्पन्न सिफारिस पत्र कार्यालयमा पेस गर्ने व्यवस्था मिलाई तारजाली वितरण कार्यलाई प्रभावकारी बनाउनु पर्नेछ।

(५) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट ग्यावियन तारजाली खरिद र वितरण लगायतको व्यवस्थापन कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

९५. सडकसँग भू-संरक्षण कार्यक्रम: (१) वर्षातको समयमा विशेषतः ग्रामिण सडक माथिको भाग र सडक समेत तलको भाग पहिरिने तथा सडक माथिको भागबाट लेदो, गोग्रान बगेर आई सडकमा थुप्रिन जाँदा सवारी आवत जावतमा अवरोध सिर्जना हुने गरेको छ। यस्ता समस्यामा कमी ल्याउन तथा सडक पाखाहरुको माटो स्थिरकरण गर्ने उद्देश्यले भलपानी तर्काउने, गल्छी पहिरो रोकथाम गर्ने तथा घाँस/डालेघाँस/बाँस/अम्रिसो रोपणका लागि यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) संरक्षण क्रियाकलाप सञ्चालन गर्नु पर्ने ग्रामिण सडकहरुको पहिचान र सडकको दायाँ बायाँ हरित प्रविधिको विकास तथा संरक्षणको लागि उपयुक्त क्रियाकलाप छनोट गर्नु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रममा देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरुलाई समावेश गर्न सकिनेछः

- (क) गल्छी तथा पहिरो रोकथाम,
- (ख) वृक्षारोपण, घाँस, डालेघाँस, बाँस, अम्रिसो, भुजेत्रो रोपण,
- (ग) भलपानीको व्यवस्थापन,
- (घ) एकीकृत भू तथा जलाधार संरक्षणका अन्य कार्यहरु

(४) यस कार्यक्रम स्थानीय तहसंग साझेदारी तथा सहकार्य गरी सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(५) स्थायी प्रकृतिका समूह/समिति जस्तै: सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह/समिति वा यस्तै प्रकृतिका दर्ता भएका समुदायमा आधारित संस्थामार्फत वा नयाँ समूह गठन गरी कार्य सञ्चालन गर्नु पर्दछ। सहभागिताको सुनिश्चितता नभएको र कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने पर्ने स्थानहरुमा सार्वजनिक खरिद ऐन तथा नियमावलीको प्रक्रिया अपनाई कार्य सञ्चालन गर्न सकिने छ।

(६) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(७) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट लागत अनुमान बमोजिमको कार्यहरु गर्न तथा सोको अनुगमन तथा निरीक्षण कार्यहरुमा खर्च गर्न सकिनेछ।

18



86

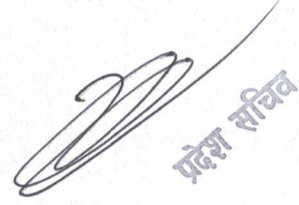
प्रदेश सचिव

९६. बायोइन्जिनियरिङ्ग वा कम खर्चिलो भू संरक्षण प्रविधिको प्रयोग गर्नु पर्ने: (१) दफा ८१, ८२, ८५, ८६, ८९, ९१ र ९५ बमोजिमका कार्यक्रमहरु सञ्चालन गर्दा कार्यक्रमको प्रकृति, स्थान तथा औचित्यताको आधारमा बायोइन्जिनियरिङ्ग वा कम खर्चिलो भूसंरक्षण प्रविधिको प्रयोग गर्नु पर्नेछ।

(२) उपदफा (१) बमोजिम कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा स्वीकृत बजेटको कम्तीमा दश प्रतिशत रकम बायोइन्जिनियरिङ्ग वा कम खर्चिलो भूसंरक्षण प्रविधिमा खर्च गर्नु पर्नेछ।

(३) समुदाय वा उपभोक्तासँग सम्झौता गर्दा नै सम्झौता फाराममा बायोइन्जिनियरिङ्ग तथा कम खर्चिलो प्रविधिहरुको प्रयोग गर्नुपर्ने कुरा उल्लेख गरी सम्झौता गर्नु पर्नेछ।

(४) बायोइन्जिनियरिङ्ग तथा कम खर्चिलो प्रविधि प्रयोग गर्न समुदाय वा उपभोक्ता समिति मार्फत सम्पन्न गर्न नसक्ने अवस्थामा सम्बन्धित साइट इन्चार्ज मार्फत गर्न सकिनेछ।



प्रदेश सचिव



परिच्छेद-४

अध्ययन, अनुसन्धान र तालिम तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम

९७. कालिगण्डकी जलाधार क्षेत्रलाई कृषि र पर्याप्यटनको केन्द्रको रूपमा विकास गर्न सम्भाव्यता अध्ययन/ मर्स्याडदी जलाधार क्षेत्रलाई विद्यावत शहरको रूपमा विकास गर्न सम्भाव्यता अध्ययन/ सेती जलाधार क्षेत्रलाई औद्योगिक करिडोरको रूपमा विकास गर्न सम्भाव्यता अध्ययन: (१) वन अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण केन्द्रले अध्ययन, अनुसन्धान कार्यक्रमहरूको उद्देश्यका बारेमा सम्बन्धित विषयगत कार्यालयहरूसँगको परामर्श, छलफल तथा गोष्ठी सञ्चालन गरी तय गर्नु पर्नेछ।

(२) अध्ययन तथा अनुसन्धानका कार्यक्रमहरू आफ्नै जनशक्तिबाट गर्नेछ। केन्द्रमा विषय विज्ञको उपलब्धता नभएको अवस्थामा प्रचलित कानुन अनुसार परामर्श सेवा खरीद गरी सञ्चालन गर्न सक्नेछ।

(३) अध्ययन अनुसन्धानका कार्य प्रशिक्षण केन्द्र आफैले सञ्चालन गर्नु पूर्व सम्पादन गर्नु पर्ने कामको अवधारणा पत्र र कार्यसूची (Concept Paper and TOR) सहितको प्रस्ताव पेस गरी निर्देशकबाट स्वीकृत गराउनु पर्नेछ।

(४) प्रचलित नर्स र स्वीकृत जिल्ला दररेटको अधिनमा रही लागत अनुमान तयार गरी निर्देशकबाट स्वीकृत गराई अध्ययन अनुसन्धान कार्य सञ्चालन गरिने छ।

(५) अध्ययन अनुसन्धानका लागि विनियोजित रकम अनुसन्धानका लागि आवश्यक पर्ने सामग्री खरिद, फिल्डमा खटिने प्राविधिक कर्मचारीहरूको लागि दैनिक भ्रमण भत्ता, यातायात, अनुसन्धान कार्यका लागि आवश्यक भौतिक सामग्री खरिद, स्थलगत भ्रमणका लागि आवश्यक सवारी साधन भाडा, कार्यालयका सवारी साधनका लागि इन्धन लगायतका शिर्षकमा स्वीकृत लागत इष्टिमेट अनुसार खर्च गर्न सकिनेछ।

(६) यो कार्यक्रम सञ्चालन गर्दा सार्वजनिक खरिद ऐन, २०६३ र सार्वजनिक खरिद नियमावाली, २०६४ ले निर्दिष्ट गरेका विधि र प्रक्रियाहरू अवलम्बन गरी परामर्श सेवाबाट समेत सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

९८. वन विज्ञान अध्ययन संस्थानसँगको सहकार्यमा वनक्षेत्रगत अनुसन्धान: (१) विश्वविद्यालय/अध्ययन संस्थान/क्याम्पससँगको साझेदारीमा गरिने अध्ययन अनुसन्धानको सम्बन्धमा देहाय बमोजिम हुने गरी तालिम केन्द्र/मन्त्रालयसँग सहमती लिनु पर्नेछ।

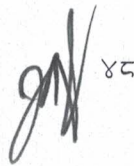
(२) उपदफा (१) बमोजिम सहमति प्राप्त भएपछि केन्द्रले देहायको प्रकृया अवलम्बन गरी कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्नु पर्नेछ।

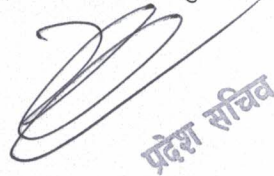
क) वन तथा वातावरण विषयसँग सम्बन्धित विश्वविद्यालय/अध्ययन संस्थान/क्याम्पससँग अनुसन्धानको लागि आशयपत्र माग गरिनेछ।

ख) प्राप्त आशयपत्रको अध्ययन पश्चात विस्तृत अनुसन्धान प्रस्ताव माग गरिनेछ। उक्त प्रस्तावको प्राविधिक तथा आर्थिक मूल्याङ्कन गरी उपयुक्त देखिएमा प्रस्ताव स्वीकृत गरिनेछ।





 ४८


प्रदेश सचिव

- ग) प्रस्ताव स्वीकृत भए पश्चात सम्बन्धित विश्वविद्यालय/अध्ययन संस्थान/क्याम्पससँग सम्झौता गरी अध्ययन अनुसन्धान कार्य अघि बढाउन केन्द्रले सम्बन्धित विश्वविद्यालय/अध्ययन संस्थान/क्याम्पसमा जानकारी पठाउनु पर्नेछ।
- घ) सम्बन्धित विश्वविद्यालय/अध्ययन संस्थान/क्याम्पसले सम्झौता बमोजिम अध्ययन अनुसन्धानको कार्य गर्नु पर्नेछ।
- ङ) अध्ययन प्रतिवेदनको मस्यौदामा मन्त्रालय, निर्देशनालय, केन्द्र र विषय विज्ञ समेतको उपस्थितमा प्रस्तुतिकरणको व्यवस्था मिलाउनु पर्नेछ। प्रस्तुतिकरण पश्चात छलफलबाट प्राप्त सुझावलाई प्रतिवेदनमा समावेश भएपछि प्रतिवेदन स्वीकृत गर्न सकिनेछ।
- च) स्वीकृत भएको अध्ययन अनुसन्धान प्रतिवेदनको एक प्रति (Hard copy र Digital copy) मन्त्रालयमा पठाउनु पर्नेछ र उक्त प्रतिवेदनको अनुसन्धान केन्द्रको Website मा upload गर्नु पर्नेछ।

९९. वन र वन्यजन्तु कसुर सम्बन्धी उजुरी निवेदन देखि अभियोग पत्र तयारी सम्मको मिसिल तयारी तालिम/वातावरणीय परीक्षण तालिम/Remote sensing & GPS तालिम/वन विकास निर्माण कार्यको लागि डिजाईन तथा लागत अनुमान तयारी तालिम/वन कर्मचारीहरूलाई पुनर्ताजगी तालिम/GPS Handling, वन स्रोत सर्वेक्षण तथा मापन सम्बन्धी स्थलगत अभ्यास तालिम (वन रक्षक तथा फरेष्टर)/ वन्यजन्तु उद्धार तथा व्यवस्थापन सम्बन्धी (फरेष्टर/सिनियर गेमस्काउट/वन रक्षक/गेमस्काउटस्तरीय) तालिम कार्यक्रम सञ्चालन प्रक्रिया तथा सेवा सुविधा: (१) चालु आर्थिक वर्षमा स्वीकृत भएका तालिम सञ्चालन गर्नु पूर्व वन अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण केन्द्रले अवधारणा पत्र, विस्तृत प्रस्ताव, लागत ईष्टिमेट तथा सेशन प्लान तयार गर्नु पर्नेछ।

(२) सेवाकालिन तालिमको अवधि कम्तीमा ३० कार्य दिनको रहनेछ भने बाँकी अन्य तालिमहरूको अवधि उपलब्ध बजेट, सहभागी संख्या र आवश्यकता अनुसार सञ्चालन गर्न सकिनेछ।

(३) तालिमका सहभागी छनोट गर्दा मन्त्रालय, निर्देशनालय, प्राधिकरण, डिभिजन वन कार्यालय, भू तथा जलाधार व्यवस्थापन कार्यालयमा सहभागी मनोनयन गरी पठाउन पत्राचार गर्नु पर्नेछ। तालिममा सहभागी मनोनयन गर्दा बरिष्ठताका आधारमा बहुवाको सम्भाव्य उमेदवार भएका, सम्बन्धित कार्यालय र तालिमको अभिलेख हेरी यस अगाडी तालिमको अवसर नपाएका र दुर्गम क्षेत्रमा खटिएका कर्मचारीलाई पहिलो प्राथमिकता दिनु पर्नेछ।

(४) उपदफा (३) बमोजिम तालिममा सहभागी मनोनयन गर्दा वन र वन्यजन्तु कसुर सम्बन्धी उजुरी निवेदन देखि अभियोग पत्र तयारी सम्मको मिसिल तयारी तालिम अभियोग पत्र दायर गर्न योग्य साथै वातावरणीय परीक्षण तालिममा रेन्जर देखि अधिकृतस्तर आठौँतहका कर्मचारी मनोनयन गरी तालिममा सहभागी गराउनु पर्नेछ। साथै Remote sensing & GPS र वन विकास निर्माण कार्यको लागि डिजाईन तथा लागत अनुमान तयारी तालिममा वन सेवामा कार्यरत रेन्जर/भू-संरक्षण सहायक देखि अधिकृतस्तर आठौँतहका कर्मचारी सहभागी गराउन सकिनेछ। पद र तालिमको स्तर तोकिएको अवस्थामा सोही अनुसार सहभागी मनोनयन गरी तालिममा सहभागी गराउनु पर्नेछ।







४९


प्रदेश सचिव

(५) तालिम कार्यक्रममा प्रशिक्षणका लागि वन अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण केन्द्रमा मौजुदा प्रशिक्षकहरूवाट मात्र सम्भव नभएको अवस्थामा सम्बन्धित विषयवस्तुको विज्ञहरूवाट प्रशिक्षणको व्यवस्था मिलाउन सकिनेछ।

(६) तालिमका सहभागी, तालिम संयोजक, प्रशिक्षक, प्रतिवेदक तथा सहयोगी, तालिमका उत्तरपुस्तिका परीक्षण र तालिम मुल्याङ्कन समिति बैठक समेतको सेवा सुविधा गण्डकी प्रदेशको प्रचलित खर्चको मापदण्ड अनुसार हुनेछ।

(७) तालिमका सहभागीहरू जिल्ला बाहिरका भएमा भ्रमण खर्च नियमावली, २०६४ बमोजिम दैनिक भ्रमण भत्ता र जिल्ला भित्रका सहभागीहरूलाई गण्डकी प्रदेश सरकारको प्रचलित खर्चको मापदण्ड अनुसार सहभागी भत्ता उपलब्ध गराइनेछ।

(८) तालिम कार्यक्रमका सहभागीहरू, संयोजक, प्रशिक्षक, प्रतिवेदक तथा सहयोगीहरूका लागि प्रति व्यक्ति गण्डकी प्रदेश सरकारको प्रचलित खर्चको मापदण्ड अनुसार खाजा खर्चको व्यवस्था गर्न सकिनेछ।

(९) तालिम कार्यक्रम सम्पन्न भएपछि तोकिएका कर्मचारीले स्वीकृत लागत इष्टिमेट, पाठ योजना, तालिम कार्यक्रमका क्रममा भएको खर्चको विवरण तथा विल भर्पाइ, सहभागीबाट भएको तालिम मूल्याङ्कन र प्रतिवद्धता सहितको कार्ययोजना, तालिम सञ्चालनका फोटो समावेश गरी प्रतिवेदन पेस गर्नु पर्नेछ।

(१०) तालिमका लागि विनियोजित रकम तालिम सामग्री खरिद, तालिमका सहभागीहरू भत्ता, यातायात, हलभाडा, प्रशिक्षण शुल्क, खाजा, तालिमका लागि आवश्यक भौतिक सामग्री खरीद/भाडामा लिने तथा हस्तान्तरण, संयोजक भत्ता, स्थलगत भ्रमणका लागि आवश्यक सवारी साधन भाडा, कार्यालयका सवारी साधनका लागि इन्धन, व्यानर तथा प्रमाणपत्र तयारी, उदघाटन तथा समापन कार्यक्रम लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

१००. त्रैमासिक प्रदेशिक वन बुलेटिन प्रकाशन: (१) यस कार्यक्रम वन, वन्यजन्तु, वनस्पती, जैविक विविधता, जलाधार, जलवायु परिवर्तन र अनुसन्धानका क्षेत्रमा भए गरेका राम्रा र असल अभ्यासहरूको प्रचार प्रसार गर्ने तथा वन र वातावरणको क्षेत्रमा मन्त्रालय र मातहतका निकायहरूबाट भए गरेका गतिविधि/ क्रियाकलापहरूको सूचना सन्देश प्रवाह गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट लेख, रचना, सूचना सङ्कलन र एकीकृत गर्न तथा सन्देश/सूचना तयारी र प्रकाशन लगायतका कार्यहरूमा खर्च गर्न सकिनेछ।

१०१. वन सम्बर्द्धन प्रणालीमा आधारित वनको पुनर्उत्पादन क्षमता अभिवृद्धीको तुलनात्मक अध्ययन: (१) यस कार्यक्रम विगतमा दीगो वन व्यवस्थापनको लागि छत्र प्रणाली (Shelterwood System) बमोजिम व्यवस्थापन गरिएका सरकारद्वारा व्यवस्थित वन (चक्ला वन), साझेदारी वन र सामुदायिक वनहरूमा पुनरुत्पादनको अवस्था अध्ययन गरी अवस्थाको जानकारी लिने उद्देश्यले राखिएको हो।

(२) यो कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा देहायका प्रक्रियाहरू पालन गर्नु पर्नेछ:

(क) वनको प्रकृति र भौगोलिक क्षेत्रलाई आधार मानि वन छनोट गर्ने,



५०

प्रदेश सचिव

- (ख) वन क्षेत्र (समूह) छनोट गर्दा नवलपरासी (ब.सु.पू) बाट चक्ला वन, साझेदारी वन र एक सामुदायिक वन, तनहुँ र कास्की जिल्ला बाट कम्तिमा १/१ वटा सामुदायिक वनमा अध्ययन गर्नु पर्नेछ।
- (ग) प्रत्येक वन (समूह) मा नमुना प्लट लिई रुख कटान वर्ष देखि हालसम्मको विवरण सङ्कलन गर्नु पर्नेछ।
- (घ) वार्षिक रूपमा रुख कटान गरिसकेपछि उक्त क्षेत्रमा पुनरुत्पादन विरुवा, लाश्रा, पोल र रुखहरूको तथ्याङ्क लिनु पर्नेछ।
- (ङ) रुख कटान देखि पुनरुत्पादन अभिवृद्धि गर्न वनमा गरिएको वन सम्बर्द्धन क्रियाकलाप र सोमा लागेको खर्च रकम र श्रमदान समेत समावेश गर्नु पर्नेछ।
- (२) स्याम्पल प्लटको जि.पि.एस. लोकेशन, उचाई, माटोको प्रकार आदिको अभिलेख गर्नु पर्नेछ।
- (३) मस्यौदा प्रतिवेदन तयार गरी सकेपछि केन्द्रले सम्बन्धित बिषय प्राविधिक र विज्ञको उपस्थितिमा छलफल गराई सुझाव लिइ समावेश गर्नु पर्नेछ।
- (४) कार्य सम्पन्न भएपछि भए गरेका क्रियाकलाप देखिने फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन केन्द्रमा पेस गर्नु पर्नेछ।
- (५) यस कार्यक्रमको लागि स्वीकृत बजेट, वन स्रोतको तथ्याङ्क सङ्कलन र विश्लेषण, यातायात, भत्ता, प्रतिवेदन प्रिन्टिङ तथा वाइन्डिङ लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

१०२. गण्डकी प्रदेशमा हैसियत विग्रेको वन वा नदी उकास क्षेत्रको पुनर्उत्थान कार्यको लागि अध्ययन अनुसन्धान प्लट स्थापना: (१) यस कार्यक्रम हैसियत विग्रेको वन वा नदी उकास क्षेत्रको पुनर्स्थापनाको माध्यमबाट वनको संरक्षण व्यवस्थापन गरी हरियाली प्रवर्द्धन गर्ने प्रयोजनाका लागि अनुसन्धान प्लट स्थापना गर्ने रहेको छ।

(२) यस कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्न देहायका प्रक्रियाहरू अपनाउनु पर्नेछ:

- (क) वन निर्देशनालय, डिभिजन वन कार्यालय, भू तथा जलाधार व्यवस्थापन कार्यालय र स्थानीय वन समूह/समुदायको समन्वय र छलफल गरी क्षेत्र छनोट गर्ने।
- (ख) छनोट गरिएको पुनर्स्थापना गरिने क्षेत्रमा गरिने क्रियालाप योजना तयार गर्ने।
- (ग) योजनामा उल्लेख भए वमोजिमको कार्यहरूको कार्यान्वयन गर्ने।

(३) यस कार्यक्रममा स्वीकृत बजेट अन्तर्क्रिया छलफलका सहभागीहरूलाई खाजा, वन वनस्पतीको लगत संकलन र विश्लेषण, योजना तयारी, बाँस/निगालो/भुईँँघाँस/डालेघाँस रोपण, प्रदर्शनी प्लटको संरक्षणका लागि घेरबार, अनुगमन तथा निरीक्षण लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

१०३. वन विज्ञान अध्ययन संस्थानसँग सहकार्यमा सामुदायिक वन अध्ययन केन्द्र स्थापना सहयोग : (१) यस प्रदेशमा समुदायमा आधारित वन व्यवस्थापन सम्बन्धमा भएका असल अभ्यास, हालसम्मका सिकाइ र अनुभव अभिलेखीकरण गर्ने, वन व्यवस्थापन पद्धतिमा आधारित भएर थप ज्ञान, अध्ययन तथा









अनुसन्धानको क्षेत्र विस्तार गर्ने एवम् त्यसबाट मन्त्रालयको नीति निर्माण तथा कार्यान्वयनमा सहयोग पुर्‍याउने उद्देश्य यस कार्यक्रमको रहेको छ।

(२) यस कार्यक्रमको कार्यान्वयन गर्दा देहायका प्रकृयाहरू पालन गर्नु पर्नेछ।

(क) अध्ययन केन्द्रको सवलिकरणका लागि केन्द्रले वन विज्ञान अध्ययन संस्थान, पोखरा क्याम्पससँग कार्यक्रम कार्यान्वयनको प्रस्तावना माग गर्ने र वन विज्ञान अध्ययन संस्थान, पोखरा क्याम्पसले प्रस्ताव पेस गर्नु पर्नेछ।

(ख) खण्ड (क) बमोजिम प्राप्त प्रस्तावना उपर केही परिमार्जन गर्नु पर्ने देखिएमा केन्द्रले संस्थानसंगको समन्वय र छलफलबाट प्रस्तावनामा परिमार्जन गर्न लगाउन सक्नेछ।

(ग) केन्द्रबाट प्रस्तावनाको मूल्याङ्कन गरी अध्ययन संस्थानसँगको सहलगानीमा द्विपक्षीय सम्झौता गरी सामुदायिक वन अध्ययन केन्द्रको सवलिकरण र सञ्चालनमा प्रस्ताव बमोजिमका भौतिक सामग्री, आवश्यक पुस्तक, अनुसन्धान जर्नलहरू आदि उपलब्ध गराउन सकिनेछ।

(३) यस कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात कार्यक्रम कार्यान्वयनको प्रतिवेदन तयार गरी अभिलेखको लागि केन्द्रमा राख्नु पर्नेछ।

१०४. वन, वातावरण विद्यार्थीलाई ईन्टर्नसिप मार्फत सेवाप्रवाहमा सवलीकरण: (१) नेपाल सरकारबाट मान्यता प्राप्त वन, वातावरण विषयमा स्नातक तहको अध्ययन कार्यक्रम सञ्चालन गरिरहेका र पाठ्यक्रममा ईन्टर्नसिपको व्यवस्था भएका अध्ययन संस्थानहरूमा स्नातक तहको अन्तिम वर्षमा अध्ययनरत विद्यार्थीहरूलाई कामकाज गराई वन सम्बन्धि अध्ययन, अनुसन्धान, शोध र क्षमता अभिवृद्धि गराउनका साथै वन विज्ञानका विद्यार्थीमार्फत वन सम्बन्धी ज्ञान, सिप र प्रविधिलाई प्रदेश सरकारका कार्यालय तथा कार्यक्रममा उपयोग गरी विद्यार्थीहरूको व्यवहारिक ज्ञान र अनुभव बढाउने र सेवा प्रवाहमा सुधार हुने उद्देश्यले यो क्रियाकलाप राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रमका लागि देहाय अनुसार सहजीकरण समिति गठन गरिनेछ:

(क) वन अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण केन्द्रका निर्देशक-संयोजक

(ख) वन तथा वातावरण मन्त्रालयका महाशाखा प्रमुख वा मन्त्रालयले तोकेको अधिकृत प्रतिनिधि-सदस्य

(ग) प्रदेश वन निर्देशनालयका शाखा प्रमुख वा निर्देशनालयले तोकेको अधिकृत प्रतिनिधि-सदस्य

(घ) वन वातावरण सम्बन्धी अध्ययन संस्थाका प्रमुख वा निजले तोकेको प्रतिनिधि-सदस्य

(ङ) केन्द्रको आर्थिक प्रशासन शाखा प्रमुख-सदस्य

(च) केन्द्रका निर्देशकले तोकेको अधिकृत-सदस्य सचिव

(३) उपदफा (२) बमोजिमको समितिको बैठक आवश्यकता अनुसार बस्न सक्नेछ।



५२

प्रदेश सचिव

(४) समितिको काम कर्तव्य र अधिकारमा केन्द्रको वार्षिक स्वीकृत कार्यक्रममा व्यवस्था भए बमोजिम बजेट अनुसार विभिन्न अध्ययन संस्थानबाट ईन्टर्न खटाउने प्रयोजनका लागि विद्यार्थी संख्या र मासिक सुविधा निर्धारण गरि कार्यालय प्रमुख समक्ष सिफारिस गर्नु पर्नेछ।

(५) केन्द्रले स्वीकृत मापदण्ड बमोजिम गण्डकी प्रदेश भित्रका अध्ययन संस्थानहरूबाट ईन्टर्न उपलब्ध गराउने सम्बन्धी प्रस्ताव/आशयपत्र माग गर्नुपर्ने छ। प्राप्त प्रस्ताव/आशय पत्र बमोजिम आफ्नो पाठ्यक्रमा ईन्टर्नको व्यवस्था भएका अध्ययन संस्थानहरूको सुची तयार गरी सहजिकरण समितिको सिफारिसमा केन्द्रले अध्ययन संस्थानहरूलाई ईन्टर्नको कोटा/संख्या उपलब्ध गराउनुपर्ने छ। केन्द्रले ईन्टर्न परिचालन गर्ने प्रयोजनका लागी अध्ययन संस्थानहरू सँग सम्झौता गर्नु पर्नेछ।

(६) अध्ययन संस्थानले ईन्टर्न छनोट गर्दा कम्तीमा एक्काइस दिनको सूचना जारी गरी देहाय बमोजिम इच्छुक र योग्य विद्यार्थीबाट दरखास्त लिनुपर्नेछः

(क) स्नातक तहको अन्तिम वर्ष/सेमेष्टरमा अध्ययनरत,

(ख) अघिल्ला वर्ष/सेमेष्टरहरूको शैक्षिक नतिजा,

(घ) प्रदेशका सबै भौगोलिक क्षेत्रमा गई कामकाज गर्न इच्छुक,

(ङ) अध्ययन संस्थानले तोकिदिएका अन्य आवश्यक विषय

(७) ईन्टर्नसिपको अवधि कम्तीमा तीन महिना देखि बढीमा पाँच महिना सम्मको हुनेछ। ईन्टर्न परिचालन हुने निकाय समितिले निर्धारण गरे बमोजिम हुनेछ। ईन्टर्न परिचालन हुने निकाय वा कार्यालय प्रमुखले ईन्टर्नको सुपरिवेक्षक तोकी परिचालन सुपरिवेक्षण तथा प्रतिवेदन गर्ने व्यवस्था मिलाउनु पर्नेछ।

(८) सुपरिवेक्षकको प्रत्यक्ष सम्पर्क र सुपरिवेक्षणमा रही ईन्टर्नले काम गर्नुपर्ने हुन्छ र ईन्टर्न अवधिमा आफूले गरेको कार्यविवरण र प्रगति सम्बन्धी संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रत्येक महिना केन्द्रमा पठाउनु पर्नेछ।

(९) ईन्टर्नसिपका लागि सहजीकरण समितिको बैठक, अनुगमन तथा मूल्याङ्क, प्रतिवेदन तयारी, प्रमाण पत्र छपाइ, सञ्चार तथा समन्वय लगायतका विषयमा कूल विनियोजित बजेटको बढीमा चार प्रतिशत नबढ्ने गरी स्वीकृत लागत अनुमान बमोजिम खर्च गर्न सकिनेछ।

(१०) यस सम्बन्धी अन्य व्यवस्था उद्योग, पर्यटन, वन तथा वातावरण मन्त्रालयको, विद्यार्थीलाई ईन्टर्नसिप प्रदान गर्ने सम्बन्धी मापदण्ड २०७८ मा भएको व्यवस्था बमोजिम नै हुनेछ।

१०५. **कर्मचारी टिम विल्डिङ कार्यक्रम:** (१) तालिम सञ्चालन र व्यवस्थापन सम्बन्धमा पाठ्यक्रममा भएका विषयवस्तर र सिकाईलाई अन्तर निकाय बिच समन्वय/सहकार्य बढाई प्रभावकारी बनाउन र प्रदान गरिने सेवाप्रवाहलाई चुस्त, दुरुस्त तथा प्रविधि मैत्री बनाउन यस कार्यक्रम उद्देश्य रहेकोछ।

(२) केन्द्रले यस कार्यक्रममा तालिम सञ्चालन, व्यवस्थापन तथा अध्ययन अनुसन्धानका पाठ्यक्रम सहित तालिम सञ्चालन मोडालिटिका विषयमा मन्त्रालय र निर्देशनालयका प्रतिनिधिलाई सहभागी गराइ कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु पर्नेछ। यस गोष्ठीमा सम्बन्धित विषय विज्ञलाई स्रोत व्यक्तिको रूपमा आमन्त्रण गर्न सकिनेछ।



५३

प्रदेश सचिव

(३) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट प्रशिक्षक सहजीकरण भत्ता, हल भाडा, सहभागी भ्रमण खर्च, मसलन्द लगायतका कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

(४) कार्यक्रम सम्पन्न पश्चात विल भरपाई, फोटो र गरिएका क्रियाकलाप समावेश गरी कार्यालयमा प्रतिवेदन पेस गर्नुपर्ने छ।


१०६. मन्त्रालय र मातहतका निकाय सम्मिलित अन्तरप्रदेश अनुसन्धान सिकाई भ्रमण: (१) वन तथा वातावरण क्षेत्रमा क्षेत्रमा भएका कार्यक्रमका सिकाई, अनुभव र कार्यान्वयनका सफल अभ्यासको आदानप्रदान गरी प्रदेशका कर्मचारीको क्षमता बढाई कार्यसम्पादनमा प्रभावकारीता ल्याउन यस कार्यक्रमको उद्देश्य रहेकोछ।

(२) अन्तर प्रदेश भ्रमण कार्यक्रममा सम्बन्धमा केन्द्रले प्रस्ताव र लागत अनुमान तयार गरी मन्त्रालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(३) उपदफा (२) बमोजिमको प्रस्तावमा आवश्यक परिमार्जन गरी मन्त्रालयले स्वीकृत गर्न सक्नेछ।

(४) कार्यक्रम कार्यान्वयन पश्चात भ्रमणको सिकाई, उपलब्धि फोटो सहित प्रतिवेदन तयार गरी कार्यालयमा पेस गर्नु पर्नेछ।

(५) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट सहभागीको दैनिक भ्रमण भत्ता, सवारी साधन भाडा, इन्धन, मायाको चिनो खरिद, सहजकर्ताको लागि सहजीकरण शुल्क, भ्रमणमा चाहिने मसलन्द लगायतमा खर्च गर्न सकिनेछ।



प्रदेश सचिव



परिच्छेद ५

ताल संरक्षण तथा विकास प्राधिकरण मार्फत कार्यान्वयन हुने कार्यक्रम

१०७. ताल/सिमसार क्षेत्र/कुण्ड/रिचार्ज पोखरी/जलाधार क्षेत्रहरूको संरक्षण/निर्माण/व्यवस्थापन/मर्मत सम्भार तथा सौन्दर्यीकरण कार्यक्रम: (१) ताल तथा सिमसार क्षेत्रको संरक्षण भई आश्रित समुदायको जीविकोपार्जन सुधारमा टेवा पुगनुको साथै संवेदनशील एवं लोपोन्मुख ताल तथा जलासय सिमसार क्षेत्रको जीवन्तता र दीगो व्यवस्थापनमा टेवा पुऱ्याउने उद्देश्य यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू गर्न सकिनेछः

(क) फिल्ड सर्वेक्षण तथा अनुगमन गर्ने,

(ख) Retaining wall, Breast wall, Drainage Channel निर्माण तथा मर्मत सम्भार गर्ने,

(ग) तालको सरसफाई गर्ने, मिचाह प्रजाति नियन्त्रण गर्ने, थिग्रीकरण हटाउने तथा तालको क्षेत्र विस्तार गर्ने,

(घ) ताल जलासय कुण्ड आसपासको विश्रामस्थल, पदमार्ग मर्मत सम्भार गर्ने,

(ङ) ताल र सोको जलाधार क्षेत्र अन्तर्गत भएका भूक्षयजन्य समस्याहरूको पहिचान, रोकथाम र न्यूनीकरण गर्ने।

(च) तालतलैयाको पुनर्भरणको लागि बैकल्पिक पानीको स्रोत व्यवस्थापन,

(३) निर्माण तथा मर्मत सम्भार सम्बन्धी कार्यहरूको डिजाइन तथा लागत अनुमानका आधारमा सरकारी निकायमा दर्ता भएका उपभोक्ता समिति वा मान्यता प्राप्त निर्माण व्यवसायी वा नयाँ गठन गरिने उपभोक्ता समितिसँग सार्वजनिक खरिद ऐन बमोजिम सम्झौता गरी कार्य सञ्चालन गर्ने,

(४) कार्य सम्पन्न भएपछि संरक्षण तथा सौन्दर्यकरणका क्रियाकलापहरूको विवरण र फोटो सहितको प्रतिवेदन प्राधिकरणमा पेश गर्नु पर्नेछ।

१०८. विश्व सिमसार दिवस मनाउने: (१) ताल तथा सिमसार क्षेत्रको समुचित व्यवस्थापन तथा जैविक विविधता संरक्षणमा सरोकारवालाहरूको सचेतना अभिवृद्धि गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको।

(२) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट दिवसको उद्देश्य तथा सन्देश सहितको सिमसार क्षेत्रको महत्व झल्किने जानकारीमूलक प्रचारप्रसार सामग्री तयारी र प्रकाशन, बैठक तथा कार्यक्रम सञ्चालन र सञ्चार माध्यम मार्फत प्रसारण, सरोकारवालाहरूको उपस्थितिमा ताल सरसफाई (चिया खाजा, डस्टविन, पञ्जा, न्याकर आदिको व्यवस्था समेत) कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

(३) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन प्राधिकरणमा पेश गर्नु पर्नेछ।

१०९. ताल सूचना बोर्ड र प्रणाली स्थापना: (१) स्थानीय पर्यावरण र जैविक विविधताको दृष्टिकोणले ताल तथा सिमसार क्षेत्रको महत्व रहने हुदाँ यसको समुचित व्यवस्थापन र संरक्षण बारे सरोकारवालाहरूलाई सूचना प्रवाह गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

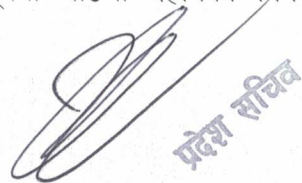
(२) यस कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा ताल सूचना बोर्डमा देहायका विवरणहरू समावेश गर्न सकिनेछः







५५


प्रदेश सचिव

- (क) तालको लम्बाई, चौडाइ, गहिराई, क्षेत्रफल, जलाधारको क्षेत्र आदि,
- (ख) तालमा आश्रित रहेका लोपोन्मुख र दुर्लभ चराचुरुङ्गी जिवजन्तुहरूको विवरण,
- (ग) तालबाट प्रत्यक्ष र अप्रत्यक्ष रूपमा लाभान्वित हुन सक्ने घरधुरी,
- (घ) ताल संरक्षणमा भएका क्रियाकलापहरू।

(३) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन प्राधिकरणमा पेश गर्नु पर्नेछ।

(४) यस कार्यक्रममा विनियोजित बजेट ताल सूचना बोर्ड तयारी कार्यमा खर्च गर्न सकिनेछ।

११०. कम खर्चिलो प्रविधि मार्फत ताल पोखरी संरक्षण तालिम: (१) कम खर्चिलो प्रविधि मार्फत स्थानीय स्रोत साधनको अधिकतम परिचालन गरी परम्परागत शैलीबाट ताल तलैयाको संरक्षणमा सरोकारवालाहरूको क्षमता अभिवृद्धि गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा देहाय बमोजिमका क्रियाकलापहरू गर्न सकिनेछ:

- (क) तालिम सञ्चालन गर्नु पूर्व अवधारणा पत्र, लागत अनुमान तथा सेशन प्लान तयार गरी कार्यकारी प्रमुखबाट स्वीकृत गराउनु पर्नेछ,
- (ख) तालिम अबधि आवश्यकता अनुसार हुनेछ,
- (ग) सहभागी छनोट गर्दा चालु आ.व.को वार्षिक स्वीकृत कार्यक्रम कार्यान्वय हुने जिल्ला विशेषका सहभागीहरूलाई प्राथमिकता दिनु पर्नेछ।

(३) यस कार्यक्रमका लागि विनियोजित बजेट तालिम सामग्री खरिद, सहभागीहरूको दैनिक भ्रमण भत्ता, यातायात खर्च, हल भाडा, प्रशिक्षण शुल्क, खाजा, संयोजक भत्ता, स्थलगत भ्रमणका लागि आवश्यक सवारी साधन भाडा, इन्धन, मसलन्द, विविध तथा प्रमाणपत्र तयारी लगायतका शीर्षकमा खर्च गर्न सकिनेछ।

१११. विज्ञ सहयोगमा सरोकारवाला र जनप्रतिनिधिसँग छलफल अन्तर्क्रिया गरी लोपोन्मुख ताल संरक्षण योजना तयारी: (१) प्रदेश भित्र रहेका लोपोन्मुख तालहरूको पहिचान भइ समुचित व्यवस्थापनको लागि टेवा पुऱ्याउने र अभिलेखिकरण समेत गर्ने उद्देश्यले यो कार्यक्रम राखिएको हो।

(२) यस कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्दा देहायका क्रियाकलापहरू समेट्न सकिनेछ:

- (क) विज्ञहरूको छनोट तथा टोली निर्माण गर्ने,
- (ख) TOR/Indicator/Matrix तयारी,
- (ग) सरोकारवाला निकाय र जनप्रतिनिधि बिच छलफल/अन्तर्क्रिया गर्ने,
- (घ) ताल तलैयाको स्थलगत अवलोकन, अध्ययन, तथ्यांक संकलन र विश्लेषण गर्ने,
- (ङ) लोपोन्मुख ताल तलैयाको छनोट तथा प्राथमिकता निर्धारण गर्ने,
- (च) लोपोन्मुख तालहरूको संरक्षण तथा व्यवस्थापन योजना निर्माण गर्ने।

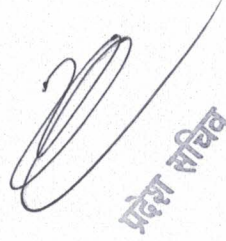
(३) कार्य सम्पन्न भएपछि फोटो सहितको कार्य सम्पन्न प्रतिवेदन प्राधिकरणमा पेश गर्नु पर्नेछ।

५६

प्रदेश सचिव

(४) यस कार्यक्रममा विनियोजित रकम विज्ञ तथा कर्मचारी दैनिक भ्रमण भत्ता, सहभागी भत्ता, यातायात खर्च, खाजा, स्टेशनरी तथा मसलन्द, संयोजक भत्ता, स्थलगत भ्रमणका लागि आवश्यक सवारी साधन भाडा, कार्यालय सवारी साधनका लागि इन्धन, व्यानर, व्यवस्थापन योजना प्रतिवेदन तयारी लगायतका शिर्षकमा खर्च गर्न सकिनेछ।

११२. प्रचलित कानून बमोजिम हुने: प्रचलित कानूनसँग यो मापदण्ड बाझिएमा बाझिएको हदसम्म प्रचलित कानून बमोजिम हुनेछ।



प्रदेश सचिव

